इतिहास दिवाकर

त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

वर्ष ११ अंक ४ पौष मास कलियुगाब्द ५१२० जनवरी २०१६

मार्गदर्शक :
डॉ० शिवाजी सिंह
इरविन खन्ना
चेतराम गर्ग

सम्पादक :
डॉ. राकेश कुमार शर्मा

सह सम्पादक
डॉ. विवेक शर्मा

व्यवस्थापक
प्यार चन्द परमार

सम्पादन सहयोग :
डॉ० रमेश शर्मा
डॉ० ओम प्रकाश शर्मा

टंकण एवं सज्जा :
रवि ठाकुर

सम्पादकीय कार्यालय :
ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान,
नेरी, गांव व डाकघर - नेरी
जिला-हमीरपुर-१७७००१(हि०प्र०)
दूरभाष : ०६४१८४-८५४१५

मूल्यः
प्रति अंक - १५.०० रुपये
वार्षिक - ६०.०० रुपये

itihasdivakar@yahoo.com
chetramneri@gmail.com

हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी द्वारा प्रदत्त साहित्यिक पत्रिका प्रकाशनार्थ वित्तीय अनुदान के अन्तर्गत प्रकाशित

अनुक्रमणिका

संदेश

सम्पादकीय

इतिहास पुरुष ठाकुर रामसिंह की चिन्तन भूमि	डॉ. ओम प्रकाश शर्मा	७
हिमाचल प्रदेश से इतिहास के दो पुरोधा ठाकुर रामसिंह और विपिन चन्द्र सूद	डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री	१५
ठाकुर रामसिंह जी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	कृष्णानन्द सागर	२०
असम में श्री ठाकुर रामसिंह जी	शशिकान्त चौथाईवाले	४०
भारत का इतिहास पराजय का नहीं सतत् संघर्ष का है	डॉ. राकेश कुमार शर्मा	४७
मनु के बारे में ठाकुर रामसिंह जी की दृष्टि	डॉ. सूरत ठाकुर	५६
श्रद्धेय ठाकुर रामसिंह जी के साथ पांच साल	चेतराम गर्ग	६२

सम्पादकीय

चिन्तन भूमि

इतिहास साक्षी है कि महापुरुषों के कृत्य उनके जीवन काल में ही समाज के समक्ष आ जाए, यह विरल ही दिखाई देता है। ठाकुर रामसिंह जी भी इसके अपवाद नहीं है। ठाकुर रामसिंह ने हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिला के झण्डवीं गांव में जब १०४ वर्ष पूर्व जन्म लिया था उस समय शायद ही यह कल्पना की जा सकती थी कि यह रामसिंह नाम का बालक भारत के इतिहास को सही दिशा देगा जिसे विदेशी आक्रमणकारियों की तानाशाही और कुत्सित मानसिकता ने विकृत कर दिया था। ठाकुर रामसिंह ने भारत की इतिहास परम्परा को समझा और उसे स्थापित करने का सफल प्रयास किया। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के वे प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष सन् १६६२ में बने। इस दायित्व पर आकर उन्होंने इतिहास के सत्य साक्ष्य को सामने रखकर कहा – आर्य भारत के मूल निवासी हैं। भारत का इतिहास १६७ करोड़ वर्ष का इतिहास है। भारतीय कालगणना विश्व की प्राचीनतम एवं वैज्ञानिक कालगणना है। भारत का इतिहास पराजय का नहीं सतत् संघर्ष का इतिहास रहा है। विश्व सभ्यता की आदि जननी भारत है।

ठाकुर रामसिंह ने अपने विचारों से सुप्त पड़े भारतीय विचारों के विद्वानों को जागृत करने का काम किया। साथ ही उस साम्यवादी विचारधारा पर प्रहार किया जो अपने स्वार्थ के लिए अपने ही समाज और धर्म से धोखा कर रही थी। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम दशक में हमीरपुर जिला के नेरी गांव में इतिहास के स्थाई शोध कार्य के लिए इस इतिहास शोध संस्थान की स्थापना की। जो अपनी विकास यात्रा के लगभग १२ वर्ष पूरा कर चुका है। ठाकुर रामसिंह पर पूर्व में इतिहास दिवाकर पत्रिका के दो विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं। जिसका प्रथम विशेषांक ''इतिहास पुरुष अमर विभूमि ठाकुर रामसिंह स्मृति श्रद्धाञ्जलि विशेषांक'' तथा दूसरा ''वीरव्रती यशस्वी इतिहास पुरुष ठाकुर रामसिंह जन्म शताब्दी विशेषांक'' के रूप में है। यह तीसरा विशेषांक उनके जीवन कार्य को शोध परक दिशा में ले जाने वाला सिद्ध होगा। सुधी पाठकों से इस अंक में प्रकाशित सामग्री के विषय में प्रतिक्रिया की अपेक्षा सम्पादक मण्डल करता है।

विनीत,

डॉ. राकेश कुमार शर्मा

इतिहास पुरुष ठाकुर रामसिंह की चिन्तन भूमि

डॉ. ओम प्रकाश शर्मा

एक महान विचारक अपनी चिन्तनधारा में चिन्तन के महान सूत्रों को सर्वप्रथम बीज रूप में स्थापित करता है। चिन्तन रूप में स्थापित बीज प्रस्फुटित होता है। प्रस्फुटित बीज से एक अंकुर निकलता है। उस अंकुर में धीरे-धीरे चिन्तन की शाखाएं-प्रशाखाएं पुष्पित-पल्लवित होती है और अन्त में वह बीज एक महान चिन्तन रूपी वृक्ष का स्वरूप धारण करता है। महान चिन्तक ठाकुर रामसिंह जी ने भी अपनी चिन्तनधारा में भारतबोध नामक एक शब्द रूपी बीज स्थापित किया। वह बीज आज महाकाल सिद्धान्त, सृष्टि एवं राष्ट्रप्रतिपदा, भारतीय इतिहास बोध, इतिहास लेखन के बिन्दु एवं संकल्प पाठ की ऐतिहासिक महत्ता आदि चिन्तन की विभिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं में पुष्पित-पल्लवित होकर चहुंओर अपनी छटा बिखेर रहा है।

''हिरण्यगर्भ के विस्फोटित विश्व द्रव्य से जब सृष्टि का चक्र शुरू हुआ तो सर्वप्रथम कालपुरुष (काल) की स्थापना हुई और लाखों वर्षों के बाद जब मनुष्य जीवनयापन करने की सभी साधनभूत आवश्यकताएं पूर्ण हो गई तो मानवोत्पत्ति हुई। अतः भारत में प्रकृति का इतिहास और पृथ्वी पर मानवोत्पत्ति का इतिहास कालक्रम में ऋषि दर्शन में आया। ऋषियों ने दोनों प्रकार के इतिहास को श्रौत परम्परा से छन्दोबद्ध किया। इसी कारण भारत के गौरवमयी इतिहास को ईसा पूर्व (B.C.) और ईस्वी सन् (A.D.) के कालक्रम से नहीं लिखा जा सकता।''

महाकाल सिद्धान्त

ठाकुर रामसिंह जी पाश्चात्य जगत् के उस आक्षेप से बेहद आहत थे, जिसमें पाश्चात्य चिन्तक यह सिद्ध करने में लगे रहे कि भारत का इतिहास कालगणना रहित है। उन्होंने कहा कि पाश्चात्य जगत् के इस चिन्तन को प्रमाणों के आधार पर निरस्त किया। उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों के प्रबल प्रमाणों के आधार पर १९७ करोड़ वर्ष के भारतीय इतिहास के गौरवमयी प्रमाण विश्व के समक्ष रखे। पाश्चात्य जगत् के सिद्धान्तकारों के उस विचार पक्ष को समझा जहां से यह भ्रान्ति फैली कि भारत के चिन्तकों को कालक्रमिक इतिहास लिखना नहीं आता। ठाकुर रामसिंह जी ने अपने सिद्धान्त में यह स्पष्ट किया कि भारत का कालक्रमिक इतिहास चार-पांच हजार वर्ष का नहीं, वह तो १९७ करोड़ वर्ष के आदि बिन्दु से प्रारम्भ होता है। उन्होंने वैदिक प्रमाणों के आधार पर कहा है– ''हिरण्यगर्भ के विस्फोटित विश्व द्रव्य से जब सृष्टि का चक्र शुरू हुआ तो सर्वप्रथम कालपुरुष (काल) की स्थापना हुई और लाखों वर्षों के बाद जब मनुष्य जीवनयापन करने की सभी साधनभूत आवश्यकताएं पूर्ण हो गई तो मानवोत्पत्ति हुई। अतः भारत में प्रकृति का इतिहास और पृथ्वी पर मानवोत्पत्ति का इतिहास कालक्रम में ऋषि दर्शन में आया। ऋषियों ने दोनों प्रकार के

इतिहास को श्रौत परम्परा से छन्दोबद्ध किया। इसी कारण भारत के गौरवमयी इतिहास को ईसा पूर्व (B.C.) और ईस्वी सन् (A.D.) के कालक्रम से नहीं लिखा जा सकता।''

वस्तुतः ठाकुर रामसिंह जी ने ऋग्वेद के कालसूक्त और अन्य वेदों एवं शास्त्रों के काल सम्बन्धी प्रमाणों का गहन चिन्तन किया था। वह वेदों और शास्त्रों के प्रबल प्रमाणों का उद्धृत करते हुए कहते हैं कि काल गत्यर्थक कल् धातु से भाव अर्थ में घञ् प्रत्यय लगाने से बनता है तथा यह शब्द गणनार्थक और प्रेरणार्थक है। महर्षि पाणिनि ने इसका स्पष्ट उल्लेख किया है। निरुक्तकार यास्क के मत को उद्धृत करते हुए ठाकुर रामसिंह कहते हैं कि काल का सम्बन्ध गति से है। काल स्वयं चलता है और सभी को चलने की प्रेरणा देता है। अतः यास्क इसका व्युत्पत्तिलभ्यार्थ गत्यर्थक धातु से मानते हैं। ठाकुर रामसिंह अपनी अवधारणा को पुष्ट करते हुए महर्षि भृगु के काल सम्बन्धी मधुर गीत को सर्वत्र उद्घृत करते थे। यहां मन्त्रों में निबद्ध इस मधुर गीत को उद्घृत करना प्रासंगिक हैं।

काल ने ही बीते भवनों को जीवन से भर दिया है। काल ने रंग बिरंगे जीवन को एक जगह इकट्ठा कर दिया है। पितररूप में जो काल था वह संतानरूप में बन गया। काल के परे कुछ भी नहीं है। काल ने द्युलोक को बनाया, काल ने ही पृथ्वी को उत्पन्न किया। भूत, भविष्य की हलचल काल में आश्रित है। सब का होना काल के अधीन है। सूर्य का तपना काल के आधार पर है। काल सूर्य को छोड़ दे तो सूर्य भी जीवन सुधा भूल जाता है। सब पदार्थ काल के बल पर टिके हैं। आंख जो रात-दिन देखती है वहां काल ही पसारा है।

''काल अपार है। काल की शक्ति अनन्त है। काल सब को देखता है। वह सहस्र आंखों वाला है। सभी काल के रथ पर बैठे हैं। ज्ञानी इस अश्व पर सवार होते हैं। यह लोक इस अद्भुत रथ के पहियों के साथ घूमते हैं। इस रथ की धुरी में अमृत है तभी तो वह कभी रुकने या थम जाने का नाम नहीं लेता है। काल लोकरूपी पहियों को आगे धकेलता है। काल पहला देव है। काल के सिर पर एक पूर्ण कुंभ रखा हुआ है। यह घड़ा अनेक रूप धरता है। इस सूर्यरूपी घट में ही केवल काल मनमोहक यौवन और जरा के अनेकरूप देखने में आते हैं। यह काल सब से ऊंचे लोक में हैं।

काल ने ही बीते भवनों को जीवन से भर दिया है। काल ने रंग बिरंगे जीवन को एक जगह इकट्ठा कर दिया है। पितररूप में जो काल था वह संतानरूप में बन गया। काल के परे कुछ भी नहीं है। काल ने द्युलोक को बनाया, काल ने ही पृथ्वी को उत्पन्न किया। भूत, भविष्य की हलचल काल में आश्रित है। सब का होना काल के अधीन है। सूर्य का तपना काल के आधार पर है। काल सूर्य को छोड़ दे तो सूर्य भी जीवन सुधा भूल जाता है। सब पदार्थ काल के बल पर टिके हैं। आंख जो रात-दिन देखती है वहां काल ही पसारा है।

हमारा मन, प्राण और नाम सब काल के साथ टंका हुआ है। काल के वरदान को पास आया जानकर सब लोक आनन्द से नाच उठते हैं। तप और ब्रह्मशक्ति काल में है। प्रजापति प्रजा के पिता हैं। प्रजापति का पिता काल है। काल सब का ईश्वर है। काल ने ब्रह्माण्ड को प्रेरणा दी। काल से उसमें हलचल है। काल ब्रह्म की शक्ति बन कर प्रजापति को संभालता है। काल ने प्रजाओं को बनाया और

उनसे भी पहले प्रजापति को बनाया। स्वयम्भू कश्यप काल से बने और काल ने ही तप को पैदा किया।

जल काल से उत्पन्न हुआ। काल से दिशाएं निकली। काल पाकर सूर्य आकाश में ऊंचे उठते हैं और काल की गति से फिर नीचे डूब जाते हैं। काल पाकर ही बड़ी-बड़ी आंधियाँ उठती हैं। वायु प्रदेश की सफाई करती चली जाती हैं। काल के मंगल से पृथ्वी औषध और वनस्पतियों की वृद्धि को पाती है। काल की कृपा से द्युलोक मेघों को गर्भ में भर कर महान् बनता है।

विधाता के मन्त्र ने काल में पहले भूत और भविष्य को रख कर देख लिया। ऋक्, यजु और साम का त्रिविध चक्र काल से फैला। काल ने यज्ञ के सनातन ताने-बाने को फैलाया। उसी ने गंधर्व और अप्सराओं के नाना प्रकार के घोड़ों (चन्द्र, नक्षत्र, इन्द्रिय आदि) को बनाया। काल पर ही सब लोक प्रतिष्ठित हुए। अथर्वा और अंगिरा (प्राण और मन) काल पर रुके हुए हैं। यह लोक और परलोक, सब पवित्र विधान, व्रत और मर्यादा ये काल की कीली पर टिके हुए हैं। काल सब को वश में रखता हुआ ब्रह्म की शक्ति से घूमता है। काल परम देव है। उपर्युक्त मन्त्रों में काल से सम्बन्ध रखने वाले अनेक दार्शनिक सिद्धान्तों का समावेश पाया जाता है। काल की प्रकट और गुप्त अचिंत्य महिमा को इतने ओजस्वी शब्दों में वर्णन करने वाले ये शब्द विश्व के साहित्य में बेजोड़ है। (वासुदेव शरण अग्रवाल)

यही नहीं ऋषियों ने पृथ्वी पर प्रथम मानवोत्पत्ति और मानवरूपी ब्रह्माण्ड का इतिहास लिखा। पाश्चात्य जगत के इतिहासकारों और चिन्तकों को ये प्रमाण समझ नहीं आए। इसलिए उन सिद्धान्तकारों के समक्ष ईसामसीह के कालक्रमिक इतिहास से परे जो भी प्रमाण व इतिहास के सिद्धान्त समक्ष आए, उन्हें मिथक अर्थात् कपोल कल्पना के अन्तर्गत रखा।

काल के इस मधुर गीत में ही पाश्चात्य जगत के चिन्तकों के आक्षेपों के सभी उत्तर निहित हैं। भारत के ऋषि कभी भी ईसा पूर्व (B.C.) और ईस्वी सन् (A.D.) के सिद्धान्त के आधार पर काल के स्वरूप को विभाजित करते हुए नहीं दिखाई देते। ऋषियों ने तो काल की सूक्ष्म इकाई 'परमाणु' की प्रकृति का भी इतिहास लिखा। यही नहीं परमाणु से प्रारम्भ हुई कालयात्रा जो अणु, त्रस्रेणु, त्रुटि, वेध, लव, निमेष, क्षण, काष्ठा, लघु, नाड़ी, प्रहर और काल की महानतम इकाई महाकल्प तक का इतिहास भी लिखा। हिरण्यगर्भ में हुए प्रथम विस्फोट के परमक्षण का भी इतिहास लिखा। हिरण्यगर्भ के प्रथम विस्फोटित द्रव्य से उद्भूत इस वैभवशाली ब्रह्माण्ड का इतिहास लिखा। यही नहीं ऋषियों ने पृथ्वी पर प्रथम मानवोत्पत्ति और मानवरूपी ब्रह्माण्ड का इतिहास लिखा। पाश्चात्य जगत के इतिहासकारों और चिन्तकों को ये प्रमाण समझ नहीं आए। इसलिए उन सिद्धान्तकारों के समक्ष ईसामसीह के कालक्रमिक इतिहास से परे जो भी प्रमाण व इतिहास के सिद्धान्त समक्ष आए, उन्हें मिथक अर्थात् कपोल कल्पना के अन्तर्गत रखा। ठाकुर रामसिंह की चिन्तनभूमि का यह पहला पक्ष है। उन्होंने प्रबल प्रमाणों से स्पष्ट किया कि भारत के ऋषि प्रकृति के इतिहास एवं पृथ्वी पर प्रथम मानवोत्पत्ति के इतिहास को कालक्रम से लिखते रहे।

यही भारत वर्ष की महाकाल यात्रा का इतिहास है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का इतिहास इसमें समाहित है।

सृष्टि एवं वर्षप्रतिपदा

ठाकुर रामसिंह जी की चिन्तनभूमि का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष है सृष्टि की उत्पत्ति। वेदों और शास्त्रों के प्रबल प्रमाणों के आधार पर उनका चिन्तन था कि सृष्टि, स्थिति और लय इतिहास के तीन महान बिन्दु हैं। लयावस्था में प्रकृति के सभी बीज मौजूद रहते हैं। जीव भी प्रकृति का स्वरूप है। अतः उसके भी बीज लयावस्था में विद्यमान रहते हैं। काल का उत्तान नृत्य जब एक बार पुनः जागृत होता है तो लयावस्था में हिरण्यगर्भ के विस्फोटित द्रव्य से सर्जन प्रारम्भ हो जाता है। ऋषियों ने सृष्टि, स्थिति और लय के कालक्रमिक पक्षों का इतिहास अपने द्वारा साधित मन्त्रों में पिरोया है। ठाकुर रामसिंह जी की चिन्तन धारा इस संदर्भ में बहुत स्पष्ट थी।

भारत में सृष्टि की उत्पत्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मानी जाती है। वेदों, भास्कराचार्य के ग्रन्थ सिद्धान्त शिरोमणि, हेमाद्रि और ब्रह्मपुराण में सृष्टि सम्बन्धी वैज्ञानिक सिद्धान्त निबद्ध है। साधारण जन भी यह देखता है कि बंसत ऋतु में नवसर्जन संभव है। धरती में बोए गए बीजों में नवांकुरों का सर्जन व जीवों में भी नवसर्जन इसी कालखण्ड में संभव है। ब्रह्मपुराण इसका उल्लेख निम्न है -

चैत्र मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहिन्।
शुक्ल पक्षे समग्रं तु तदा सूर्योदये सति।।

अर्थात् ब्रह्मा ने चैत्र मास में शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय काल में सृष्टि की रचना की। काल का यह क्षण चैत्र मास शुक्ल पक्ष वर्ष प्रतिपदा के रूप में था। आज से १ अरब, ९७ करोड़, २९ लाख, ४९ हजार, १२१ वर्ष पूर्व (ईस्वी सन् के अनुसार) भारत भूमि पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही पहले मानव का अविर्भाव हुआ। अतः यह दिन सम्पूर्ण मानव कुल का प्रथम दिवस है। ठाकुर रामसिंह जी की चिन्तन भूमि का यह दूसरा पक्ष महत्त्वपूर्ण है। इसी पक्ष के आधार पर भारत के गौरवशाली इतिहास का लेखन सरल बन जाता है। राष्ट्रीय महापर्व वर्ष प्रतिपदा में इतिहास लेखन के प्रतिमान निहित हैं।

सृष्टि, स्थिति और लय इतिहास के तीन महान बिन्दु हैं। लयावस्था में प्रकृति के सभी बीज मौजूद रहते हैं। जीव भी प्रकृति का स्वरूप है। अतः उसके भी बीज लयावस्था में विद्यमान रहते हैं। काल का उत्तान नत्य जब एक बार पुनः जागृत होता है तो लयावस्था में हिरण्यगर्भ के विस्फोटित द्रव्य से सर्जन प्रारम्भ हो जाता है। ऋषियों ने सृष्टि, स्थिति और लय के कालक्रमिक पक्षों का इतिहास अपने द्वारा साधित मन्त्रों में पिरोया है।

भारतीय इतिहास शास्त्र की चिन्तनधारा

ठाकुर रामसिंह जी इतिहास को शास्त्र कहते थे। शास्त्र वस्तुतः उसे कहते हैं जो प्रमाण और विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरे। भारतीय चिन्तनधारा इतिहास को कला नहीं अपितु विज्ञान और शास्त्र मानती है। ठाकुर जी का मत भी इतिहास को शास्त्र मानने के पक्ष में था। इसके वे दो कारण व प्रमाण प्रस्तुत करते हैं – १. इतिहास की विषय वस्तु प्रकृति अथवा सृष्टि के इतिहास से आरम्भ होती है। सृष्टि के इतिहास में सम्पूर्ण विज्ञान निहित है। इतिहास को शास्त्र की संज्ञा प्रदान करने का यह प्रथम कारण है। इसी कारण भारतीय परम्परा में इतिहास-पुराण को पञ्चम वेद कहा गया है –

इतिहासपुराणे पञ्चमो वेदः। चिन्तकों ने प्रकृति के इतिहास को जानने के लिए स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि इतिहास पुराण से वेद का उपबृंहण करें – **इतिहासपुराणभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।** इतिहास का दूसरा प्रतिपाद्य है मानव की उत्पत्ति और उसका प्रसारण। इसी कारण मानव वंश परम्परा पुराणों में प्रतिपादित है। कालक्रम से मानव संघ अस्तित्व में आए और मानवोत्पत्ति का कालक्रमिक इतिहास अस्तित्व में आया। इस परम्परा में मानव की प्रकृति का सम्पूर्ण इतिहास निबद्ध हुआ। इसी द्वितीय कारण के बल पर इतिहास को शास्त्र की संज्ञा दी गई।

ठाकुर रामसिंह जी इन्हीं दो कारणों के आधार पर विश्व की चिन्तनधारा के चिन्तकों के समक्ष अपना मत स्पष्ट करते हुए कहते है कि भारत के इतिहास को ईसापूर्व और ईस्वीसन् के दृष्टिकोण से नहीं लिखा जा सकता। यह दृष्टिकोण तो अर्वाचीन है। भारत का गौरवमयी इतिहास तो शास्त्र के वैज्ञानिक पक्षों में निबद्ध है। शास्त्र का अन्तिम उद्देश्य तो मानव कल्याण है। शास्त्र रूपी इतिहास में तो राष्ट्र और राष्ट्रजीवन के सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और भौगोलिक आदि सर्वपक्षों का समावेश होता है। इसमें इतिहास, पुराकल्प, पुरावृत्त, आख्यान, उपाख्यान, ऐतिह्य, परिक्रिया, परकृति, इतिवृत, अनुचरित, अनुवंश, कथा, परिकथा, गाथा, अन्वाख्यान, चरित, नाराशंसी, कालविद्, गोत्र-प्रवरकार, राजशासन, पुराण और आख्यायिका आदि २२ इतिहास लेखन के प्रकार निबद्ध हैं। भारत का इतिहास इन २२ प्रकारों की विषयवस्तु से ओतप्रोत हैं। अतः ईसा पूर्व व ईस्वीसन् के कालक्रम से भारत के इतिहास को लिखना अन्याय संगत ही नहीं अपितु पूर्वाग्रहों से ग्रस्त भी है।

भारतीय चिन्तनधारा इतिहास को कला नहीं अपितु विज्ञान और शास्त्र मानती है। ठाकुर जी का मत भी इतिहास को शास्त्र मानने के पक्ष में था। इसके वे दो कारण व प्रमाण प्रस्तुत करते हैं – इतिहास की विषय वस्तु प्रकृति अथवा सृष्टि के इतिहास से आरम्भ होती है। सृष्टि के इतिहास में सम्पूर्ण विज्ञान निहित है। इतिहास को शास्त्र की संज्ञा प्रदान करने का यह प्रथम कारण है।

ठाकुर रामसिंह जी का मत था कि इतिहासकार ईसापूर्व व ईस्वीसन् के आधार पर अपने-अपने देशों का इतिहास लिखे, इस पर हमें आपत्ति नहीं। आपत्ति तब खड़ी होती है जब ये चिन्तक भारत के इतिहास को भी इसी दृष्टिकोण से लिखने का मिथ्या प्रयास करते हैं। वस्तुतः इतिहास की तत्त्व दृष्टि काल के तत्त्वदर्शन पर आधारित है। इसीलिए महर्षि कणाद् ने काल को नौ तत्त्वों में परिगणित किया। बाइबल ग्रन्थ इस ओर संकेत करता है कि इस पृथ्वी की उत्पत्ति ६००० वर्ष पूर्व हुई थी। अशर नामक पादरी ने १६वीं शताब्दी में यह घोषणा कर दी थी कि विश्व की उत्पत्ति ४००० वर्ष पूर्व हुई है। यह मिथक आगे चलकर इतिहास लेखन का तत्त्व चिन्तन बना। विज्ञान ने जैसे-जैसे सृष्टि और ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के प्रमाण खोजने आरम्भ किए वैसे-वैसे इतिहास लेखन के ये दृष्टिकोण स्वतः ही निरस्त होने लगे। इस संदर्भ में कुछ प्रमाण उद्धृत करना प्रासंगिक है।

पाश्चात्य जगत में काल तत्त्व के चिन्तन का अभाव रहा है। इसी कारण पाश्चात्य जगत का

इतिहास कब्रों, पिरामिडों, भग्नावशेषों, मूर्तियों, प्रतिमाओं, संग्रहालयों और जीवाश्मों के साथ जुड़ा। वहां पर लिखित इतिहास का अभाव था। भारत की चिन्तन धारा तो प्राचीन थी। भारत की गुरुकुल शिक्षा पद्धति से मन्त्रों में निबद्ध इतिहास को श्रौत परम्परा से कल्पों और मन्वन्तरों के आधार पर जीवन्त रखा गया। यह परम्परा आज भी उदात्त, अनुदात्त और स्वरित स्वर ज्ञान में देखी जा सकती है। परवर्ती काल में श्रौत परम्परागत ज्ञान लिपिबद्ध हुआ। भारत का लिपि विज्ञान भी प्राचीन है। पाश्चात्य जगत में अस्थियों के सैम्पलसर्वे जैसे-जैसे आगे बढ़े, वैसे-वैसे वहां के इतिहास का कालखण्ड भी बदलता गया। यूरोप की धरती पर जब एक करोड़ वर्ष पूर्व का जीवाश्म मिला तो वहां पर गढ़ी भ्रान्त धारणाएं भी निरस्त होने लगी। आज इतिहास के पूर्वपाषण काल, पाषण काल, धातुयुग, ताम्र युग, स्वर्णयुग आदि इतिहास के कालक्रम भी प्रश्नों के घेरे में हैं। पाश्चात्य वैज्ञानिक Helmholtz ने अपने शोध में जब पृथ्वी की आयु १ करोड़, ७० लाख वर्ष पूर्व घोषित कर डाली तो वहां उसका विरोध होना स्वाभाविक था। विज्ञान आज भारत के ऋषियों द्वारा दर्शित कालगणना के सिद्धान्तों के निकट है। ठाकुर रामसिंह जी अपने वैचारिक चिन्तन से बहुत स्पष्ट थे कि पाश्चात्य जगत का इतिहास चिन्तन एक दिन भारत के इतिहास शास्त्र के चिन्तन के निकट अवश्य ही आएगा।

भारत की चिन्तन धारा तो प्राचीन थी। भारत की गुरुकुल शिक्षा पद्धति से मन्त्रों में निबद्ध इतिहास को श्रौत परम्परा से कल्पों और मन्वन्तरों के आधार पर जीवन्त रखा गया। यह परम्परा आज भी उदात्त, अनुदात्त और स्वरित स्वर ज्ञान में देखी जा सकती है। परवर्ती काल में श्रौत परम्परागत ज्ञान लिपिबद्ध हुआ। भारत का लिपि विज्ञान भी प्राचीन है। पाश्चात्य जगत में अस्थियों के सैम्पलसर्वे जैसे-जैसे आगे बढ़े, वैसे-वैसे वहां के इतिहास का कालखण्ड भी बदलता गया।

इतिहास लेखन के बिन्दु

ठाकुर रामसिंह जी की इतिहास लेखन की विचारभूमि भी स्पष्ट थी। हिरण्यगर्भ के विस्फोटित द्रव्य से सर्वप्रथम काल की स्थापना हुई। काल स्थापना के आदि बिन्दु से ही इतिहास का श्रीगणेश हुआ। ठाकुर जी का मत था कि काल यदि बिम्ब है तो इतिहास उसका प्रतिबिम्ब।

भारतीय सभ्यता अखिल सभ्यताओं से सबसे प्राचीन है। अतः इस पृथ्वी पर सबसे प्राचीन देश भारत है। यहां पर ऋषियों ने वेदमन्त्रों को साधना के बल पर साक्षात्कृत किया। ज्ञान के इसी भण्डार के कारण भारत को समूचे संसार में विश्व गुरु की संज्ञा प्रदान की गई। ठाकुर रामसिंह जी ने अपनी विचार भूमि में भारत के इस गौरव को रेखांकित कर इतिहास लेखन के बिन्दु निर्धारित किए। उनका मानना था कि भारत का यह गौरवशाली इतिहास कल्पों और मन्वन्तरों की वैज्ञानिक कालगणना के अनुसार चार युगों में विभक्त किया जा सकता है। ये चार युग है – १. देव युग, २. ब्रह्मयुग, ३. क्षात्र युग और ४. वर्तमान कलियुग (५११० वर्ष पूर्व से वर्तमान काल पर्यन्त वैवस्वत मन्वन्तर के २८वें महायुग का कलियुग) इस काल विभाजन में प्रकृति के इतिहास व इस पृथ्वी पर प्रथम मानवोत्पत्ति से अद्यावधि कालखण्ड के समस्त इतिहास के कालक्रमिक बिन्दु आ जाते हैं। ठाकुर

रामसिंह जी का मत था कि इतिहास लेखन के इन्हीं बिन्दुओं के आधार पर इतिहास शास्त्र का वैज्ञानिक लेखन संभव है।

जीव सृष्टि का क्षेत्र सुमेरूपर्वत

सृष्टि, स्थिति और लय ये तीन चरण भौतिक ब्रह्माण्ड और जीव रूपी ब्रह्माण्ड के रहते हैं। लयावस्था में समस्त बीज हिरण्यगर्भ में समाहित हो जाते हैं। जब आदि ऊर्जा ब्रह्म रूप में पुनः जागृत हो जाती है तो सर्जन की पृष्ठ भूमि बनती है। हिरण्यगर्भ में विस्फोट होता है और विस्फोटित द्रव्य से सृष्टि का निर्माण होता है। वेदों और अन्य शास्त्रों में उल्लिखित प्रमाणों के आधार ठाकुर रामसिंह ने कहा कि जब जल में भूमि बन रही थी, उसी समय जल में प्राकृतिक और दैवी कारणों से लयावस्था वाले जल में निहित मानव बीज पलित-पोषित हो रहा था। पर्यावरण के साथ संयोग से (प्रकृति-पुरुष) सर्वप्रथम ब्रह्मा जी का जन्म हुआ। यह जन्म सुमेरूपर्वत की भूमि पर संभव हुआ। तत्पश्चात् ब्रह्मा जी के चार मानस पुत्रों और सात ऋषि प्रजापतियों के वंशजों के आधार पर मानव सृष्टि का कालक्रमिक प्रादूर्भाव हुआ। सृष्टि के इसी प्रादुर्भाव में पृथ्वी पर जैवयुग के कालक्रमिक वैज्ञानिक पक्षों को समझा जा सकता है। ठाकुर जी की इस चिन्तनधारा में कई वैज्ञानिक पक्षों की ओर संकेत हैं।

संकल्प पाठ भारत के गौरवशाली इतिहास के कालक्रम को बताने वाले महत्त्वपूर्ण प्रमाण हैं। ठाकुर रामसिंह जी की मान्यता थी कि भारत के कालखण्डों को जानने के लिए इन संकल्प पाठों की महत्ता है। पाश्चात्य जगत का यह आरोप कि भारतीय मनीषियों को कालक्रम से इतिहास लिखना नहीं आता, वह संकल्प पाठ के विधान से स्वतः ही निरस्त हो जाता है। आज इन संकल्प पाठों पर शोध की आवश्यकता है।

संकल्प पाठ की ऐतिहासिक महत्ता

भारत के मनीषियों ने प्रकृति के इतिहास और पृथ्वी पर प्रथम मानवोत्पत्ति वर्तमान कालखण्ड तक जो कार्य सम्पन्न किए, वे बिना संकल्प पाठ के नहीं होते। संकल्प पाठ भारत के गौरवशाली इतिहास के कालक्रम को बताने वाले महत्त्वपूर्ण प्रमाण हैं। ठाकुर रामसिंह जी की मान्यता थी कि भारत के कालखण्डों को जानने के लिए इन संकल्प पाठों की महत्ता है। पाश्चात्य जगत का यह आरोप कि भारतीय मनीषियों को कालक्रम से इतिहास लिखना नहीं आता, वह संकल्प पाठ के विधान से स्वतः ही निरस्त हो जाता है। आज इन संकल्प पाठों पर शोध की आवश्यकता है।

इस प्रकार ठाकुर रामसिंह जी की चिन्तन भूमि के पक्षों को - महाकाल सिद्धान्त, सृष्टि एवं वर्षप्रतिपदा, भारतीय इतिहास शास्त्र की चिन्तन धारा, इतिहास लेखन के बिन्दु, जीव सृष्टि का क्षेत्र सुमेरूपर्वत और संकल्प पाठ की ऐतिहासिक महत्ता आदि वैचारिक बिन्दुओं से सहज ही समझा जा सकता है। यह चिन्तन धारा भारत के गौरवशाली इतिहास को समझने और लिखने के लिए एक सशक्त आधार बनाती है। यही चिन्तन धारा ठाकुर रामसिंह जी की चिन्तन भूमि है। इसमें ही भारत का अतीत, वर्तमान और भविष्य निहित है।

संदर्भ :

१. काल यात्रा, वासुदेव पोद्दार, दी उद्‌बोधन, ट्रस्ट - १८, नेता जी सुभाष रोड़ कलकता १९८५

२. भारतीय कालगणना की रूपरेखा, डॉ. दामोदर झा, विश्वेश्वदानन्द विश्वबन्धु संस्थान, होश्यारपुर, १९८५

३. तारीख-ए-राजगाने कदीम आर्यवर्त, पुनः प्रकाशनाधीन पुस्तक, ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.)

४. इतिहास दिवाकर, त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका, वर्ष ७, अंक ४, जनवरी, २०१५

५. लेखक की ठाकुर रामसिंह जी के साथ वार्ताएं (२००६ से - जून, २०१० तक)

सहायक आचार्य संस्कृत,
राजकीय महाविद्यालय कोटशेरा,
चौड़ा मैदान, जिला शिमला (हि.प्र.)

हिमाचल प्रदेश से इतिहास के दो पुरोधा ठाकुर रामसिंह और विपिन चन्द्र सूद

डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

हिमाचल प्रदेश ने पिछली शताब्दी में भारत को दो इतिहासकार दिए, जिनका विशेष उल्लेख किया जा सकता है। पहले मा. ठाकुर रामसिंह और दूसरे विपिन चन्द्र सूद। ये दोनों ही हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जनपद के रहने वाले थे। ठाकुर रामसिंह का १६ फरवरी १९१५ को झंण्डवी गांव में (यह गांव आजकल हमीरपुर जिला में आता है) और विपिन चन्द्र सूद का जन्म उनके १३ साल बाद २७ मई, १९२८ को गरली परागपुर हुआ और उनका देहान्त अगस्त २०१४ को ८६ साल की आयु में हुआ।

ठाकुर रामसिंह अपने क्षेत्र में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए लाहौर चले गए जो उन दिनों पंजाब की राजधानी थी और उच्च शिक्षा का केन्द्र थी। लाहौर के सनातन धर्म महाविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा उतीर्ण की। उसके बाद लाहौर के फोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज में १९४२ में उन्होंने इतिहास विषय लेकर एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में स्वर्ण पदक लेकर उतीर्ण की। लाहौर में पढ़ते हुए ही वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आए और उसकी गतिविधियों में सक्रिय भाग लेने लगे। कॉलेज के प्रिंसिपल ने उन्हें वहीं प्राध्यापक पद का प्रस्ताव दिया। ठाकुर जी के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, इसलिए घरवालों की इच्छा थी कि वे नौकरी करें। लेकिन ठाकुर रामसिंह ने उसे अस्वीकार कर दिया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में सक्रिय भागीदारी के चलते उन्होंने अपने लिए एक अलग ही रास्ता चुन लिया था। लगभग तेरह साल बाद इसी रास्ते पर चलते हुए हिमाचल का एक दूसरा युवक विपिन चन्द्र सूद भी लाहौर ही पहुंचा। लाहौर के फोरमैन क्रिश्चियन कालेज में उन्होंने अपनी पढ़ाई लिखाई पूरी की लेकिन लाहौर में रहते हुए वे साम्यवादी विचारधारा से जुड़ गए। लाहौर उन दिनों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, कांग्रेस, साम्यवादी समूहों, आर्य समाज, मुस्लिम और ईसाई संस्थाओं की गतिविधियों का केन्द्र और सप्त सिन्धु या पश्चिमोतर भारत का सक्रियता का प्रतीक बन चुका था।

लाहौर से शिक्षा प्राप्त करने तक दोनों के रास्ते लगभग एक जैसे थे। लाहौर में रहकर ज्ञान साधना कर रहे हिमाचल प्रदेश की पर्वतीय शृंखलाओं में बसे दो गांवों के युवक। यह अलग बात है झण्डवी के ठाकुर राम सिंह की यह ज्ञान साधना उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर खींच कर ले गई और गरली परागपुर के विपिन चन्द्र सूद को यही साधना उन्हें कार्ल मार्क्स के चरणों में ले गई।

लाहौर से शिक्षा प्राप्त करने तक दोनों के रास्ते लगभग एक जैसे थे। लाहौर में रहकर ज्ञान साधना कर रहे हिमाचल प्रदेश की पर्वतीय शृंखलाओं में बसे दो गांवों के युवक। यह अलग बात है झण्डवी के ठाकुर राम सिंह की यह ज्ञान साधना उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर खींच कर ले गई

और गरली परागपुर के विपिन चन्द्र सूद को यही साधना उन्हें कार्ल मार्क्स के चरणों में ले गई। पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से उन्होंने बी.ए. पास किया और आगे पढ़ने के लिए वे अमेरिका के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय चले गए। एम.ए. करने के बाद वे १९५० में दिल्ली के हिन्दु कॉलेज में इतिहास के अध्यापक नियुक्त हो गए। इससे एक साल पहले ही १९४९ में ठाकुर रामसिंह असम में संघ के प्रान्त प्रचारक बनकर गुवाहाटी चले गए। उसके बाद विपिन चन्द्र निरन्तर इतिहास अध्यापन के क्षेत्र में ही लगे रहे। ईधर विपिन चन्द्र हिन्दू कॉलेज के बी.ए. के छात्रों को इतिहास पढ़ाने में जुट गए उधर ठाकुर रामसिंह पूर्वोत्तर भारत में एक नया इतिहास गढ़ने के काम में लग गए।

वे इसे कॉलेज में पढ़ा ही रहे थे कि १९६९ में दिल्ली में ही इन्दिरा गांधी की सरकार ने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की स्थापना की। उन दिनों यह आम चर्चा थी कि इन्द्रिरा गांधी ने साम्यवादी समूहों का समर्थन पाने के लिए एक समझौते के तहत इस विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। विश्वविद्यालय में साम्यवादी विचारधारा के अध्यापकों को ही मोटे तौर पर नियुक्त किया जाना था। यही कारण था कि सरकार ने मूनस रजा को उसका पहला कुलपति नियुक्त किया गया। यह सरकार और साम्यवादियों के बीच अलिखित राजनैतिक समझौता था। अब तक विपिन चन्द्र सूद की साम्यवादी आन्दोलन से जुड़ ही चुके थे। इसलिए उन्हें विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में नियुक्त कर दिया गया। लेकिन एक अन्तर और भी साफ और स्पष्ट था। ठाकुर रामसिंह महाविद्यालय में मिल रही प्राध्यापक की नौकरी के प्रस्ताव को ठुकरा कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बनने को अधिमान दिया। संघ के प्रचारक बन गए, यह जान लेना ही काफी नहीं है। संघ एक प्रकार की नई संन्यासी परम्परा है। प्रचारक को अपना घर बार छोड़ कर जाना होता है। वह गृहस्थ आश्रम में प्रवेश नहीं कर सकता है। संघ कार्य के लिए उसे देश के किसी हिस्से में भी जाना होता है। १९४२ में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद रामसिंह मध्यप्रदेश में संघ के एक शिविर में भाग लेने के लिए खंडवा चले गए। वहां से उन्हें कांगड़ा जनपद में संघ कार्य के लिए भेजा। वहां से उन्हें अमृतसरी में विभाग प्रचारक नियुक्त कर भेज दिया गया। १९४९ में देश से अंग्रेजों के जाने के बाद ठाकुर रामसिंह को असम प्रान्त का प्रचारक बना कर भेज दिया। रामसिंह असम में इतिहास का निर्माण करने में जुट गए। ये २२ साल तक पूर्वोत्तर भारत में रहे। वहां उन्होंने इतिहास लेखकों और इस विषय के शोध शास्त्रियों की एक पूरी टीम गठित कर ली। असम में मुगलों आक्रमण का मुकाबला करने और उन्हें सराय घाट पर परास्त करने वाले लचित बडफूकन को ठाकुर राम सिंह ही उत्तर भारत के सामान्य पाठकों के सम्मुख लाए। बहुत साल बाद जब असम के छात्रों ने अपनी पहचान या सांस्कृतिक परिवेश

१९४९ में देश से अंग्रेजों के जाने के बाद ठाकुर रामसिंह को असम प्रान्त का प्रचारक बना कर भेज दिया। तो वे असम में इतिहास का निर्माण करने में जुट गए। ये २२ साल तक पूर्वोत्तर भारत में रहे। वहां उन्होंने इतिहास लेखकों और इस विषय के शोध शास्त्रियों की एक पूरी टीम गठित कर ली। असम में मुगलों के आक्रमण का मुकाबला करने और उन्हें सराय घाट पर परास्त करने वाले लचित बड़फूकन को ठाकुर राम सिंह ही उत्तर भारत के सामान्य पाठकों के सम्मुख लाए।

के खतरे में पड़ जाने की चिन्ता से आल असम स्टुडैन्ट यूनियन के झंडे तले आन्दोलन शुरू कर दिया तो दिल्ली से छपने वाले एक अंग्रेजी अखबार ने लिखा था कि इस आन्दोलन की शुरूआत तो हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्र से आए एक युवक रामसिंह ने कर दी थी। असम प्रान्त या एक प्रकार से सम्पूर्ण पूर्वोतर भारत, पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगला देश) से आने वाले मुसलमान बंगालियों से भरता जा रहा था। असम में असमियों के ही अल्पसंख्यक हो जाने की स्थिति बनती जा रही थी। दरअसल असम और पूर्वी बंगाल को आपस में मिला कर मुस्लिम बहुल बनाने की ब्रिटिश योजना बहुत पुरानी थी। १६०५ में ब्रिटिश सरकार ने बंगाल का विभाजन भी इसीलिए किया था। असम की सादुल्ला सरकार ने बंगाल से मुसलमानों को लाकर असम में बसा देने की योजना पर तेजी से काम करना शुरू कर दिया था। लेकिन इसी बीच १६४७ में अंग्रेजों को भारत से जाना पड़ा और वे असम को मुस्लिम बहुल प्रान्त बना नहीं सके। इसके बावजूद उन्होंने असम को पूर्वी बंगाल के समूह से जोड़ कर पाकिस्तान में शामिल करवाने की षड्यन्त्रनुमा योजना बनाई। लेकिन उस योजना को असम के गोपीनाथ बरदोलाई ने सिरे नहीं चढ़ने दिया। परन्तु १६४७ के बाद भी राष्ट्र विरोधी शक्तियां असम को मुस्लिम बहुल बना के अपने इस षड्यन्त्र को नाकाम करने के लिए ठाकुर रामसिंह ने असम में राष्ट्रवादी शक्तियों को जागृत करने का काम शुरू किया।

लेकिन इतिहास क्या है? इसको लेकर ठाकुर रामसिंह और विपिन चन्द्र सूद में निरन्तर मतभेद बना रहा। विपिन चन्द्र सूद इतिहासकारों की उस टोली में शामिल हो गए जो यह मान कर चलती थी कि आर्य एक प्रजाति है और वह आक्रमणकारी के रूप में भारत में आई थी।

हिमाचल के रामसिंह असम में इतिहास रच रहे थे और उधर हिमाचल के ही विपिन चन्द्र सूद भारतीय इतिहास के भीतर की दरारों को समझने की कोशिश कर रहे थे। उस समय तक शायद ही दोनों आपस में मिले हों। लेकिन दोनों नए भारत के निर्माण में इतिहास का सकारात्मक उपयोग करना चाह रहे थे। बीसवीं शताब्दी का सातवां दशक डॉ. विपिन चन्द्र सूद और ठाकुर रामसिंह दोनों के लिए ही महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। १६७१ में ठाकुर रामसिंह पूर्वोत्तर भारत से वापिस आ गए और उन्हें पंजाब के सह प्रान्त प्रचारक का दायित्व दिया गया। लेकिन जो परिवर्तन विपिन चन्द्र के जीवन में आया उसने तो उनके भविष्य की दिशा ही बदल दी।

लेकिन इतिहास क्या है? इसको लेकर ठाकुर रामसिंह और विपिन चन्द्र सूद में निरन्तर मतभेद बना रहा। विपिन चन्द्र सूद इतिहासकारों की उस टोली में शामिल हो गए जो यह मान कर चलती थी कि आर्य एक प्रजाति है और वह आक्रमणकारी के रूप में भारत में आई थी। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय इस प्रकार के इतिहासकारों का केन्द्र बन रहा था। सल्तनत काल और मुगल काल के इतिहास को लेकर दोनों को दृष्टिकोण अलग था। इसी प्रकार महमूद गजनवी के भारत पर हुए आक्रमणों के उद्देश्य और प्रभावों पर भी हिमाचल के ये दोनों इतिहासकार सहमत नहीं थे। विपिन चन्द्र मानते थे कि महमूद गजनवी से लेकर मुगल काल तक का लगभग सात सौ साल का काल, भारत के लिए विदेशी राज नहीं कहा जा सकता। विपिन चन्द्र का मोटा तर्क था कि ये राजा मध्य एशिया से

आक्रमणकारी के रूप में आए थे और उन्होंने यहां अपने आपको शासक के रूप में स्थापित कर लिया था, लेकिन वे एक बार मध्य एशिया से आकर यहीं के होकर रह गए थे। इसलिए उनको अब विदेशी शासक नहीं माना जा सकता। इसलिए विपिन चन्द्र इन शासकों का इतिहास में गुण - दोष के आधार पर मूल्यांकन करने के पक्षपाती ही नहीं थे बल्कि अपने लेखन में ऐसा कर भी रहे थे। जब एक बार यह मान लिया गया कि सल्तनत काल और मुगल काल के मध्य एशियाटिक शासक भी स्वदेशी थे तो उनको राष्ट्र नायक के तौर पर स्थापित करना भी जरूरी हो गया। लेकिन संकट इस बात को लेकर था कि यदि सुलतानों और मुगलों को नायक बनाया जाएगा तो उनकी विदेशी सत्ता को उखाड़ फैंकने के लिए निरन्तर संघर्ष करने वाले राष्ट्र नायकों के लिए इतिहास में क्या जगह निश्चित की जाएगी? उसी योजना में साम्यवादी इतिहासकारों ने लेखन कार्य शुरू किया जिसमें शिवाजी, महाराणा प्रताप और पश्चिमोत्तर भारत में पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य शुरू हुई दशगुरू परम्परा की उपलब्धियों की नकारात्मक व्याख्या शुरू हुई।

लेकिन साम्यवादी इतिहासकार जानते थे कि इतिहास को लेकर भ्रम निर्माण का यह काम स्कूल के बच्चों से शुरू करना चाहिए तभी उसका स्थायी लाभ हो सकेगा। इसी योजना के अन्तर्गत विपिन चन्द्र ने १९७० में आधुनिक भारत नामक इतिहास की पुस्तक लिखना शुरू किया। इस पुस्तक में मध्यकालीन दशगुरू परम्परा (श्री गुरु नानक देव जी से लेकर दशम गुरु श्री गोविन्द सिंह जी तक) के कुछ गुरुओं के बारे में अवांछित व्याख्या की गई। इस पुस्तक को १९७७ में एनसीईआरटी ने प्रकाशित किया स्कूलों के पाठ्यक्रम में शामिल किया। लेकिन इस पुस्तक के छपते ही देश भर में इसके खिलाफ विवाद शुरू हो गया। विपिन चन्द्र सूद अब देश में बढ़ रही साम्प्रदायिकता से बहुत चिन्तित हो रहे थे लेकिन इसके लिए वे वही कारण चिन्हित कर रहे थे जिनकी स्थापना ब्रिटिश साम्यवादी इतिहासकारों और नौकरशाहों ने अरसा पहले कर दी थी। अन्तर केवल इतना था कि विपिन चन्द्र सूद इन पुरानी साम्राज्यवादी स्थापनाओं को साम्यवादी शब्दावली का प्रयोग कर नया रूप रंग दे रहे थे। इसी दौरान ठाकुर रामसिंह, दिल्ली में विपिन चन्द्र से मिले भी थे, दोनों को इतिहास दृष्टि को लेकर लम्बी चर्चा भी हुई लेकिन विपिन चन्द्र पीछे मुड़ कर देखने के लिए तैयार नहीं हुए। लेकिन देश में विपिन चन्द्र की पुस्तक को आधुनिक भारत के प्रति बढ़ते विरोध को देखते हुए सरकार को अन्ततः इसे पाठ्यक्रम से हटाना पड़ा। (बाद में सोनिया कांग्रेस की सरकार ने इसे २००६ में पुनः प्रकाशित किया।)

लेकिन इसी काल में विपिन चन्द्र सूद का साम्यवादियों से मोहभंग होना शुरू हो गया था। १९८५ में भारतीय इतिहास कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन अमृतसर में हुआ। विपिन चन्द्र इसके अध्यक्ष थे। सभी प्रतिभागी आश्चर्य चकित रह गए जब विपिन चन्द्र ने अपने अध्यक्षीय भाषण में, महात्मा गांधी के मूल्यांकन को लेकर साम्यवादी इतिहासकारों के निष्कर्षों की धज्जियां उड़ा दी। लेकिन इरफान हबीब का मानना है कि विपिन चन्द्र का १९८० के आसपास ही कम्युनिस्टों से मोहभंग होना शुरू हो गया था जब उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका में १४० पृष्ठ का

शोध पत्र लिखकर कम्युनिस्टों की नीति व विचार का सख्त आलोचना की थी। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि वे इतिहास को लेकर ठाकुर रामसिंह की व्याख्या से सहमत हो गए थे। उनका कम्युनिस्टों से मतभेद आधुनिक इतिहास के प्रसंगों को लेकर था, जहां तक भारत में सल्तनत काल और मुगल काल के इतिहास का सम्बन्ध था, इसको लेकर विपिन चन्द्र कम्युनिस्टों से सहमत थे। १९८७ में उनकी किताब India's Stuggle for Independence, १८५७-१९४७ प्रकाश में आई। उसी से संकेत मिल गया था कि वे अभी भी उसी पुराने अड्डे से जुड़े हुए थे।

जिन दिनों विपिन चन्द्र अपनी किताब पूरी कर चुके उन्हीं दिनों १९८८ में ठाकुर रामसिंह, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना को मूर्त रूप दे रहे थे। वे इस योजना के प्रभारी थे। स्थापना के चार साल बाद ही योजना का द्वितीय वार्षिक अधिवेशन आन्ध्र प्रदेश के वारंगल में हुआ। इसमें ठाकुर रामसिंह योजना के अध्यक्ष चुने गए। यह योजना भारत के इतिहास की नए सिरे से व्याख्या करने की ही नहीं थी बल्कि उसकी दरारों को पाटने की भी थी। यह योजना देश के इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों के लिए नए व्यासपीठ के निर्माण की थी। एक ऐसा व्यासपीठ जहां से देश के भूतकाल को ठीक प्रकार से पढ़ा ही नहीं जा सके बल्कि उसे देश के वर्तमान के साथ जोड़ा भी जा सके ताकि एक स्वथ्य भारत का निर्माण हो सके। रामसिंह की योजना भारत के मौलिक इतिहास को एकत्रित करने की थी। आधुनिक काल, विशेष कर अंग्रेजों से संघर्ष काल और विभाजन की काल की मौखिक गाथाओं को अभी से लेखनीबद्ध कर लेना चाहिए, अन्यथा इतिहास के ये मौलिक स्रोत काल कवलित हो जाएंगे। इसी प्रकार पूरे देश में राम कथा और महाभारत कथा से सम्बन्धित ऐतिहासिक प्रसंग प्रचलित हैं। उन सभी को लेखनीबद्ध करना अनिवार्य लग रहा था। इतिहास संकलन योजना ऐसे सभी स्रोतों को लेखनीबद्ध करने के लिए कार्य करने में लगी है। ये स्रोत मुख्यतौर पर विदेशी हमलावरों के साथ आए दरबारियों की डायरियों पर आधारित है या फिर ब्रिटेन सरकार द्वारा भारत पर राज करने के लिए भेजे गए नौकरशाहों के नोटस पर आधारित है। दुर्भाग्य से विपिन चन्द्र सूद भी इसी श्रेणी में आते हैं।

ठाकुर रामसिंह जी ने कभी नौकरी नहीं कि बल्कि पूरा जीवन इतिहास को दिशा देने और उसके भारतीय स्रोतों को तलाशनें में लगा दी। इसके विपरीत विपिन चन्द्र सूद के अध्यापन कार्य से सेवानिवृत हो जाने के बाद भारत सरकार ने २००४ में उन्हें राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का अध्यक्ष बना दिया जिस पर वे अपने जीवन के लगभग अन्त तक बने रहे। इस पद से वे २०१२ में स्वास्थ्य कारणों में ही मुक्त किए गए। इसके विपरीत ठाकुर रामसिंह अन्त तक सत्ता प्रतिष्ठानों से जुझते रहे।

कुलपति, केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशला
जिला कांगड़ा (हि.प्र.)

ठाकुर रामसिंह जी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

कृष्णानन्द सागर

वर्तमान हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले में स्थित झण्डवीं ग्राम में ठाकुर जी का जन्म फाल्गुन प्रविष्टे ४, कलियुग संवत् ५०१६, विक्रमी संवत् १६०१ (तदनुसार १६ फरवरी, १६१५) को पिता श्री भाग सिंह एवं माता श्रीमती नियातु देवी के यहां हुआ। उनकी प्राथमिक शिक्षा भोरंज में आठवीं तक हमीरपुर में और १६३३ में दसवीं ढोलवां (जिला होशियारपुर) में हुई।

ठाकुर जी का किसान परिवार था और आर्थिक स्थिति सामान्य थी। इसलिए पिता जी चाहते थे कि दसवीं के बाद रामसिंह कहीं नौकरी कर ले और घर की आर्थिक स्थिति को ठीक करने में योगदान दें। उन दिनों किसी सरकारी विभाग में कुछ इंस्पेक्टरों की नियुक्तियां होनी थी। उस विभाग का कमिश्नर ठाकुर जी के पिता जी के एक मित्र का छोटा भाई था। उस मित्र ने कमिश्नर के नाम एक पत्र लिखकर रामसिंह को दे दिया। कमिश्नर का कार्यालय कांगड़ा में था। रामसिंह कांगड़ा जाकर उससे मिले। कमिश्नर ने उनके सारे प्रमाण-पत्र देखकर कहा – ''हमारे पास नौकरियां काफी है और तुम्हें नौकरी जरूर मिल जाएगी। लेकिन तुम्हारे प्रमाण-पत्र देख कर मुझे लगता है कि तुम्हें और आगे पढ़ना चाहिए।'' रामसिंह ने कहा – ''मैं भी पढ़ना ही चाहता हूं लेकिन घरवाले नौकरी पर जोर दे रहें हैं। अगर आप मुझे यह लिखकर दे दें कि नौकरियां समाप्त हो गई है या नहीं मिल सकती तो मुझे पढ़ने का अवसर मिल सकता है। कमिश्नर ने लिख दिया कि नौकरी प्राप्य नहीं है। रामसिंह जी वापिस आ गए। इसमें उनका एक वर्ष खराब हो गया। उसके उपरान्त उन्होंने होशियारपुर के कालेज में एफ.ए. में प्रवेश किया। वहां वे यूथ कांग्रेस के सम्पर्क में आए और उसमें सक्रिय हो गए। यूथ कांग्रेस को उन्होंने चन्दे के रूप में १००/- रुपये भी इकट्ठे करके दिए। लेकिन उन्होंने देखा कि उसमें सब खाने-पीने वाले ही लोग थे। इसलिए उन्होंने यूथ कांग्रेस छोड़ दी।

मैं भी पढ़ना ही चाहता हूं लेकिन घरवाले नौकरी पर जोर दे रहें हैं। अगर आप मुझे यह लिखकर दे दें कि नौकरियां समाप्त हो गई है या नहीं मिल सकती तो मुझे पढ़ने का अवसर मिल सकता है।

होशियारपुर में १६३८ में एफ.ए. करने बाद वे लाहौर चले गए और वहां सनातन धर्म कॉलेज में प्रवेश लिया। वहां पढ़ते हुए उनका सम्पर्क कम्युनिस्टों से आया। कुछ दिन उनके साथ काम किया। लेकिन वहां भी काम कम और लिफाफेवाजी ज्यादा देखने को मिली। साथ ही होशियारपुर के यूथ कांग्रेसियों की तरह ये कम्युनिस्ट भी उन्हें प्रमाणिक नहीं लगे। अतः उनका भी साथ छोड़ दिया। बी.ए. उन्होंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया।

वर्ष १६४० में एम.ए. के लिए उन्होंने इतिहास विषय लेकर लाहौर में ही एफ.सी. कॉलेज में

प्रवेश लिया। रामसिंह जी का एक मित्र एक सरदार जी के बेटे को ४००/- रु. में टयूशन पढ़ाता था। एक दिन उस मित्र ने रामसिंह जी को कहा कि मैंने परीक्षा की तैयारी करनी है, इसलिए यह टयूशन तुम पढ़ा दिया करो। रामसिंह जी ने कहा कि मुझे भी तो परीक्षा की तैयारी करनी है, अगर तुम नहीं पढ़ा सकते तो मैं कैसे पढ़ा सकता हूं? वह बोला – नहीं नहीं, तुम तो पढ़ाई में काफी होशियार हो। टयूशन करते हुए भी आप तैयारी कर लोगे, जोकि मैं नहीं कर सकता और इसलिए मैं टयूशन छोड़ना चाहता हूं। फिर तुम्हें पैसों की सख्त जरूरत है, वह भी इससे पूरी हो जाएगी।

वह उन्हें सरदार के पास ले गया। वे बहुत सम्पन्न थे। उनकी बहुत बड़ी कोठी थी। ४००/- रु. उनके लिए कुछ भी नहीं थे। वे लाहौर के आनरेरी मजिस्ट्रेट भी थे। सरदार जी ने रामसिंह जी को कहा कि तुम हमारे बेटे को पढ़ाओ, इसके तुम्हें ४००/- प्रतिमास देंगे। रामसिंह ने कहा – मुझे ४००/- नहीं चाहिए। मेरी जरूरत केवल १००/- रु. की है, इसलिए केवल १००/- ही लूंगा। सरदार जी तो यह सुनकर, हक्के-बक्के रह गए। रामसिंह जी ने आगे कहा – ''लेकिन मेरी एक शर्त है कि मैं इसे क्या पढ़ाता हूं, कैसे पढ़ाता हूं, उसके बारे में आप मुझे कभी कुछ नहीं कहेंगे। मैं इसे अपने ढंग से ही पढ़ाऊंगा। सरदार जी ने कहा –'मजूंर'। रामसिंह जी न उसे पढ़ाना शुरू कर दिया। लड़का सिनेमा बहुत देखता था। पहले तो उसका सिनेमा बन्द करा दिया। उसकी और भी कुछ खराब आदतें थी, वे ठीक कर दीं। सरदार जी यह देखकर इतना खुश हुए कि उन्होंने अपनी कोठी में ही एक कमरा रामसिंह जी को रहने के लिए दे दिया। उस वर्ष वह लड़का परीक्षा में प्रथम आया। रामसिंह जी राजपूत थे, उस कारण उनके अन्दर वीर-वृत्ति जन्मजात थी। उसके साथ ही वे इतिहास के विद्यार्थी थे। इतिहास में उन्होंने पढ़ा था कि किस प्रकार विदेशी आक्रमणों को निरस्त करने में हिन्दू वीरों ने पराक्रम की पराकाष्ठा कर बलिदानों की झड़ी लगा दी। हिन्दू स्त्रियों ने भी या तो तलवार पकड़ी या फिर जौहर की ज्वालाओं में अपने को भस्मसात् कर लिया। ऐसे वीर पुरुषों और वीर माताओं की परम्परा में है हम। इसका उन्हें गौरव था।

रामसिंह जी ने आगे कहा – ''लेकिन मेरी एक शर्त है कि मैं इसे क्या पढ़ाता हूं, कैसे पढ़ाता हूं, उसके बारे में आप मुझे कभी कुछ नहीं कहेंगे। मैं इसे अपने ढंग से ही पढ़ाऊंगा। सरदार जी ने कहा -'मजूंर'।

संघ प्रवेश

एक बार कालेज के पुस्तकालय में अखबार पढ़ते समय उन्होंने गांधी जी का एक वक्तव्य पढ़ा – ''मुसलमान स्वभाव से ही गुण्डा है और हिन्दू कायर।'' यह पढ़ते ही रामसिंह जी की त्योरियां चढ़ गई और गुस्से में बड़बड़ाए – ''गांधी का दिमाम खराब हो गया है, हिन्दू को कायर कहता है।'' पास ही एक और छात्र अखबार पढ़ रहा था। उसने यह सुना, पर बोला नहीं। अखबार पढ़ कर जब रामसिंह जी वहां से चलने लगे तो उस छात्र ने पास आकर कहा ''हम दोनों के विचार मिलते हैं। मैं भी इसी मत का हूं कि हिन्दू कायर नहीं है।

यह दूसरे छात्र थे बलराज मधोक। जिनका बाद में देश की राजनीति में काफी अग्रणी स्थान

रहा। दोनों का यह प्रथम मिलन था। बलराज मधोक ने उन्हें यह भी बताया कि इस विचार के और भी बहुत से लोग हैं। उनमें तो कुछ लोग रोज शाम को अमुक मन्दिर के पास इकट्ठे होते हैं और खेलते-कूदते हैं। आप भी वहां जाया करो।'' रामसिंह जी बोले – ''मैंने ऐसे बहुत से देखे हैं। यूथ कांग्रेस के लोग देखे हैं, कम्युनिस्ट देखें हैं, और भी कई देखे हैं। सब खाने-पीने का धन्धा करते हैं। अब मैं कहीं नहीं जाता। बलराज जी ने कहा – ''नहीं, वहां ऐसा नही है। आप कभी जाकर देखना। बात आई-गई हो गई। पांच-छः महीने बाद उनके मन में आया कि एक बार वहां चल कर देखूं तो सही। वे गए। वहां कुछ लोग खेल रहे थे। पास ही भगवा झण्डा लगा था। उन्हें वहां खो-खो का खेल ज्यादा पसन्द आया। इस प्रकार वे सितम्बर १९४१ में संघ शाखा में जाने लगे। कुछ समय बाद उन्हें एक गट का गटनायक बना दिया और उसके उपरान्त एक शाखा का मुख्यशिक्षक।

उन दिनों विश्वयुद्ध चल रहा था। जर्मन जीत रहा था, इंग्लैण्ड हार रहा था। सुभाष चन्द्र बोस भारत से बाहर निकल चुके थे। ऐसी स्थिति में रामसिंह जी ने मन में विचार आया कि अब तो बस भारत में भी अंग्रेजों को एक धक्का देने की जरूरत है, अतः क्या करना एम.ए. करके। संघ कार्य को ही और अधिक बढ़ाकर अंग्रेजों को यहां से निकाल बाहर करेंगे। यह सोच उन्होंने परीक्षा देने का विचार छोड़ दिया और पढ़ाई से विमुख हो गए। परीक्षा से एक महीना पूर्व उनके विभाग कार्यवाह डॉ. हरबंसलाल को जब यह पता चला तो वे उनके पास आए और कहा कि परीक्षा जरूर देनी है और उतीर्ण भी अच्छे अंकों से होना है। इस पर रामसिंह जी ने रात-रात भर जागकर पढ़ाई की और परीक्षा में प्रथम श्रेणी में तो उत्तीर्ण हुए ही, सारे विश्वविद्यालय में भी चतुर्थ पोजीशन प्राप्त की। यह वर्ष १९४२ था।

प्रचारक जीवन

एम.ए. की परीक्षा के बाद वे प्रथम वर्ष के संघ शिक्षण हेतु खण्डवा (म.प्र.) शिक्षा वर्ग में गए और वहीं पर उन्होंने दो वर्ष के लिए संघ प्रचारक निकलने का निश्चय कर लिया। उस वर्ष अर्थात् १९४२ में लाहौर से रामसिंह जी सहित ५८ प्रचारक निकले थे। रामसिंह जी की नियुक्ति कांगड़ा जिला में हुई। अपने दो वर्ष के कार्यकाल में उन्होंने जिले में कई शाखाएं खड़ी कर दीं। १९४३ के जून मास में लाहौर में जिला प्रचारकों की बैठक थी। उसी दौरान काफी वर्षा हुई और पठानकोट तथा कांगड़ा के बीच कई पुल बह गए और रास्ते बन्द हो गए। बसों का आना-जाना भी बन्द हो गया। इस कारण रामसिंह जी डेढ़-दो महीना तक कांगड़ा वापिस न आ सके। कांगड़ा के कम्युनिस्टों को इसका फायदा उठाने का मौका मिल गया। उन्होंने यह कुप्रचार शुरू कर दिया कि रामसिंह एक लड़की को भगा कर ले गया है।

कांगड़ा के साथ ही है धुरकड़ी। वहां जगदीश नाम के एक सुनार की दुकान पर कांग्रेस व कम्युनिस्टों का अड्डा प्रायः जमता था। कांगड़ा की प्रभात शाखा के कार्यवाह सोहनसिंह एक दिन जगदीश की दुकान पर पहुंच गया। उस समय वहां तीन चार और भी कम्युनिस्ट बैठे थे। सोहन सिंह

को देखकर जगदीश बोला, – ''देखा, वो तुम्हारा रामसिंह लड़की को भगा कर ले गया है।'' सोहन सिंह ने कहा – ''हां, मैं इसीलिए यहां आया हूं। मैंने कांगड़ा के एक-एक घर में जाकर पूछा है कि उनके घर से कोई लड़की तो नहीं गई। सबने इन्कार किया है। मैंने सोचा जब और किसी की लड़की नहीं भागी, तो जरूर तुम्हारे ही घर से कोई भागी होगी। बताओ! रामसिंह तुम में से किसकी बहन को भगाकर ले गया है? इस पर जगदीश बिफर पड़ा। वह और उसके साथी सोहनसिंह की ओर लपके। सोहनसिंह इसके लिए पहले से ही तैयार हो आया था। उसने अपनी लाठी से सबकी अच्छी तरह धुनाई कर दी। वे सब हाथ जोड़कर माफी मांगने लगे। सोहन सिंह ने कहा– ''माफी मैं तब दूंगा जब तुम असली बात बताओगे। इस पर जगदीश ने बताया कि रामसिंह के कहने पर हमारे नेता कामरेड परसराम की पत्नी सरला को भवारना के सत्यप्रकाश ने अपने घर से निकाल दिया था। हम रामसिंह से इसका बदला लेना चाहते थे। असल में कामरेड परसराम की पत्नी सरला भी कम्युनिस्ट कार्यकर्त्री थी और वह सत्यप्रकाश की पत्नी को लाहौर में होने वाले कम्युनिस्टों के शिविर में ले जाने वाली थी। सत्यप्रकाश संघ का कार्यकर्ता था। उसने रामसिंह जी से पूछा – क्या पत्नी को सरला के साथ लाहौर भेजना चाहिए? रामसिंह जी ने उसे बताया कि पिछले साल डाडासीबा गांव के कांशीराम (पहाड़ी गांधी) की पत्नी को ये लोग ले गए थे वह अब तक नहीं लौटी। इस बात का निर्णय तुम स्वयं करो। उस दिन सरला उसके घर में ही थी। सत्यप्रकाश ने पत्नी को कहा कि उसे अभी घर से निकाल दो। सरला को मजबूरन वहां से जाना पड़ा। दो वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने पर रामसिंह जी ने प्रान्त प्रचारक माधवराव जी से अपने प्रचारक कार्य से निवृत होने की बात की। माधवराव जी चुप रहे। रामसिंह जी के ही शब्दों में– ''माधवराव जी को बताने के पश्चात् मैंने स्वयं ही चिन्तन किया। मन नकहा कि हमारी कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए। यह सोच कर मैंने प्रचारक से वापिस न जाने का निश्चय किया। लाहौर जाकर माधवराव जी को अपने उस निश्चय से अवगत कराया। इस बातचीत के एक घण्टा बाद ही माधवराव जी ने मुझे अमृतसर विभाग का दायित्व सौंप दिया। यह बात १६४४ के अन्त की है।

असल में कामरेड परसराम की पत्नी सरला भी कम्युनिस्ट कार्यकर्त्री थी और वह सत्यप्रकाश की पत्नी को लाहौर में होने वाले कम्युनिस्टों के शिविर में ले जाने वाली थी। सत्यप्रकाश संघ का कार्यकर्ता था। उसने रामसिंह जी से पूछा – क्या पत्नी को सरला के साथ लाहौर भेजना चाहिए? रामसिंह जी ने उसे बताया कि पिछले साल डाडासीबा गांव के कांशीराम (पहाड़ी गांधी) की पत्नी को ये लोग ले गए थे वह अब तक नहीं लौटी। इस बात का निर्णय तुम स्वयं करो।

अमृतसर विभाग में चार जिले थे – अमृतसर, गुरदासपुर, स्यालकोट और कांगड़ा। रामसिंह जी ने अपना केन्द्र अमृतसर को बताया और सबसे पहले अमृतसर नगर को ही मजबूत बनाने का निश्चय किया। वहां कार्यकर्ताओं की उत्तम टोली बन जाने के बाद उन्होंने अन्य क्षेत्रों की ओर ध्यान दिया।

मुस्लिम आक्रान्ताओं में वृद्धि

मुसलमानों की वृत्ति उच्छृंखल तो होती ही है। मुस्लिम लीग के १६४० के पाकिस्तान प्रस्ताव ने उनकी उच्छृंखलता को एक दिशा दे दी। १६४२ से उनकी आक्रमण में वृद्धि होनी शुरू हो गई। यह सारी आक्रामकता हिन्दुओं के ही विरुद्ध थी और लगभग सारे देश में थी। १६४६ में इसने योजनाबद्ध रूपसे सामूहिक आक्रामकता का रूप ले लिया और विभिन्न स्थानों पर योजनाबद्ध रूप से हिन्दुओं पर आक्रमण करके हिन्दू संहार ही करना शुरू कर दिया। कलकता नाआखकी, टिप्पड़ा (बंगाल और हरिपुर हजारा - सीमा प्रान्त के हिन्दू संहार तो कई-कई दिन तक चले रहे। एक अनुमान के अनुसार १६४६ में केवल इन चार क्षेत्रों में ही २० से २५ हजार के बीच हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा गया और घायल हुए वे अलग। कितनों को जबरदस्ती मुस्लमान बना लिया गया, कितनों के घर लूट लिए गए और जला दिए गए तथा कितनी महिलाओं का अपहरण व शीलभंग किया गया, इसका कोई आंकड़ा उपलब्ध नहीं है। हिन्दू कायर नहीं था। लेकिन पिछले कई वर्षों से लगातार उसे अहिंसा-अहिंसा' के इंजेक्शन देकर का अकर्मण्य बना दिया गया था। इसलिए वह इन स्थानों पर मुस्लिम आक्रमणों की योजना को न तो समय पर समझ सका और न ही उनका प्रतिकार कर सका। राष्ट्रीय स्वयंसेवक आरम्भ से ही हिन्दू युवकों में वीरवृत्ति निर्माण करने का प्रयत्न कर रहा था। इसके पीछे का उद्देश्य था योग्य समय आने पर सारे देश से एक साथ ही अंग्रेजों को निकाल बाहर किया जाए और भारत को स्वतन्त्र किया जाए। लेकिन इससे पहले ही मुसलमान हिन्दुओं के प्रति अधिक आक्रामक होने होने लगे पड़े। इसलिए संघ के स्वयंसेवकों के लिए न चाहते हुए भी यह आवश्यक हो गया कि वे पहले मुसलमानों से निपट लें।

अमृतसर मन्दिरों की नगरी है। हरमन्दिर साहिब (स्वर्ण मन्दिर) भी यहीं है। इसलिए वह हिन्दुओं का बहुत बड़ा आस्था केन्द्र है। इसके साथ ही वहां मुसलमान भी पर्याप्त संख्या में थे। मुसलमान आए रोज कुछ न कुछ छेड़खानी करते रहते ही थे। इससे उत्साहित होकर अनेक युवक शाखाओं में आने लग पड़े। शाखाओं का जाल सा बिछ गया। सन् १६४६ के अन्त तक अमृतसर नगर में शाखाओं की दैनिक उपस्थिति ३००० तक पहुंच गई।

प्रतिरोध व प्रतिकार

अमृतसर मन्दिरों की नगरी है। हरमन्दिर साहिब (स्वर्ण मन्दिर) भी यहीं है। इसलिए वह हिन्दुओं का बहुत बड़ा आस्था केन्द्र है। इसके साथ ही वहां मुसलमान भी पर्याप्त संख्या में थे। मुसलमान आए रोज कुछ न कुछ छेड़खानी करते रहते ही थे। इससे उत्साहित होकर अनेक युवक शाखाओं में आने लग पड़े। शाखाओं का जाल सा बिछ गया। सन् १६४६ के अन्त तक अमृतसर नगर में शाखाओं की दैनिक उपस्थिति ३००० तक पहुंच गई। अमृतसर में उन दिनों लगभग एक सौ अखाड़े थे। उन अखाड़ों में जाने वाले बहुत से युवा भी संघ शाखाओं में आने लग पड़े। सारे शहर का वातावरण संघमय हो जाने के कारण मुस्लिम गुण्डागर्दी पर भी काफी अंकुश लग गया।

कलकता काण्ड की तरह पंजाब की मुस्लिम लीग ने ५ मार्च १६४७ के दिन पंजाब के कई

स्थानों पर हिन्दुओं पर एक साथ हमले करने की योजना बनायी। तदानुसार अमृतसर में भी मुसलमानों ने ५ मार्च को दोपहर से ही छुरेबाजी शुरू कर दी। हाल बाजार में हिन्दुओं की दुकानों को लूट कर उनमें आग लगा दी। लोहगढ़ गेट, सुलतान विंड, नमक मण्डी आदि क्षेत्रों में भी हमले व आगजनी शुरू कर दी। शाम तक कई इलाकों से ऊंची-ऊंची लपटें उठती हुई दूर से ही दिखायी देने लगी।

रामसिंह जी ने स्वयंसेवकों को मानसिक रूप से इतना तैयार कर रखा था कि कैसी भी विकट स्थिति आ आए, वे उसमें घबराएं नहीं, डरें नहीं, पीछे भागें नहीं, अपितु उसका डटकर सामना करें और अपने कर्तव्य के बल पर उस पर विजय प्राप्त करें। अतः अमृतसर के स्वयंसेवकों ने ५ मार्च से ही मुस्लिम आक्रमणों का प्रतिकार अपनी-अपनी गली, कूचे और बाजार में आरम्भ कर दिया। चौरस्ती अटारी में आकर मिलने वाली एक गली में केवल मुसलमान ही रहते थे। उसके सामने और दाएं-बाएं का क्षेत्र सारा हिन्दू था, जिसमें गुरु बाजार, काठिया वाला बाजार, बर्तन वाला बाजार, हवेली जमादार आदि थे। मुसलमानों ने अपनी गली में कई पीपे मिट्टी के तेल के भर कर रखे हुए थे, ताकि रात को सारे हिन्दू क्षेत्र को जला दिया जाए। एक स्वयंसेवक जिसका घर चौरस्ती अटारी चौक में ही था की सतर्क नजरों से वे पीपे बच नहीं सके और उसने कुछ और साथियों की सहायता से उन पीपों का तेल मुसलमानों के ही घरों में डाल उन्हें आग लगा दी। सारी मुस्लिम गली जल उठी और उस गली के मुसलमान रात को ही भाग कर अन्य मुस्लिम इलाकों में चले गए। वह सारा हिन्दू क्षेत्र सुरक्षित हो गया।

गली-गली और कूचे-कूचे में संघर्ष हुआ। छः महीने में से लगभग चार- साढ़े चार महीने तक अमृतसर में कर्फ्यू रहा। कर्फ्यू भी केवल हिन्दुओं के लिए होता था, मुसलमानों के लिए नहीं, क्योंकि पुलिस में ८०% मुसलमान ही थे। इसके बावजूद स्वयंसेवकों ने मुसलमानों का डट कर मुकाबला किया। छुरे-तलवारों का छुरे-तलवारों से, गोलियों का गोलियों से और बमों का बमों से।

इसके बाद कई स्थानों पर मोर्चे लगाए गए। ये मोर्चे लगातार छः महीने तक लगे रहे। गली-गली और कूचे-कूचे में संघर्ष हुआ। छः महीने में से लगभग चार- साढ़े चार महीने तक अमृतसर में कर्फ्यू रहा। कर्फ्यू भी केवल हिन्दुओं के लिए होता था, मुसलमानों के लिए नहीं, क्योंकि पुलिस में ८०% मुसलमान ही थे। इसके बावजूद स्वयंसेवकों ने मुसलमानों का डट कर मुकाबला किया। छुरे-तलवारों का छुरे-तलवारों से, गोलियों का गोलियों से और बमों का बमों से। इस प्रकार १६-१७ अगस्त तक अमृतसर मुस्लिम विहीन कर दिया गया। इस काम में वहा पर सम्पूर्ण हिन्दू समाज स्वयंसेवकों के साथ कंधे से कन्धा मिला कर खड़ा रहा। यह सब उस योजकता का ही परिणाम था, जो रामसिंह जी ने वहां के स्वयंसेवकों को दी थी।

इसी तरह अमृतसर विभाग के अन्य भी अनेक स्थानों पर भीषण संघर्ष हुए, जिनमें तनतारन, बटाला, कादियां, छहरटा, नगरोटा बंगवां, चम्बा, डल्हौजी नादौन आदि प्रमुख हैं। इन सब स्थानों पर संघर्ष १५ अगस्त के बाद हुए। मुसलमानों ने इस स्थानों पर भी काफी तैयारी कर रखी थी।

लेकिन हिन्दू उन पर भारी पड़े और मुसलमान पाकिस्तान जाने को मजबूर हुए।

पंजाब रिलीफ कमेटी

१५ अगस्त १९४७ को पाकिस्तान विधिवत् बन गया। अमृतसर विभागका स्यालकोट जिला और गुरदासपुर जिले की शकरगढ़ तहसील (रावी पार का क्षेत्र) पाकिस्तान में चले गए। पाकिस्तानी क्षेत्र से हिन्दुओं का निष्कासन तो जून १९४७ से ही आरम्भ हो चुका था तथा जुलाई अन्त से उधर से आनेवालों की संख्या प्रतिदिन और भी बढ़ गई। अधिकांश लोग वहां से पहले अमृतसर या डेराबाबा नानक पहुंचते थे, फिर अन्यत्र जाते थे। ये दोनों ही स्थान रामसिंह जी के कार्यक्षेत्र में थे। अतः इन स्थानों पर आ रहे लोगों को ठहराने व उनके भोजन की व्यवस्था तथा घायलों के इलाज व उनकी सेवा-सुश्रषा आदि के प्रबन्ध की तुरन्त आवश्यकता थी। रामसिंह जी की प्रेरणा व मार्गदर्शन में संघ के स्वयंसेवक कई महीनों तक यह काम करते रहे। यह कार्य **पंजाब रिलीफ कमेटी** के माध्यम से किया जाता रहा, जिसकी स्थापना १९४७ के आरम्भ में मुस्लिम दंगों में प्रभावित हिन्दुओं की सेवा के लिए लाहौर में की गई थी और बाद में पंजाब के सभी जिलों में इसकी शाखाओं का गठन कर दिया गया था। विभाजन के उपरान्त शेष बचे सभी जिलों में शरणार्थी शिविर लगाने पड़ गए थे, इसलिए पंजाब रिलीफ कमेटी का काम काफी बढ़ गया था। अतः माधवराव जी ने रिलीफ कमेटी की देखरेख की जिम्मेवारी भी रामसिंह जी को सौंप दी। इसी दौरान ठाकुर रामसिंह जी को सहप्रान्त प्रचारक घोषित कर दिया। इनके साथ ही चार और विभाग प्रचारकों को भी सहप्रान्त प्रचारक बना दिया गया। वे थे – बाबूराव पालधीकर, पं. लेखराज, बसन्तराव अगाकर और गंगाविष्णु।

वे बोले– ‘‘मैं आपके चरणों को स्पर्श नहीं कर रहा, मैं तो संघ की उस शक्ति के सम्मुख नतमस्तक हो रहा हूं जिसके १२-१४ वर्ष के लड़कों ने वह साहसपूर्ण कार्य किया, जो मेरे सैनिक भी नहीं कर सकें। इसके बाद उन्होंने एक घटना सुनाई।

ब्रिगेडियर का प्रश्न

दिसम्बर १९४७ में सरसंघचालक श्री गुरुजी का एक भव्य कार्यक्रम अमृतसर में हुआ। कार्यक्रम रानीबाग में था, जोकि छावनी क्षेत्र के बिल्कुल साथ ही था। कार्यक्रम के पश्चात् सेना के एक ब्रिगेडियर ठाकुर जी के पास आए और बोले कि मैं गुरुजी से मिलना चाहता हूं। ठाकुर जी ने कारण पूछा तो वे बोले कि यह मैं गुरुजी को ही बताऊंगा। गुरुजी को जहां ठहराया हुआ था, ठाकुर जी उन्हें वहीं ले गए। कक्ष में प्रवेश करते ही उन्होंने श्री गुरुजी का चरण-स्पर्श करना चाहा। श्रीगुरुजी ने उन्हें रोकते हुए कहा कि आप सेना के अधिकारी हैं और आयु में भी मेरे से कम नहीं हैं। अतः आपको मेरे चरणस्पर्श नहीं करने चाहिए। वे बोले– ‘‘मैं आपके चरणों को स्पर्श नहीं कर रहा, मैं तो संघ की उस शक्ति के सम्मुख नतमस्तक हो रहा हूं जिसके १२-१४ वर्ष के लड़कों ने वह साहसपूर्ण कार्य किया, जो मेरे सैनिक भी नहीं कर सकें। इसके बाद उन्होंने एक घटना सुनाई।

‘‘विभाजन के समय सुरक्षा की दृष्टि से मैं लाहौर में नियुक्त था। वहां एक मुहल्ले में मुस्लिम

नेशनल गार्ड्स के लोगों ने आग लगा दी। मकान जल रहे थे। वहां के लोग तो जैसे-तैसे बाहर निकल आए, परन्तु उनमें से कुछ के बच्चे पीछे मकानों में ही रह गए। उनके माता-पिता बाहर खड़े चिल्ला रहे थे कि कोई हमारे बच्चों को बचाओ। मैंने अपने सैनिकों को उनकी सहायता करने के लिए कहा, परन्तु उन्होंने कहा कि यह तो हमारा काम नहीं है, यह कार्य फायर ब्रिगेड का है। इतने में संघ के १३-१४ वर्ष के कुछ निक्करधारी लड़के वहां आए। उन्होंने आव देखा ने ताव फौरन जलते मकानों में घुस गए और अपनी जान पर खेलकर घरों से बच्चों को सुरक्षित निकाल कर बाहर ले आए तथा उनके रोते माताओं -पिताओं को सौंप दिया। अतः मैं जानना चाहता हूं कि आप संघ में इन लड़कों को क्या जादू या तन्त्र-मन्त्र सिखाते हैं कि उन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए वह काम कर दिखाया जो मेरी सेना के जवान नहीं कर सके। श्रीगुरुजी ने कहा कि ''संघ में इनको कोई जादू या मन्त्र नहीं सिखाया जाता। वे रोज एक घंटे के लिए एकत्रित होकर कबड्डी खेलते हैं और इसी कारण उनमें साहस का गुण आ गया है।

संघ पर प्रतिबन्ध

जनवरी १९४८ आते-आते शरणार्थी समस्या काफी कम हो गई। अतः माधवराव जी ने पूर्वी पंजाब में संघ की आगामी दिशा व पुनर्रचना पर विचार करने के लिए विभाग प्रचारकों की बैठक जालन्धर में बलुाई। बैठक ३० जनवरी दोपहर को समाप्त हो गई। दोपहर के भोजन के बाद कुछ विभाग प्रचारक जिनमें ठाकुर रामसिंह जी भी थे, कपूरथला के राजमहलों को देखने कपूरथला गए। वहां वे साढ़े चार बजे के लगभग सीधे संघ कार्यालय पहुंचे। कुछ देर बाद वहां के प्रचारक ने उनके जलपान हेतु कुछ सामान बाजार से लाने के लिए किसी स्वयंसेवक को भेजा। उस समय एक दुकान पर रेडियो से समाचार आ रहे थे और बहुत से लोग वहां इकट्ठा थे। उस स्वयंसवेक ने वहां लोगों को बातें करते हुए सुना कि गांधी जी को किसी ने गोली मार दी है। उसने कार्यालय में आकर बताया। इसकी पुष्टि करने के लिए वहां के प्रचारक स्वयं बाजार गए और वापिस आकर बताया कि समाचार सत्य है। इस पर कपूरथला घूमने की बात तो खत्म हो गई और ये सब विभाग प्रचारक वापिस जालन्धर आ गए। रात को माधवराव जी से विचार-विमर्श करके अगली सुबह अपने-अपने क्षेत्रों में चले गए। कांग्रेस सरकार ने गांधी हत्या का लाभ उठाया और हत्या का आरोप संघ पर मढ़ते हुए देश भर में हजारों संघ कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया तथा ४ फरवरी को संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

प्रतिबन्ध के विरुद्ध दिसम्बर १९४८ में देशव्यापी सत्याग्रह आरम्भ किया गया। ठाकुर जी ने भी सत्याग्रह किया। इन्हें योल कैम्प जेल में रखा गया। माधवराव जी तथा सरकार्यवाह भैय्या जी दाणी भी इसी जेल में थे। संघ पर झूठा आरोप लगाए जाने के कारण जब सरकार बदनाम होने लगी तो झख मार कर सरकार ने १२ जुलाई १९४९ को प्रतिबन्ध उठा दिया।

प्रतिबन्ध उठने के कुछ ही समय बाद १९४९ के अन्त में ठाकुर जी को आसाम के प्रान्त

प्रचारक का दायित्व देकर आसाम भेज दिया गया।

असम में संघ कार्य संघ पर प्रतिबन्ध लगने के कुछ ही दिन पूर्व शुरू हुआ था। प्रतिबन्ध लग जाने पर वह सब शून्य हो गया था। प्रतिबन्ध हटने के बाद भी वहां स्थिति संघ के बहुत विपरीत थी। संघ 'गांधी मारा पार्टी' (गांधी को मारने वाली पार्टी) है, ऐसा दुष्प्रचार वहां कांग्रेसियों व कम्युनिस्टों ने खूब कर रखा था। इसलिए आम लोगों की भी यही धारणा बन गई हुई थी। ऐसी स्थिति में ठाकुर रामसिंह जी वहां पहुंचे थे।

कांग्रेस व कम्युनिस्टों के कुप्रचार को रोकने करने के लिए असम के कुछ प्रमुख श्रेष्ठ लोगों की सूची बनाई और उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलकर उन्हें संघकार्य, संघ विचार व संघ उद्देश्य के बारे में योग्य जानकारी दी तथा उनकी शंकाओं का निवारण किया। इस दृष्टि से असम में नगांव जिला के कामपुर के श्री नवकान्त बरुआ के अनुसार 'उन्होंने सबसे पहले हाईकोर्ट के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश श्री कामाख्या राम बरुआ से सम्पर्क साधा। उनसे बातचीत की और उनके गले पूरी बात उतारी। तदनन्तर उनके सहयोग से उनके दामाद एवं प्राग्ज्योतिष कालेज के अध्यक्ष श्री तीर्थनाथ शर्मा, नगांव के नामी वकील व आर्य विद्यापीठ कालेज के अध्यक्ष श्री गिरधर शर्मा, नगांव के ही एक अन्य नामी वकील श्री राधिकामोहन गोस्वामी से सम्पर्क स्थापित किया। इन सबको संघ के सम्बन्ध में युक्तिपूर्ण यथोचित जानकारी दी। इसके कारण संघ कार्य असम में धीरे-धीरे बढ़ने लगा। ठाकुर जी कहा करते थे कि स्वयंसेवकों को तैरना, नौका चलाना, घुड़ सवारी करना, साइकिल चलाना, सब आना चाहिए। एक बार उन्होंने गुवाहाटी के तरुणों स्वयंसेवकों की एक बैठक में कहा – ''असम के महापुरुष शंकर देव एवं वीर लाचित बड़फुकन की केवल प्रशंसा करने से काम नहीं चलेगा, उनके गुणों को अपने जीवन में आत्मसात् भी करना पड़ेगा। शंकरदेव घोर वर्षा में उफनती हुई ब्रह्मपुत्र नदी को भी पार कर जाते थे। क्या हम वह काम कर सकते हैं? सब चुप रहे। ठाकुर जी पुनः बोले – ''कल ब्रह्मपुत्र को तैरकर पार करने में मेरे साथ कौन-कौन चलने को तैयार है? पहले तो सब एक दूसरे का मुंह देखने लगे। फिर उनमें से चार लोगों ने हिम्मत की और कहा कि हम चलेंगे।

कांग्रेस व कम्युनिस्टों के कुप्रचार को रोकने करने के लिए असम के कुछ प्रमुख श्रेष्ठ लोगों की सूची बनाई और उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलकर उन्हें संघकार्य, संघ विचार व संघ उद्देश्य के बारे में योग्य जानकारी दी तथा उनकी शंकाओं का निवारण किया। इस दृष्टि से असम में नगांव जिला के कामपुर के श्री नवकान्त बरुआ के अनुसार 'उन्होंने सबसे पहले हाईकोर्ट के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश श्री कामाख्या राम बरुआ से सम्पर्क साधा।

अगले दिन उन चार तरुणों को लेकर ठाकुर जी उझान बाजार घाट से ब्रह्मपुत्र नदी में उतरे। साथ में एक नाव भी किराए पर कर ली और उन चारों को कहा तैरते हुए जो थक जाए, वह नौका में सवार हो जाए। पांचों ने तैरना शुरू किया। तैरते - तैरते बाकी तो एक-एक कर बीच में ही थककर नौका पर चढ़ते गए, लेकिन ठाकुर जी अन्त तक तैरते रहे और दूसरे पार अमीन गांव घाट पर ही

जाकर उतरे। इतना दम था ठाकुर जी में और वे धीरे-धीरे ऐसा दम स्वयंसेवकों में भी निर्माण करने की कोशिश कर रहे थे।

तिनसुकिया के श्रीगुरुपद भौमिक, जो बाद में प्रचारक भी रहे और आज तक गुवाहाटी में वरिष्ठ अधिवक्ता हैं, ने बताया कि ''मैं जब बाल स्वयंसेवक था, तब हमारे तिनसुकिया में ठाकुर जी जब भी आते थे तो प्रायः तरुण स्वयंसेवकों को लेकर ही वे नपुखुदी (अहोम राजाओं के समय का विशाल सरोवर) जाते थे और वहां पर सरोवर की चारों भुजाओं को तैर कर पार करने का कार्यक्रम होता था। ठाकुर जी ने ऐसे साहसी कार्यक्रमों के माध्यम से ही दमदार कार्यकर्ताओं की शृंखला निर्मित की और उनमें से ही बाद में अनेक प्रचारक भी निकले। कामपुर के नवकान्त बरुआ ने बताया कि १६ प्रचारक तो अकेले कामपुर से ही निकले। १९६०-६१ की बात है। एक दिन त्रिगढ़ के संघ कार्यालय में शाम के समय कुछ उग्र प्रकृति के लड़कों ने आकर शाखा बन्द करने की धमकी दी। किन्तु ठाकुर जी की तेजस्वितापूर्ण बातें और युक्तियां सुनकर वे स्तब्ध रह गए। अन्त में उन्होंने ठाकुर जी से क्षमा भी मांगी। ठाकुर जी ज्यादातर मोटर साईकिल से ही प्रवास पर जाते थे। १९६६ में वे एक बार कामपुर से गुवाहाटी जा रहे थे। पीछे मधुकर लिमए जी बैठे थे। सोनापुर के पास मोटर साईकिल का एक्सीडेंट हो गया। ठाकुर जी के घुटनों में काफी चोट आई। मधुकर जी ने एक गाड़ी की व्यवस्था की और उन्हें गुवाहाटी मैडीकल कालेज ले गए। वहां उनका आपरेशन हुआ और इस कारण दो महीने अस्पताल में ही रहना पड़ा। अस्पताल में जब १५ दिन गुजर गए तो ठाकुर जी ने एक स्वयंसेवक उमाशंकर बनर्जी को कहा कि कल सुबह यहां १०-१५ कुर्सियां लगा देना और कुछ चाय आदि की व्यवस्था कर देना। लेकिन ऐसा क्यों, यह उन्होंने कुछ नहीं बताया।

असम के महापुरुष शंकर देव एवं वीर लाचित बड़फुकन की केवल प्रशंसा करने से काम नहीं चलेगा, उनके गुणों को अपने जीवन में आत्मसात् भी करना पड़ेगा। शंकरदेव घोर वर्षा में उफनती हुई ब्रह्मपुत्र नदी को भी पार कर जाते थे। क्या हम वह काम कर सकते हैं? सब चुप रहे।

व्यवस्था कर दी गई। एक निश्चित समय पर अस्पताल के १० डाक्टर आए। ठाकुर जी ने उन्हें कुर्सियों पर बैठने के लिए कहा और स्वयं बिस्तर पर बैठे-बैठे ही उनकी डेढ़ घण्टे तक बैठक ली तथा उन्हें संघ व समाज के विषय में बताया। बैठक के बाद उन्हें चायपान कराया। यानी अस्पताल में भी संघकार्य। वहां रहते हुए उन्होंने सब कर्मचारियों से ऐसे सम्बन्ध बना लिए थे कि दो महीने के बाद जब उनकी वहां से छुट्टी हुई तो डाक्टर, नर्से, सफाई कर्मचारी आदि सभी उन्हें गाड़ी तक छोड़ने के लिए गए। यह थी उनकी संगठन कुशलता थी।

१९६७ में उनके पिताजी का देहान्त हो गया। इसकी सूचना तार द्वारा उन्हें भेजी गई। जब तार गुवाहाटी पहुंचा तो उस समय ठाकुर जी प्रान्त के सभी प्रचारकों की बैठक ले रहे थे। कार्यालय प्रमुख ने तार उनके हाथ में लाकर दिया। ठाकुर जी ने खोलकर उसे पढ़ा और जेब में रख दिया। इसके बाद भी डेढ़ घण्टे तक बैठक चली। ठाकुर जी के हाव-भाव में किसी तरह का परिवर्तन नहीं था, सब

सामान्य था। इसलिए किसी को पता ही नहीं चला कि कुछ हुआ है। बैठक, समाप्ति के बाद वे अपने कक्ष में जाकर शान्त होकर बैठ गए और सुबकने लगे। पूछने पर उन्होंने वह तार दिखाया - father expired ।

वे स्वयंसेवकों को कैसे घड़ते थे और उन्हें कार्य के लिए सक्षम बनाते थे, इस दृष्टि से नवकान्त बरुआ ने एक प्रसंग बताया। 1961 में असम में पहली बार संघ शिक्षा वर्ग लगा। नवकान्त बरुआ भी उसमें शिक्षक के नाते गए थे। ठाकुर जी ने उन्हें वर्ग में बौद्धिक देने के लिए कहा। विषय दिया – 'कथनी और करनी।' बरुआ ने कहा – 'ठाकुर जी, मैं इस विषय पर नहीं बोल सकूंगा। ठाकुर जी ने कहा – 'क्यों नहीं बोल सकोगे? इसके लिए विषय बिन्दु मैं तुम्हें दे दूंगा। बरुआ ने कहा– 'बात विषय बिन्दु की नहीं। इस विषय पर बोलते समय मुझे कहना पड़ेगा कि देश के लिए, समाज के लिए हमें सर्वस्व त्याग करना पड़ेगा, प्रचाकर निकलना पड़ेगा। किन्तु मेरी स्थिती प्रचारक निकलने की नहीं है। अतः आप विषय को बदलकर कोई दूसरा विषय दे दीजिए।'' ठाकुर जी गरज पड़े - ''रामसिंह ठाकुर यहां विषय परिवर्तन के लिए नहीं आया है, व्यक्ति परिवर्तन के लिए आया है। नवकान्त जी ने बताया कि मुझे उसी विषय पर बोलना पड़ा और बाद में मैं प्रचारक भी निकला।

१९६७-६८ के लगभग गुवाहाटी विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र विभाग में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर एक संगोष्ठी रखी गई। ठाकुर जी भी उसमें श्रोता के नाते गए। वहां एक वक्ता ने बोलते हुए कहा कि 'हिन्दूराष्ट्र का विचार एक बोगस विचार है। कौन कहता है कि यह हिन्दू राष्ट्र है?'' ठाकुर जी ने तुरन्त इसका प्रतिवाद दिया। फिर वे अपने स्थान से उठे और मंच पर आ गए। उसके उपरान्त उन्होंने हिन्दूराष्ट्र का विशुद्ध व तर्कसंगत विचार सबके सम्मुख बड़ी ओजस्वी भाषा में रखा। जब तक वे बोले, सभाकक्ष में पूर्ण शान्ति छायी रही। ठाकुर जी आधुनिक युग में पत्र-पत्रिकाओं की महत्ता भी अच्छी तरह समझते थे। इसलिए उन्होंने गुवाहाटी से 'आलोक' नाम से असमी भाषा में एक समाचार पत्र का प्रकाशन की शुरू करवाया।

चीनी आक्रमण के समय

१९६२ में चीनी आक्रमण के समय जबकि कई नेता घबरा कर असम से भागकर कलकत्ता दिल्ली आदि सुरक्षित क्षेत्रों में चले गए तथा उनके देखा-देखी अन्य भी बहुत से लोग भागने लगे, यहां तक कि कुछ सरकारी अधिकारी भी भागने की फिराक में थे, ऐसे समय ठाकुर जी वहां डओ रहे। अन्य लोगों को भी उन्होंने अपने-अपने स्थान पर डटे रहने की प्रेरणा दी। उनका कहना था संकट से भागो नहीं, उसका डटकर मुकाबला करो। अतः वे इस प्रकार की योजना बनाने में जुट गए कि अगर चीनी असम में आ गए तो स्वयंसेवक उनका प्रतिरोध किस-किस प्रकार से करें। लेकिन चीन द्वारा एकतरफा युद्ध विराम कर दिए जाने के कारण योजना को क्रियान्वित करने की जरूरत ही नहीं पड़ी।

वापिस पंजाब

पिताजी की मृत्यु के बाद माताजी घर में अकेली रह गई थी। ठाकुर जी के बचपन के मित्र पं. रिखीराम शर्मा, जोकि पास के ही गांव कल्याल में रहते थे, ने जीवनपर्यन्त माता जी की देखभाल की।

फिर भी ठाकुर जी को बीच-बीच में घर आना ही पड़ता था और इसमें उन्हें काफी असुविधा होती थी। इसलिए संघ अधिकारियों ने ठाकुर जी का स्थानान्तरण ही आसाम से पंजाब में कर दिया। वे १९७१ में सह-प्रान्तप्रचारक के नाते पंजाब में आए और कुछ ही समय बाद वे प्रान्त प्रचारक हो गए।

२६ जून, १९७५ को श्रीमती इन्दिरा गांधी ने देश में आपातकाल लागू कर दिया। उस समय रोहतक के वैश्य कॉलेज में पंजाब प्रान्त का संघ शिक्षा वर्ग लगा हुआ था। २८ जून की सुबह पुलिस ने वैश्य कालेज के पूरे परिसर को घेर लिया तथा शिक्षा वर्ग को समाप्त कर देने के लिए कहा। गुप्तचर विभाग के लोगों की सरगर्मियां बढ़ गई थी। वो वर्ग के अन्दर घूम रहे थे। अतः सभी स्वयंसेवकों को अपने-अपने घरों को भेज दिया। सभी प्रमुख अधिकारी भी वेश बदल कर अलग-अलग रास्तों से वहां से निकल गए। ठाकुर जी ने भी सिर पर साफा लपेटा नीचे तम्बा बांधा और हाथ में पानी का लोटा लेकर ग्रामीण के वेश में शौच के बहाने खेतों की ओर निकल गए और घूमकर लम्बा चक्कर काटते हुए बस द्वारा दिल्ली पहुंच गए। क्योंकि ठाकुर जी के निर्देश थे कि कोई भी व्यर्थ में गिरफ्तार नहीं होना चाहिए। आपातकाल में ठाकुर जी के गिरफ्तारी बारण्ट निकले हुए थे। पर ठाकुर जी पुलिस को मिलते कहां? पुलिस उनके गांव झण्डवीं जाती, उनकी माताजी व अन्य लोगों से पूछताछ किन्तु किसी से उनका सुराग नहीं मिला। अन्त में पुलिस उनके घर पर नोटिस चिपका दिया कि आत्म समर्पण करो, अन्यथा घर की कुर्की कर दी जाएगी। इस प्रकार ठाकुर जी का मकान भी संकट में पड़ गया। घर नहीं रहेगा तो माताजी कहां जाएंगी? इस पर संघ के अन्य वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं को भी चिन्ता हुई। ऐसी स्थिति में एक दिन नारायणदास जी ने उनको कहा – ''ठाकुर जी, इस वृद्धावस्था में माताजी के लिए यह स्थिति बहुत ही कष्टदायक है। मेरा सुझाव है कि आप आत्म समर्पण कर दें। इससे घर कुर्क होने से बच जाएगा। इसपर ठाकुर जी गरज पड़े – ''रामसिंह कायर नहीं है जो पुलिस के नोटिस से डरकर समर्पण कर दे। घर जाता है,जाए। माता जी का क्या होगा यह बाद में देखा जाएगा। लेकिन रामसिंह जानबूझ कर पुलिस की गिरफ्त मैं नहीं आएगा।''

ठाकुर जी ने भी सिर पर साफा लपेटा नीचे तम्बा बांधा और हाथ में पानी का लोटा लेकर ग्रामीण के वेश में शौच के बहाने खेतों की ओर निकल गए और घूमकर लम्बा चक्कर काटते हुए बस द्वारा दिल्ली पहुंच गए। क्योंकि ठाकुर जी के निर्देश थे कि कोई भी व्यर्थ में गिरफ्तार नहीं होना चाहिए। आपातकाल में ठाकुर जी के गिरफ्तारी बारण्ट निकले हुए थे। पर ठाकुर जी पुलिस को मिलते कहां?

सुरुचि साहित्य

मेरे पास सुरुचि साहित्य का काम था। ठाकुर जी अध्ययनशील थे ही। इन्होंने मुझे कहा कि जो भी तुम्हें कोई विशेष अच्छी पुस्तक हाथ लगे, वह मुझे पढ़ने के लिए दे दिया करो। सुरुचि साहित्य में नई-नई और स्तरीय पुस्तकें आती ही रहती थी। ठाकुर जी जब भी दिल्ली आते थे, मैं उन्हें कोई न कोई पुस्तक दे ही देता था। मैंने उन्हें कई पुस्तकें दी, लेकिन चार विशेष पुस्तकें जिनका मुझे अभी तक स्मरण है, वे है –

१. सुदूरपूर्व में भारतीय संस्कृति — बैजनाथ पुरी
२. बृहत्तर भारत — चन्द्रगुप्त बेदालंकार
३. Hindu superout – Har bilas sarla
४. वेदों में भारतीय संस्कृति — सम्पूर्णानन्द

ये चारों पुस्तकें इतिहास से सम्बन्धित हैं और अत्यन्त श्रेष्ठ लेखकों द्वारा लिखी हुई है। इन चारों को पढ़ने के बाद ठाकुर जी के वार्तालापों में मुझे कुछ परिवर्तन सा लगा जैसे कि उनके अन्दर का इतिहासकार जाग गया हो जो पिछले २७-२८ वर्षों से संघकार्य में व्यस्तत के कारण सो सा गया था। अब उनका ध्यान पुनः इतिहास के क्षेत्र की ओर गया और वे इसके विशद अध्ययन की ओर प्रवृत्त हुए। इसका लाभ आगे जाकर काफी हुआ।

विभाजन कालीन इतिहास

१९९२ में ठाकुर जी बारंगल अधिवेशन में भारतीय इतिहास संकलन योजना के अध्यक्ष चुने गए। इसके कुछ समय बाद एक बार चमनलाल जी ने मुझे झण्डेवाला संघ कार्यालय बुलाया और कहा कि ठाकुर जी आपसे कुछ बात करना चाहते हैं। ठाकुर जी और चमनलाल जी दो देह एक प्राण थे। दोनों लाहौर से एक साथ प्रचारक निकले थे। ठाकुर जी को कांगड़ा जिला का और चमनलाल जी को मण्डी रियासत का दायित्व दिया गया था। ठाकुर जी विभाग प्रचारक हो गए तो चमनलाल जी को कांगड़ा जिला का काम सौंपा गया। बाद में चमन लाल जी लाहौर प्रान्तीय कार्यालय प्रमुख हो गए तो ठाकुर जी का लाहौर काफी आना जाना होता ही था। ठाकुर जी आसाम चले गए तो चमनलाल जी दिल्ली कार्यालय प्रमुख हो गए और इस नाते भी उनका सम्पर्क लगातार बना रहा। अब तो दोनों झण्डेवाला में ही थे।

मैंने चमनलाल जी से पूछा — ''ठाकुर जी किस विषय में बात करना चाहते है?'' उन्होंने बताया — ''विभाजन के समय पंजाब में संघ के स्वयंसेवकों ने जो शौर्यपूर्ण कार्य किए और बलिदान भी दिए, वे अभी तक सामने नहीं आए। ठाकुर जी चाहते हैं कि आप इस काम को करो।'' मैंने उन्हें कहा — ''चमनलाल जी, मेरी इस काम में रूचि भी है और मैं पहले से इस काम को कर भी रहा हूं। लेकिन यह स्वान्तः सुखाय है। इसमें कोई समय-सीमा नहीं है, अपनी सुविधा से थोड़ा-थोड़ा करता रहता हूं। परन्तु इसकी अगर जिम्मेवारी लेकर करना हो तो मेरे लिए यह संभव नहीं। मैं अब प्रचारक तो हूं नहीं। मेरा परिवार है और परिवार की आजीविका भी मुझे देखनी है। मेरी स्थिति ऐसी है कि एक सप्ताह भी लगातार निकालना मेरे लिए कठिन है। यदि मैं सब कुछ छोड़-छाड़ कर भी इस काम में लग जाऊं तो भी कम से कम दो तीन-साल तो लगेंगे ही। जोकि मेरे लिए यह संभव नहीं। हमारे कई स्वयंसेवक इस कार्य के लिए सक्षम हैं, अतः उनमें से किसी को यह काम सौंपे तो काम हो ही जाएगा।'' चमनलाल जी बोले — ''पांच-छः लोगों के नाम पर विचार किया गया था। अन्त में निर्णय आपके नाम पर हुआ।'' मैंने कहा — ''मलकानी जी (केवल रतन मलकानी, सम्पादक, आर्गनाइजर)

ने अभी सिंध स्टोरी लिखी है। वे पंजाब स्टोरी भी लिख देंगे। वे तो सिद्ध लेखक हैं। उनकी गति भी काफी तीव्र है। उनसे कहिए।''

चमनलाल जी ने मुस्कराते हुए कहा – ''उनसे भी बात हुई है। उनका कहना है कि मैं सिंधी हूं, इसलिए सिंध स्टोरी लिख सका। पंजाब के बारे में लिखने के लिए पंजाब का ही व्यक्ति चाहिए, जो पंजाब के चरित्र को समझता हो। अन्त में उन्होंने कहा कि ठाकुर जी अपने कमरे में ही हैं। आप उनसे जाकर मिल तो लो।

मैं ठाकुर जी से मिला। उनसे भी यही बातचीत हुई और मैंने अपनी असमर्थता जतायी। उन्होंने कहा कि 'आपको प्रवास आदि करने की जरूरत नहीं है। हम यहां से सब जगह परिपत्र (सर्कुलर) में एक प्रश्नावली भेज देगें। जिसमें उत्तर में केवल हां या ना अथवा दो-चार शब्दों में ही लिखना हो। वह प्रश्नावली स्वयंसेवक भर कर भेंज देंगे। इसमें उन्हें कुछ ज्यादा लिखना भी नहीं पड़ेगा और स्वयंसेवकों को सहज भी रहेगा। एक प्रश्नावली मैंने बनायी और एक प्रश्नावली चमनलाल जी ने। फिर दोनों को मिलाकर एक तीसरी प्रश्नावली बनाई गई और वह सब जगह भेजी गई। लेकिन किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया।

इसके बाद ठाकुर जी स्वयं प्रवास करते हुए सब के पीछे लगे। कुछ लोगों के जिम्मे लगाया कि अपने-अपने स्थान पर ऐसे स्वयंसेवकों के पीछे पड़-पड़ कर उनसे लिखवा लेवें। तीन वर्ष तक ठाकुर जी ने प्रवासों में यही मुख्य विषय रहता था। समय-समय पर वे सब से पूछ-ताछ भी करते रहते थे। इस प्रकार तीन सालों में जाकर कुछ सामग्री तैयार हुई। उधर चमनलाल जी से जो लोग मिलने आते थे, तो उनमें से कई व्यक्तियों से चमन लाल जी आग्रह पूर्वक लिखवा लेते थे। वह सारी सामग्री दिल्ली झण्डेवाला में इकट्की करके रख दी गई। सरकार्यवाह श्री हो.वे शेषाद्रि ने उसके संकलन व सम्पादन का काम दैनिक 'स्वदेश' इन्दौर के सम्पादक रहे श्री मणिक चन्द्र वाजपेयी को सौंपा। श्रीधर पराड़कर को उनकी सहयोगी के रूप में नियुक्त किया। दोनों ही संघ के प्रचारक थे। दोनों ने दो-ढाई वर्ष तक काफी परिश्रम करके 'ज्योति जला निज प्राण की' पुस्तक तैयार की, जोकि सन् 2000 में प्रकाशित हुई। ठाकुर जी भारत विभाजन पर काम करवाना चाहते थे। इस पर वे बोले – ''देख लो, आप करोगे तो यह इतिहास का हिस्सा बनेगा, नहीं करोगे तो यह अज्ञात इतिहास के अन्धकार में विलीन हो जाएगा। भावी पीढ़ियाँ इसे जान ही नहीं पाएंगी। अन्य कोई न तो इसके महत्व को समझता है और न ही किसी की इसमें रुचि है। इसलिए हिम्मत करो और इस का को हाथ में लो।''

मैं सोच में पड़ गया। ठाकुर जी की बात ठीक थी और कोई इसे करेगा नहीं। मैं भी अगर नहीं करूंगा तो विभाजन कालीन वह युद्ध भारतीय इतिहास का एक पृष्ठ कभी बन ही नहीं पाएगा। इसका दोषी मैं ही होऊंगा। मन ने एक हक मारी – **तस्माद् उत्तिष्ट कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चय**। यहां युद्ध तो बहुत पहले हो चुका था, बस व्यास का काम शेष था और व्यास बनने का निश्चय कर लिया। ठाकुर जी मेरे मुंह की ओर देख रहे थे। वे मेरे उत्तर की प्रतीक्षा में थे। मैंने कहा – 'ठीक है जी, मैं यह

काम करूंगा। लेकिन इसमें तीन बातें है –

१. मैं इसके लिए कोई समय-सीमा तय नहीं करूंगा। धीरे-धीरे और अपनी सुविधानुसार करूंगा।

२. मेरा विषय संघ ने उन दिनों क्या किया यह नहीं रहेगा, बल्कि हिन्दू समाज ने उस दिनों क्या किया, यह रहेगा।

३. मैं केवल पंजाब तक ही सीमित नहीं रहूंगा। देश के बाकी भागों में भी उन दिनों क्या हुआ, मैं उसको भी यथा संभव इसमें सम्मिलित करूंगा।

ठाकुर जी तो जैसे उछल से पड़े! बोले-बिल्कुल ठीक। आपने इतिहास के सूत्र को बिल्कुल ठीक पकड़ा है। ऐसा ही चाहिए, तभी वह प्रमाणिक इतिहास बनेगा। इसके बाद उन्होंने कहा – ''जो सामग्री इकट्ठी की गई थी, वह सारी जिलानुसार फाइलों में अभिलेखागार – कक्ष में रखी है। उस सामग्री का भी जितना उपयोग करना चाहो, करो। चमनलाल जी वह सामग्री आपको दिखा देंगे।'' इसके पश्चात् चमनलाल जी मुझे अभिलेखागार कक्ष में ले गए। कौन सी फाइलें कहां – कहां किस-किस अलमारी में रखी हैं, यह उन्होंने मुझे दिखाया।'' मैंने ठाकुर जी को सूचित किया कि मैं जनवरी महीने में एक सप्ताह के लिए जालन्धर पठानकोट व अमृतसर का प्रवास करूंगा। उन्होंने वहां के अधिकारियों का पत्र लिख कर मेरे वहां आगे की पूर्व सूचना दे दी थी, यह मुझे वहां पहुंचते पर ही पता लगा। तीनों स्थानों पर मैं कुछ लोगों से मिला और उनकी आपबीती व कर्तृव्य को मैंने लिखा। वापिस आकर दिल्ली व नोएडा के भी कुछ लोगों से मैं समय-समय पर मिलता रहा और उनका लिखता रहा।

राष्ट्रीय सुरक्षा समिति

१९८० के दशक में पंजाब में आतंकवाद शुरू हुआ। १९८६ तक वह अपने चरम स्तर पर आ गया था। उग्रवादी दिन दहाड़े भीड़ भरे बाजारों में निर्दोष लोगों की हत्या कर रहे थे। लोगों की बसों, कारों गाड़ियों से निकाल कर एक पंक्ति में खड़ा करके उन पर ए.के-४७ से गोलिया बरसा रहे थे। ऐसे समय सब स्थितियों पर काबू पाने के लिए संघ ने सबसे पहले जनता के मनोबल को बनाए रखने की आवश्यकता अनुभव की। इस दृष्टि से राष्ट्रीय सुरक्षा समिति का गठन करने का निश्चय किया। ठाकुर जी उस समय क्षेत्रीय प्रचारक थे। इस सम्बन्ध में ठाकुर जी ने मुझे १७-१२-२००५ को हुए वार्तालाप में बताया।

''पंजाब में आतंकवाद के विरोध के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा समिति का संयोजक, जयकृष्ण को बनाया। जयकृष्ण ने मेरे से पूछा – 'अध्यक्ष किसको बनाया जाए? मैंने डा. बलदेव चावला का नाम लिया। जयकृष्ण ने डॉ. बलदेव चावला से बात की। बलदेव ने कहा – ''अध्यक्ष बनने पर मैं आतंकवादियों की हिटलिस्ट में आ जाऊंगा और कभी गोली से मारा जाऊंगा। मेरे बच्चे अभी पढ़ रहे हैं। मेरे बाद मेरे परिवार का क्या होगा? इसलिए किसी और को अध्यक्ष बनाओ। जयकृष्ण ने मुझे

बताया कि मैंने बलदेव से बात की और कहा – ''जब गोली चलने की नौबत आने लगे तो मुझे बता देना। पहली गोली मैं खाऊंगा दूसरी तुम्हारे उपर चलेगी। बाकी रही परिवार की बात, तो क्या परिवार का सोच कर कभी कोई काम हुआ है? जो और परिवारों का होगा, वह तुम्हारे परिवार का भी होगा। कायरता को छोड़ो, और डट कर सामने आओ।'' आखिर बलदेव चावला भी तैयार हो गया।''

राष्ट्रीय सुरक्षा समिति के विषय में थोड़ा और स्पष्ट चित्र जयकृष्ण शर्मा जी ने खींचा है।

''सन् १९८६ की वैशाखी के आस-पास की बात है। मैं अपने निजी कार्य से दिल्ली जाने वाला था। तभी मुझे सूचना मिली कि ठाकुर रामसिंह जी दिल्ली में है और वे मेरे से मिलने चाहते हैं। मैं दिल्ली गया और निजी कार्य निपटा कर झण्डेवाला पहुंचा। वहां पहले प्रान्त प्रचारक विश्वनाथ जी मिले। उन्होंने कहा कि पहले ठाकुर जी से मिल लो, बाद में हम बात करेंगे। मैं ठाकुर जी के पास गया। उन्होंने कहा कि पंजाब की लड़ाई हिन्दू सिक्ख की नहीं है, वास्तव में यह पाकिस्तान द्वारा छेड़ा गया गुरिल्ला युद्ध है। पंजाब में हिन्दी-सिक्खों में नफरत पैदा करने की पाकिस्तान योजना कर रहा है। इसको सफल नहीं होने देना है। पंजाबियों में जो इस समय भय का वातावरण बना है, उसे दूर करने की जरूरत है ताकि लोग पलायन न करें। इस जरूरत को पूरा करने के लिए सब तरफ नजर दौड़ाने पर हमारा ध्यान आपकी तरफ गया है। क्या आप यह काम करने के लिए तैयार है? काम क्या होगा, कैसे-कैसे करना होगा, इसकी पूरी योजना उन्होंने मुझे बतायी मैंने हां कर दी। फिर उन्होंने मुझसे पूछा– ''आप को इस का रिवार्ड (पुरस्कार) पता है? मैंने कहा – ''हां, मौत।'' ठाकुर जी भावुक हो उठे। उनकी आंखो से आंसू छलक आए। आंसू पौंछते हुए बोले - ''इससे ज्यादा हम दे भी नहीं सकते।'

जब गोली चलने की नौबत आने लगे तो मुझे बता देना। पहली गोली मैं खाऊंगा दूसरी तुम्हारे उपर चलेगी। बाकी रही परिवार की बात, तो क्या परिवार का सोच कर कभी कोई काम हुआ है? जो और परिवारों का होगा, वह तुम्हारे परिवार का भी होगा। कायरता को छोड़ो, और डट कर सामने आओ।'' आखिर बलदेव चावला भी तैयार हो गया।

''इसके बाद उन्होंने मुझे भाऊराव देवरस जी से मिलाया। तदुपरान्त ठाकुर जी व विश्वनाथ जी ने मेरे साथ विस्तार से बात की और मुझे पंजाब में राष्ट्रीय सुरक्षा समिति के संयोजक की जिम्मेवारी दे दी। अध्यक्ष डॉ. बलदेव चावला जी को बनाया गया। इसके उपरान्त ठाकुर जी के मार्गदर्शन में पंजाब में हिन्दू-सिक्ख भाईचारे का निर्माण करने व जन-साधारण में आत्म-विश्वास पैदा करने के लिए जो आन्दोलन चला वह इतिहास का एक महत्वपूर्ण पृष्ठ बन गया।''

दिनांक १७-१२-२००५ के वार्तालाप में ठाकुर जी ने मुझे आगे बताया – ''राष्ट्रीय सुरक्षा समिति का गठन हो जाने के बाद अमृतसर में दुर्ग्याणा मन्दिर के पास उसका कार्यालय खोजा गया। उसी दिन कुछ विरोधियों ने कार्यालय पर हमला कर दिया। वे लगभग ४०-५० थे। उनमें से कुछ के पास बंदूके भी थी। कार्यालय में उस समय जयकृष्ण तथा एक और स्वयंसेवक थे। हमलावरों ने दोनों को जबरदस्ती बाहर निकाल दिया, सामान उठा कर बाहर फेंक दिया और कार्यालय पर कब्जा कर

लिया। मैं उस दिन अमृतसर ही था। मुझे जब वहां के अधिकारियों ने बताया तो मैंने उन्हें कहा कि वहां चार दमदार लोगों को भेजो, वे उनका सामान उठा कर फैंक दें और उस पर अपना कब्जा कर ले। ध्यान रहे, चार ही भेजना ज्यादा नहीं, क्योंकि काम हमेशा चार-पांच लोग ही करते हैं। अगले दिन सुबह गोलबाग में पहले से ही नगर की शाखाओं को एकत्रीकरण रखा हुआ था। शाखा के बाद वहां से कुछ स्वयंसेवक समिति के कार्यालय गए, उसका ताला तोड़ा उनका सामन उठा कर बाहर सड़क पर फेंक दिया और कार्यालय को अपने अधिकार में ले लिया। इसके बाद गुण्डा तत्वों की हिम्मत वहां हमला करने की नहीं हुई।

२५ जुलाई २००३ को केशव कुंज में मेरा ठाकुर जी से एक घंटे का वार्तालाप हुआ जिसमें उन्होंने बताया था कि – ''डेढ़ दो वर्ष पहले मेरे पास एक पत्र आया था। वह मध्यप्रदेश में वनवासी क्षेत्र में काम करने वाले डा. कृष्ण कुमार अरोड़ा ने लिखा था। डॉ. कृष्णकुमार के पिताजी डॉ. संतराम १९१९ में अमृतसर कांग्रेस के कोषाध्यक्ष थे और गोलीकाण्ड के समय वे भी जलियांवाला बाग में उपस्थित थे। डॉ. कृष्ण कुमार ने अपने पत्र में जलियांवाला कांड के बारे में लिखा है कि वहां वह सभा अंग्रेज डी.सी. ने ही कांग्रेस के नाम से रखवाई थी और इसकी सूचना के लिए शहर में मुनादी भी उसी ने करवाई थी। कांग्रेस के पदाधिकारियों को तो पता भी नहीं था। मुनादी सुनने के बाद डॉ. संतराम तथा कांग्रेस के मन्त्री रूपलाल पुरी भी सभा में चले गए, लोगों को बताने के लिए कि यह सभा कांग्रेस ने नहीं अपितु अंग्रेजों ने ही रखी है और यहां कुछ भी अनहोनी हो सकती है, इसलिए आप लोग यहां से चले जाएं। वे उस सभा में अपनी बात कह पाते इससे पहले ही वहां गोलियां चलनी शुरू हो गई। एक गोली रूपलाल पुरी के भी पैर में लगी थी।

उन्होंने आगे बताया – ''डॉ. सन्तराम का घर ढाब खटीकां में था और कटड़ा दूलों में उनकी डाक्टरी की दुकान थी। उनके चार पुत्र थे – ब्रह्मदेव, देवराज, सत्यदेव और कृष्णकुमार। डॉ. सतराम पहले कांग्रेसी थे बाद में वे कांग्रेस छोड़ हिन्दू सभा में चले गए। बाबा साहब आप्टे जब पहली बार अमृतसर गए तो उन्हीं के यहां गए थे। अपने छोटे बेटे कृष्णकुमार को संतराम जी ने ही प्रेरित किया कि वह अपनी डाक्टरी का पेशा शहर की बजाए वनवासी क्षेत्र में शुरू करे। मैंने ठाकुरजी को कहा कि अगर वह पत्र आपके पास हो तो, मैं उसे अवश्य ही देखना चाहूंगा। उन्होंने कहा कि ठीक है मैं उसे ढूंढ कर रखूंगा और लगभग एक महीने के बाद मैं फिर उनके पास गया। तब वे आप्टे भवन में अपने कार्यालय में बैठे थे। मेज पर कुछ फाइलें रखी थी। अलमारी में से कुछ और फाइलें निकालकर उन्होंने वह पत्र मुझे दिया। ठाकुर जी ने पत्र मुझे देते हुए कहा कि इसे पढ़ो और उसके ऊपर एक अच्छा लेख लिख कर पाञ्चजन्य में दो, ताकि लोगों को असलियत का पता चले।

मैं वह पत्र घर ले गया और उसे दो-तीन बार पढ़ा। उस पत्र में जो बातें लिखी थीं, वे वास्तव में रूपलाल पुरी जी ने डॉ. कृष्णकुमार को बतायी थी संतराम जी की मृत्यु के बाद अपने गहरे मित्र संतराम के संस्मरणों के रूप में। क्योंकि वह बाते स्वयं रूपलाल पुरी जी के मुख से निकली जो उस

समय कांग्रेस के मन्त्री थे और स्वयं भुक्त भोगी थे, अतः निश्चय ही ये इतिहास का दस्तावेज हैं। अब मेरी खोज का विषय यह है कि अंग्रेजों ने अनेक लोगों को इस स्थान (जलियांवाला बाग) पर इकट्ठा करके उन पर गोलियां चलाकर भीषण नरसंहार करने की योजना क्यों बनाई। कई तथ्य मेरे सामने आ चुके है, लेकिन अभी कुछ और की भी जरूरत है। तब जाकर यह पुस्तक का रूप लेगी, जोकि अभी तक के स्थापित तथ्यों के विपरीत होगी। तभी मेरा ठाकुर जी को दिया हुआ वचन पूर्ण होगा।

इतिहास पुरुष

एक बार ठाकुर जी ने मुझे एक श्लोक कागज पर लिखा हुआ दिखाया। वह श्लोक था –

इतिहासः कुशाभासः सूकरास्यो महोदरः।
अक्षसूत्रां घटं विभ्रत्पंकजाभरणान्वितः।।

इस श्लोक के बाद उन्होंने एक दूसरे कागज पर कम्प्यूटर से निकला हुआ एक चित्र दिखाया, जिसमें ऊपरलिखित श्लोक को चित्रित किया गया था। इतिहास पुरुष के इस चित्र की कलात्मकता और सुन्दरता श्लोक की सुन्दरता के अनुरूप नहीं थी। ठाकुर जी ने मुझे इसे किसी योग्य कलाकार से चित्रित करवाने का आग्रह किया। मेरे एक परिचित मित्र जितेन हजारिका जो भारतीय सेना से कर्नल के पद से सेवामुक्त होकर नोएडा में ही रहते थे और वह कला व संस्कृति के अच्छे जानकार थे। मुझे विश्वास था कि वो इसे अच्छी तरह चित्रांकित कर सकेंगे। मैं हजारिका जी के पास गया। पहले तो उन्हें ठाकुर जी के बारे में बताया और यह भी बताया कि वे २१ वर्ष आसाम में ही रहे हैं। यह सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुए। फिर मैंने वह श्लोक उनको दिया और उसे चित्रित करने को उन्हें आग्रह किया। फिर इसके एक-एक शब्द और उसके भाव पर हमारी काफी चर्चा हुई। अन्त में उन्होंने कहा कि मैं इसे करूंगा और यह मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी। इसके बाद भी दो-तीन बार मैं उनके घर गया और हर बार एक-एक बिन्दु पर हमारी चर्चा होती रही। पृथ्वी के जन्म से लेकर बाराह अवतार, अमृत-मंथन और अमृत कलश, कालगणना, क्षीर सागर, कमल-पत्र, महाकाल, विष्णु, कौस्तुभ मणि, कण्ठमाला, देव, देवत्व आदि विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श होता रहा। हजारिका जी का कहना था कि जब तक विषय पूरी तरह से मानस-पटल पर बैठ न जाए तब तक उसे चित्रांकित करना उचित नहीं होता। इसलिए यह चर्चा जरूरी है।

ठाकुर जी को मैंने यह बता ही दिया था। अतः एक दिन ठाकुर जी ने कहा कि मैं भी हजरिका जी से मिलना चाहता हूं। मैंने कहा कि ठीक है, किसी दिन मैं उनको अपके पास ले आउंगा। ठाकुर जी बोले – नहीं, मैं उनके घर जाउंगा। दिन तय हो गया। ठाकुर जी झण्डेवाला से बस द्वारा नोएडा पहुंचे। बस से उन्हें लेकर मैं स्कूटर से हजारिका जी के यहां ले गया। ठाकुर जी उनसे असमी में ही बात करते रहे। इससे वे दोनो पति-पत्नी ठाकुर जी के भक्त ही बन गए। इसके कुछ दिन बाद उन्होंने इतिहास पुरुष का चित्र भी बना दिया, जो सबको पसन्द आया और अब उसका प्रयोग अनेक स्थानों पर होने लगा है।

दिल्ली झण्डेवाला के आप्टे भवन में दिल्ली प्रान्त की इतिहास संकलन समिति के कार्यक्रम में

सर्वप्रथम वह चित्र लाया गया। उस कार्यक्रम में तत्कालीन सरसंघचालक श्री सुदर्शन जी भी विद्यमान थे। ठाकुर जी ने सुदर्शन जी द्वारा हजरिका जी को शाल व श्रीफल दिलवा कर उस कार्यक्रम में सम्मानित किया।

इन्द्रजीत कपूर

ठाकुर जी ने बताया था कि मैं जब अमृतसर में था, तो वहां एक स्वयंसेवक था इन्द्रजीत कपूर। वह लाहौर के प्रसिद्ध हिन्दू नेता डॉ. गोकुलचन्द नारंग के परिवार में से था। वह बहुत निष्ठावान स्वयंसेवक था। एक बार उसके घर वालों ने उसे शाखा में जाना मना कर दिया और एक कमरे में बन्द कर दिया। वह कमरे में ही प्रार्थना करने लगा। मेरे से उसका बहुत लगाव था। तैं तो १९४९ में असम चला गया और उससे फिर मिलना नहीं हुआ। १९७१ में मैं जब पंजाब आया तो तब पता चला कि वह अब मुम्बई में है। एक बार मैं मुम्बई में बैठक के लिए गया तो उससे मिला। उसका मेरे प्रति श्रद्धाभाव वैसा ही था। दस बारह साल बीत गए। उसने वहां के संघचालक से एक बार पूछा कि रामसिंह नाम के कोई प्रचारक हैं और दस-बारह साल पहले वे मुझे यहां मिलने भी आए थे, वे अब भी है क्या? उन संघचालक ने मोरोपन्त पिंगलें जी से पूछा। मोरोपन्त जी ने कहा, हां। मोरोपन्त जी ने मुझे बताया कि पंजाब का कोई स्वयंसेवक मुम्बई में है वह आप को बहुत याद करता है। किन्तु मोरोपन्त जी को उसका नाम नहीं पता था। मैंने कहा कि पंजाब के तो कई स्वयंसेवक मुम्बई में हैं, कौन याद कर रहा है उसका नाम पता लगे तभी तो उसे मिला जा सकता है। इस बीच उसके तीन-चार फोन उन संघचालक जी को आ गए। संघचालक जी ने उसका नाम बताया– इन्द्रजीत कपूर। यह वही था अमृतसर का स्वयंसेवक। संघचालक जी ने बताया कि वह आपको कुछ देना चाहता है।

पृथ्वी के जन्म से लेकर बाराह अवतार, अमृत-मंथन और अमृत कलश, कालगणना, क्षीर सागर, कमल-पत्र, महाकाल, विष्णु, कौस्तुभ मणि, कण्ठमाला, देव, देवत्व आदि विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श होता रहा।

उन्हीं दिनों मैं और चमनलाल जी मुम्बई गए। वहां शंकर तत्ववादी का एक होटल में विदाई कार्यक्रम था। वे प्रवासी भारतीयों में संघ कार्य के निमित विदेश जा रहे थे। उन संघचालक जी ने बताया कि इन्द्रजीत कपूर भी उस कार्यक्रम में आने वाले हैं। अतः आप भी वहां चलिए। मिलना भी हो जाएगा, बातचीत भी। हम वहां गए। इन्द्रजीत मिले और बातचीत हुई। इन्द्रजीत ने कहा – ''रामसिंह जी, मैं आपको कुछ देना चाहता हूं। बताइए आपको क्या चाहिए। मैंने कहा – ''मैं तो प्रचारक हूं, मुझे तो कुछ भी नहीं चाहिए। हां, यदि आप कुछ करना ही चाहते हैं तो बाबासाहब आप्टे स्मारक समिति इतिहास संकलन का काम कर रही है, उसके अन्तर्गत हमारे दो शोध केन्द्र बनने वाले हैं, उनके लिए आप दे सकते हैं। अन्त में इन्द्रजीत बोले – ''कल हमारे घर में कुछ पारिवारिक कार्यक्रम है। इसलिए आप कल घर जरूर पधारें। भोजन भी वहीं होगा।

अगले दिन हम दोनों उनके यहां चले गए तो उन्होंने मुझे एक लिफाफे में ५ लाख रुपये का

चैक दिया। कुछ समय बाद मैं व चमनलाल जी फिर किसी बैठक निमित मुम्बई गए। जाने से पहले इन्द्रजीत को भी सूचित कर दिया था। उन्होंने देखा जब हम मुम्बई पहुंचे तो इन्द्रजीत कपूर तो कामवश इंग्लैंड चले गए थे लेकिन अपनी पत्नी व बेटे के हाथ पांच लाख का एक और चैक हमें देने के लिए दे गए थे। तो उन्होंने हमें अपने घर ले जाकर दिया। तभी इंग्लैण्ड से इन्द्रजीत का फोन आ गया और पूछा कि चैक मिल गया? मैंने कहा कि चैक तो मिल गया, लेकिन पैसा महत्वहीन है, मैं चाहता हूं कि आप इतिहास संकलन के काम को अपना समझें और उससे जुड़े। माया तो आनी-जानी है। आप हमीरपुर के शोध कन्द्र को अपना लें।

यह हमीरपुर को नेरी में शोध केन्द्र उसी का बनवाया हुआ है। उसके लिए उसने ६५ लाख रूपया दिया है। उसका (इन्द्रजीत का) मुम्बई में घर है – कपूर भवन। वर्ष में चार पांच सौ करोड़ का वह निर्यात (Export) करता है। वह कहता है कि मुझे नाम नहीं चाहिए, योग्य काम में पैसा लगना चाहिए। मैं तो बस खजांची हूं। अब हमारा पूरा ध्यान हमीरपुर पर है। २१ मार्च को उसका उद्‌घाटन सरकार्यवाह मोहन भागवत जी द्वारा होगा। आपको भी उस दिन वहां रहना है। उनका शिमला का कार्यक्रम है। वहीं से हमीरपुर भी हो जाएगा। पहले यह सोचा था कि उद्‌घाटन के साथ ही पूरे दिन का एक सेमिनार रखें। लेकिन अब सरकार्यवाह जी का कार्यक्रम बन जाने से सेमिनार को आगे मई में करेंगे। उनका कहना था कि बाबासाहब आपटे स्मारक समिति का काम वैचारिक है। इसलिए उसकी विभिन्न क्षेत्रों में मासिक गोष्ठियों होती रहनी चाहिए। गोष्ठी का विषय ऐतिहासिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक यानी किसी भी प्रकार का हो सकता है। हमने हर प्रकार के विषय के लोगों को जोड़ना है। ठाकुर जी अध्ययन बहुत करते थे। अध्ययन करते हुए ही उन्हें कालयात्रा नामक पुस्तक से उक्त ''इतिहास पुरुष'' वाला श्लोक मिला था। उसे उन्होंने प्रचारित ही नहीं स्थापित भी कर दिया।

अखण्ड भारत स्मारक

इसी तरह एक उनकी इच्छा थी ''अखण्ड भारत स्मारक'' बनाने की जिसमें पिछले डेढ़ हजार वर्षों से विदेशी आक्रमणकारियों का प्रतिरोध करने वाले शूरवीरों की स्मृतियों संजो कर रखी जाएं। इस दिशा में थोड़ा का काम शुरू हुआ भी था, लेकिन ठाकुर जी के दिवंगत हो जाने के बाद वह भी वहीं रुक गया। मनाली में वे 'मनुधाम' बनाना चाहते थे। उसे वे कई बार 'मनु शोध संस्थान' भी कहते थे। क्योंकि मनु से ही मानव सृष्टि आरंभ हुई, इसलिए वे विश्व के इतिहास के लेखन के लिए उसे एक प्रेरक स्थल के रूप में स्थापित करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने एक समिति भी बनायी थी और मनाली के आस-पास के प्रमुख लोगों को मनु मन्दिर में एकत्रित कर के उसकी भव्य कल्पना भी उनके सामने रखदी थी।

एफ. १०६ - सैक्टर २७
नोएडा - २०१३०१

अखम में श्री ठाकुर रामसिंह जी

शशिकान्त चौथाईवाले

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य असम में सन् १९४६ में आरंभ हुआ था। गुवाहाटी के श्री केशवदेव बावरी, जो राजस्थान में स्वयंसेवक रहे थे ने दिल्ली के कार्यकर्ताओं को पत्र लिखा था। कुछ दिन बाद नागपुर के श्री दादाराव परमार्थ, श्री कृष्ण पंराजये तथा श्री मनोहर गुर्जर को साथ लेकर दिल्ली से श्री बसन्तराव ओक गुवाहाटी आए। दिनांक २८ सितम्बर को शाखा प्रारंभ हुई। श्री बंसन्तरावजी दिल्ली वापस चले गए। डेढ़ साल के बाद ही महात्मा गांधी जी की हत्या होने पर संघ पर प्रतिबन्ध लगा। श्री दादाराव जी काराबन्दी हुए थे। बाद में हुए सत्याग्रह में ५२ स्वयंसेवक जेल में गए।

सन् १९४९ में प्रतिबन्ध हटने पर श्री दादाराव नागपुर वापस गए। उनके कुछ ही दिन बाद पंजाब से माननीय श्री ठाकुर रामसिंह जी का असम में आगमन हुआ। वे असम के प्रथम प्रान्त प्रचारक थे। भारत विभाजन के पूर्व वर्तमान बांगला देश का पूरा श्रीहट्ट (सिलहट) जिला असम का जिला रहा। वहां श्री मनोहर गुर्जर ने शाखा प्रारंभ की थी। विभाजन के बाद श्रीहट्ट के दो तिहाई अंश में जनमत संग्रह हुआ। उसका फल पाकिस्तान के पक्ष में जाने से वह असम से कट गया। श्री मनोहर गुर्जर असम में वापस आए। आज के मेघालय, मिजोराम तथा नागाराज्य उस समय असम के ही जिले थे। मणिपुर तथा त्रिपुरा में राजा का शासन था। अरुणाचल प्रदेश यह नेफा (North East Frontier Agency) नाम की अलग ईकाई थी, जिस सारे क्षेत्र का दायित्व श्री ठाकुरजी पर ही था। आज का असम, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, मिजोराम नागा राज्य तथा अरुणाचल प्रदेश ये सात राज्य मिल कर पूरे उत्तर पूर्वांचल को संघ की दृष्टि से असम प्रान्त ही कहते थे। संघ ने अभी उत्तर असम, दक्षिण असम, मणिपुर, अरुणाचल और त्रिपुरा ऐसे पांच प्रान्त कार्य की सुविधा के लिए बनाए हैं।

आज का असम, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, मिजोराम नागा राज्य तथा अरुणाचल प्रदेश ये सात राज्य मिल कर पूरे उत्तर पूर्वांचल को संघ की दृष्टि से असम प्रान्त ही कहते थे।

मा. श्री ठाकुर जी के आने के कुछ दिन बाद महाराष्ट्र से श्री मधुकर लिमये, श्री सुधाकर देशपांडे तथा बंगाल से श्री गणेश देव शर्मा ये प्रचारक आए। महाराष्ट्र के ही श्री बसन्त फडणीस, श्री माधव मेहेंदले प्रतिबन्ध के पूर्व ही आये थे। श्री रामसिंह जी ने नई योजना में श्री गणेश देव शर्मा को त्रिपुरा राज्य का दायित्व दिया। अन्य कार्यकर्ता असम में ही रहे।

श्री ठाकुर जी के आने के बाद मानव निर्मित तथा प्राकृतिक विपत्तियों का सामना करना पड़ा था। पाकिस्तान बनने के बाद पूर्व पाकिस्तान से हजारों की संख्या में हिन्दू शरणार्थी असम में आए।

मुसलमान अनुप्रवेशकारी तो पूर्व से ही आ रहे थे। हिन्दुओं की सुरक्षा का प्रश्न था। सरकार ने कुछ सुविधाएं कर दी थीं। संघ का काम भी कम था। उस समय मा. श्री एकनाथ जी रानडे का केन्द्र कोलकाता में था, तथा उन पर पूर्वांचल का भी दायित्व था। उन की प्रेरणा से बंगाल में वास्तुहारा सहायता समिति का गठन हो चुका था। असम में उसकी अलग शाखा नहीं थी। बंगाल के समिति के माध्यम से असम में राहत कार्य चलाने की योजना मा. श्री ठाकुर जी ने बनाई। बंगाल से प्राप्त और यहां पर संग्रह किए अन्न वस्त्रों का शरणार्थियों में वितरण का कार्य स्वयंसेवकों ने किया।

१५ अगस्त सन् १९५० को असम, अरुणाचल में भयावह भूकंप आया था। ब्रह्मपुत्र का पात्र बदल चुका था। जहां छोटे पहाड़ थे वहां नदी बहने लगी और नदी के मुख्य प्रवाह की जगह वालू के मैदान बन गए। बाढ़ में दस से पन्द्रह हजार लोग मृत हुए थे। मा. श्री ठाकुरजी ने तुरन्त भूकंप पीड़ित सहायता समिति का गठन किया और राहत कार्य प्रारंभ किया। डिब्रूगढ़ से संघ के स्वयंसेवक नौका में राहत सामग्री लेकर नदी पार करके जा रहे थे। श्री जगन्नाथ दत, जीवन फुकन, हनुमान सिंघानिया तथा अन्य कार्यकर्ताओं की नौका नदी पार करते समय मुख्य प्रवाह में उलट गई। इस दुर्घटना में श्री हनुमान सिंघानियाजी की मृत्यु हुई। अन्य स्वयंसेवक सुरक्षित निकल गए। हनुमान जी की याद में उनके नाम से डिब्रूगढ़ के एक मुख्य रास्ते का नामकरण हुआ है।

मा. ठाकुर जी का सारा ध्यान अधिकाधिक शाखा बढ़ाने पर केन्द्रित था। गुवाहाटी के श्री कामाख्या राम बरुआ, जो मणिपुर में न्यायाधीश रहे थे, के साथ पूरे प्रान्त का प्रवास कर नौगांव, जोरहाट, शिवसागर, डिब्रूगढ़, तिनसुकिया, तेजपुर धुबड़ी, सिल्चर इंफाल आदि स्थानों के प्रमुख व्यक्तियों से परिचय किया। आगे चल कर इन में से प्रायः सभी संघ से जुड़ गए।

भूकंप और भीषण बाढ़ की तांडव लीला चलते परम पूजनीय श्री गुरुजी प्रथम बार असम में आए। डिब्रूगढ़, सैखोवा, सदिया क्षेत्र के दुर्गम स्थानों पर जाकर पू. श्री गुरुजी ने बाढ़ का निरीक्षण किया, पीड़ितों को सांत्वना दी तथा सब प्रकार से सहायता का आश्वासन दिया। उनके साथ मा. ठाकुर जी और अन्य कार्यकर्ता भी थे।

मा. ठाकुर जी का सारा ध्यान अधिकाधिक शाखा बढ़ाने पर केन्द्रित था। गुवाहाटी के श्री कामाख्या राम बरुआ, जो मणिपुर में न्यायाधीश रहे थे, के साथ पूरे प्रान्त का प्रवास कर नौगांव, जोरहाट, शिवसागर, डिब्रूगढ़, तिनसुकिया, तेजपुर धुबड़ी, सिल्चर इंफाल आदि स्थानों के प्रमुख व्यक्तियों से परिचय किया। आगे चल कर इन में से प्रायः सभी संघ से जुड़ गए। इसी बीच सन १९५२ में गोहत्या बन्द करने का कानून बनाने के लिए संघ ने देश व्यापी आन्दोलन किया। जन सभा, शोभायात्रा के साथ हस्ताक्षर संग्रह अभियान असम में भी हुआ। गुवाहाटी की विशाल शोभायात्रा में नागा पहाड़ से भी लोग आए थे। इसी प्रकार सन् १९५६ में पू. श्री गुरुजी के ५१ वें जन्म दिन के निमित संघ साहित्य के साथ जन संपर्क और श्रद्धानिधि संग्रह भी स्वयंसेवकों ने किया। उसमें चालीस हजार रुपये की राशि संग्रहित हुई थी।

भाषा आन्दोलन

असम में असमिया भाषी जन संख्या के साथ बंगाली भाषी संख्या भी काफी मात्रा में है। पाकिस्तान बनने के बाद बंगला भाषी हिन्दू शरणार्थी बड़ी संख्या में असम में आए थे। इन दोनों समुदायों में पूर्व से ही आपस में अविश्वास और मनमुटाव का वातावरण था। सन् १९६१ में असम सरकार ने राज्य भाषा कानून को पारित किया, जिसमें असमिया भाषा को राज्य भाषा का दर्जा दिया गया। इसको लेकर बंगला भाषियों में बड़ी प्रतिक्रिया हुई थी। विशेष रूप से बराक उपत्यका में बंगला भाषी बहु संख्या में होने के कारण उस क्षेत्र में बंगाली भाषा ही राज्य भाषा हो यह उन की आपसी संघर्ष के साथ खून खराबा भी हुआ। गुवाहाटी, सिलचर समेत कुछ जगह पर पुलिस को गोली चलानी पड़ी। संघर्ष में दोनों समुदायों से लोग मृत हुए। हिन्दुओं में रही इस फूट का पूरा लाभ यहां के बंगला भाषी मुसलमानों ने उठाया। ब्रह्मपुत्र उपत्यका में हमारी मातृभाषा अशम्या (बंगाली में स का उच्चारण श करते है) है ऐसा कह कर बंगला भाषीमुसलमानों ने हिन्दुओं को मारना प्रारंभ किया। रक्त रंजित असम का वह दृश्य था।

प्रधानमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरूजी ने रेडियों पर दिए भाषण में कहा, "My heart goes with the people of Assam." नेहरू जी का यह वाक्य सुन कर जनता भयभीत हुई। केन्द्र सरकार असम को चीन के हाथ सौंप देगी ऐसा मान कर सर्वत्र भगदड़ प्रारंभ हुई। तब तक चीन की सेना अरुणाचल के तवांग, बोमदिला से आगे बढ़ कर तेजपुर से ५० किलोमीटर दूर फुटहिल्स तक आ चुकी थी। अरुणाचल में शरणार्थियों का तांता असम में आने लगा। तेजपुर के जिलाधिकारी, एन.सी.सी. के कमांडर समेत सारी जनता भाग निकली। स्टेट बैंक में रखे हुए पैसे ब्रह्मपुत्र नदी में फेंके। उस समय मा. श्री ठाकुर जी ने कार्यकर्ताओं को सजग होकर अपने ही स्थान में डटकर रहने के लिए कहा।

ऐसी परिस्थिति में मा. श्री ठाकुर जी ने पूरे प्रदेश का प्रवास किया। उन दिनों में यातायात के साधन कम थे। अतः सारा प्रवास मोटर साईकल से ही करते थे। स्थान -स्थान पर असमिया तथा बंगला भाषी स्वयंसेवकों की बैठकें ले कर सभी से आग्रह किया कि किसी भी कीमत पर हिन्दुओं में आपसी संघर्ष नहीं होना चाहिए। असमिया और बंगाली यह भेद भूल कर हिन्दू के नाते रहने में ही असम का हित है। ऐसा देखा गया कि जिन गांवों में संघ की अच्छी शाखा थी और कुछ कार्यकर्ता थे, वहां पूर्ण शान्ति रही। असमिया भाषी स्वयंसेवकों ने बंगला भाषी घरों की रात के समय रक्षा का भी कार्य किया था।

आखिर सरकार ने बराक उपत्यका में बंगला को राज्य भाषा घोषित कर दिया। आश्चर्य की बात है कि जिन मुसलमानों ने उस समय स्वयं को असमिया कहा था, अगली जनगणना में सभी ने बंगाली को ही अपनी मातृभाषा लिखी।

चीन का आक्रमण

सन् १९६२ में भारत पर चीन के आक्रमण का संकट मंडराने लगा था। आखिर दिनांक २० अक्तूबर को चीन की सेना ने अरुणाचल प्रदेश तथा लद्दाख में भारत की सीमा लांघने का समाचार

आया। उत्तर पूर्वांचल में उस का परिणाम होना ही था। केन्द्र की सरकार आक्रमण का मुकाबला करेगी ऐसा सभी सोच रहे थे। ऐसे समय तत्कालीन प्रधानमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरूजी ने रेडियों पर दिए भाषण में कहा, "My heart goes with the people of Assam." नेहरूजी का यह वाक्य सुन कर जनता भयभीत हुई। केन्द्र सरकार असम को चीन के हाथ सौंप देगी ऐसा मान कर सर्वत्र भगदड़ प्रारंभ हुई। तब तक चीन की सेना अरुणाचल के तवांग, बोमदिला से आगे बढ़ कर तेजपुर से ५० किलोमीटर दूर फुटहिल्स तक आ चुकी थी। अरुणाचल में शरणार्थियों का तांता असम में आने लगा। तेजपुर के जिलाधिकारी, एन.सी.सी. के कमांडर समेत सारी जनता भाग निकली। स्टेट बैंक में रखे हुए पैसे ब्रह्मपुत्र नदी में फेंके। उस समय मा. श्री ठाकुर जी ने कार्यकर्ताओं को सजग होकर अपने ही स्थान में डटकर रहने के लिए कहा। जब तेजपुर शहर लगभग खाली हुआ था, संघ के समर्थक एक प्राध्यापक ने अपना गांव छोड़ा नहीं, साथ ही नगर के स्वयंसेवक श्री कानुराम डेका भागे नहीं। कुछ जगहों में उन्होंने अपने घरों पर हरे झंडे भी फहराए थे। मा. श्री ठाकुर जी ने तरुण स्वयंसेवकों से आग्रह किया कि सरकार द्वारा सैनिक प्रशिक्षण में भाग लें और आवश्यक लगा तो शास्त्र का भी शिक्षण लें। नौगांव तिनसुकिया जैसे अरुणाचल की सीमा के निकट नगरों के स्वयंसेवकों ने शरणार्थियों की सहायता का भी काम किया था।

भारत-पाकिस्तान युद्ध १९६५

इस युद्ध में आक्रमण पश्चिम की सीमापर ही होने के कारण पूर्वी सीमा शान्त थी। फिर भी सर्वत्र सतर्कता बरती गई। तत्कालीन प्रधामन्त्री लाल बहादुर शास्त्रीजी के आह्वान पर जनता के साथ स्वयंसेवकों ने भी सोमवार को उपवास था। आरंभ से ही मा. श्री ठाकुरजी का ध्यान शाखाओं के विस्तार पर था। शाखा से प्राप्त कार्यकर्ताओं की योग्यतानुसार आवश्यक होने पर विविध क्षेत्र में देने की उनकी नीति रही थी। उस समय सारे देश में भारतीय जनसंघ का काम आरंभ हुआ था। असम में स्थानीय कुछ लोगों ने काम शुरु किया था। चुनावों में उम्मीदवार भी खड़े हुए थे। सफलता का प्रश्न ही नहीं था। सन् १९६१ के भाषिक दंगे और चीन के आक्रमण के पश्चात् पं. दीनदयाल उपाध्याय के साथ श्री नानाजी देशमुख ने असम का प्रवास किया। उस के बाद ही पहली बार महाराष्ट्र से संघ के दो प्रचारक श्री देवदास आपटे तथा श्री भालचन्द्र देशपांडे असम में आए। बाद में हुए लोकसभा के चुनाव में बरपेटा केन्द्र में कांग्रेस के फखरुद्दीन अली अहमद (जो बाद में राष्ट्रपति हुए थे) को जनसंघ ने जोरदार टककर दी, यद्यपि जनसंघ की पराजय हुई।

विश्व हिन्दू परिषद्

विश्व हिन्दू परिषद् का काम असम में १९६५ में प्रारंभ हुआ। मा. श्री ठाकुर जी के आग्रह के कारण गुवाहाटी के प्रभावी व्यक्ति तथा प्रागज्योतिषपुर महाविद्यालय के प्राचार्य श्री तीर्थनाथ शर्मा प्रान्त के अध्यक्ष बने। उनके ही नेतृत्व में परिषद् का कार्य बढ़ा। कुछ दिन बाद ही मा. ठाकुर जी ने यहां के प्रचारक श्री सुदर्शन शर्मा को संघटन मन्त्री का दायित्व दिया। सन् १९६७ में गुवाहाटी और सन् १९७० में जोरहाट में पूर्वांचल महासम्मेलन सम्पन्न हुए थे। सम्मेलनों में असम के वैष्णव सन्त

श्रीमान शंकरदेव द्वारा स्थापित सत्रों (मठों) के सत्राधिकार तथा नागा रानी गाईडिन्ल्यु विशेष रूप से उपस्थित थे। उन सम्मेलनों से स्थान-स्थान पर नए व्यक्ति संघ को भी प्राप्त हुए।

भारतीय मजदूर संघ

असम के चाय के बागानों में शाखाएं कम थी। वहां ओड़िसा, बिहार, झारखंड से बड़ी संख्या में आये श्रमिक काम करते थे, जिनको ईसाई लोग मतातरित करते थे। एक मात्र कांग्रेस की श्रमिक युनियन (I.N.T.C.) का काम था। काम की आवश्यकता को देख कर मा. ठाकुर जी ने असम से ही निकले एक प्रचारक श्री ब्रजेन्द्र प्रसाद को भारतीय मजदूर संघ का दायित्व दिया। संगठन मन्त्री बनकर उन्होंने प्रथम चार बागानों में काम प्रारंभ किया। कुछ साल बाद भारतीय मजदूर संघ सब से बड़ा मजदूर संघटन बना। बाद में अन्य उद्योगों में काम शुरू हुआ।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्

सन् १९६० के बाद अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का कार्य प्रारंभ हुआ था। काम को गति देने के लिए सन् १९६५ में मा. श्री ठाकुर जी ने श्री हरि भाऊ मिरासदास जो एक जिले के प्रचारक थे को अ.भा. वि. प. का दायित्व दिया। सन् १९६६ में श्रीपद्मनाभ आचार्य जी ने Student's Experience In interstate living SEIL, यह योजना आरंभ की, जिसमें पूर्वांचल के छात्रों को अन्य राज्यों में ले जा कर उनकी शिक्षा का प्रबन्ध किया था। उसी के फलस्वरूप आज अरुणाचल, मिजोराम मणिपुर के छात्र संस्कारित होकर काम कर रहे हैं।

मा. ठाकुर जी ने विशेष प्रयास किए। सन् १९६० में असमिया भाषा में आलोक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। नौगांव नगर के संघचालक श्री राधिक मोहन देव गोस्वामी जो अच्छे वकील तथा साहित्यिक थे, प्रथम संपादक बने। लगातार २५ साल तक बिना वेतन संपादन करने वालों की श्रेणी में उनका नाम लिखा जाएगा।

आलोक साप्ताहिक

संघ विचार को सामान्य जनता के पास ले जाने के लिए मा. ठाकुर जी ने विशेष प्रयास किए। सन् १९६० में असमिया भाषा में आलोक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। नौगांव नगर के संघचालक श्री राधिक मोहन देव गोस्वामी जो अच्छे वकील तथा साहित्यिक थे, प्रथम संपादक बने। लगातार २५ साल तक बिना वेतन संपादन करने वालों की श्रेणी में उनका नाम लिखा जाएगा। साप्ताहिक चलाने के लिए त्रिपुरा के प्रचारक श्री गणेश देव शर्मा को उस दायित्व से मुक्त कर के आलोक पत्रिका का काम सौंपा। असम के भाषिक संघर्ष के समय हिन्दुओं में सौहार्द्र कायम रखने में तथा पाकिस्तान, बांगलादेश से आए घूसपैठियों के सुप्त आक्रमण के विषय में जनता को जागृत करने में आलोक पत्रिका का विशेष योगदान रहा है।

आह्वानों का सामना

मा. ठाकुर रामसिंह जी को असम आने के पश्चात् उन्हें अनेक आह्वानों का सामना करना पड़ा था। हर समय साहस का परिचय देते हुए परिस्थिति पर विजय पाने में वे समर्थ रहे है। एक दो

प्रसंगों का यहां उल्लेख किया है।

१. सन् १९५२ में प. पू. श्री गुरु जी का असम में प्रथम प्रवास था। उस समय समाजवादी और कम्युनिस्ट दलों ने पू. श्री गुरुजी के आने पर उनको काले झंडे दिखा कर विरोध करने का कार्यक्रम रखा था। पू. गुरुजी के गुवाहाटी में आगमन के समय मा. श्री ठाकुरजी के कहने पर १५-२० स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश पहन कर हवाई अड्डे पर चले गए। कम्युनिस्ट कार्यकर्ता भी वहां थे। किन्तु गणवेशधारी स्वयंसेवकों को देखकर किसी ने विरोध का साहस किया नहीं। उसी प्रकार कार्यक्रम के स्थान पर भी प्रदर्शन नहीं कर सके।

डिब्रूगढ़ के कार्यक्रम में भी समाजवादी दल के लोग प्रदर्शन करने वाले थे। मा. ठाकुरजी के साथ वहां के कार्यकर्ताओं ने पुलिस को सतर्क करते हुए कहा कि प्रदर्शनकारी संघस्थान के बाहर है तब तक हमकुछ नहीं करेंगे। किन्तु संघस्थान की सीमा के अन्दर आने से हमारी लाठी चलेगी। अतः पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को दूर से ही खदेड़ा।

२. महात्मा गांधी जी की हत्या के समय असम में अत्यन्त थोड़ा काम था। हत्या में संघ का हाथ है ऐसा कांग्रेस ने सतत प्रचार किया था। यहां की जनता भी ऐसा ही समझती थी। सन् १९५५ के आसपास अष्टम श्रेणी के इतिहास की पुस्तक में भी छपा था कि गांधीजी की हत्या में संघ का हाथ है और नाथुराम गोडसे संघ का स्वयंसेवक था। मा. श्री ठाकुरजी ने अदालत में जाने का निर्णय लिया। गुवाहाटी के वकील श्री जय चौधरी से मिल कर पुस्तक के लेखक श्री विरिंची बरुआ तथा प्रकाशक, मुद्रक सहित सभी को वकील की नोटिस भिजवाई। कुछ दिन तक पत्र व्यवहार चलता रहा। बाद में अन्तिम चिठी भेजकर उन सभी को कड़े शब्दों में लिखा कि क्षमा नहीं मांगने से कानून का रास्ता लेंगे। आठ दिन के बाद सभी ने बिना शर्त क्षमा मांगी। माफी पत्र समाचार पत्रों में भी प्रकाशित किया गया तथा छपी गई सारी पुस्तकों में संशोधन की व्यवस्था की। उस के पश्चात् संघ ने सारी घटना तथा पत्र व्यवहार को एकत्र कर Truth triumphs नाम की पुस्तिका प्रकाशित कर उसकी दस हजार प्रतियां वितरित की थी। उससे शिक्षित लोगों का यह भ्रम दूर करने में सहायता मिली।

सन् १९५५ के आसपास अष्टम श्रेणी के इतिहास की पुस्तक में भी छपा था कि गांधीजी की हत्या में संघ का हाथ है और नाथुराम गोडसे संघ का स्वयंसेवक था। मा. श्री ठाकुरजी ने अदालत में जाने का निर्णय लिया। गुवाहाटी के वकील श्री जय चौधरी से मिल कर पुस्तक के लेखक श्री विरिंची बरुआ तथा प्रकाशक, मुद्रक सहित सभी को वकील की नोटिस भिजवाई। कुछ दिन तक पत्र व्यवहार चलता रहा। बाद में अन्तिम चिठी भेजकर उन सभी को कड़े शब्दों में लिखा कि क्षमा नहीं मांगने से कानून का रास्ता लेंगे। आठ दिन के बाद सभी ने बिना शर्त क्षमा मांगी। माफी पत्र समाचार पत्रों में भी प्रकाशित किया गया तथा छपी गई सारी पुस्तकों में संशोधन की व्यवस्था की।

३. एक बार गुवाहाटी विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र विभाग में संघ पर एक संगोष्ठी थी। उसमें मा. ठाकुर जी भी दर्शक थे। संगोष्ठी में एक सदस्य ने अपने वक्तव्य में कहा, "Hindu

Rashtra is a bogus concept. Who says this is Hindu Rashtra?'' पीछे बैठे श्री ठाकुर जी उठ कर सामने आए और सभापति से अनुमति लेकर सामने खड़े हो कर बोलने लगे। पूर्व वक्ता के विचारों का जोरदार खंडन किया। स्वयं इतिहास विषय में स्नातकोतर परीक्षा उतीर्ण है ऐसा बताकर इतिहास के अनेक सही उदाहरणों सहित हिन्दू राष्ट्र की सत्यता को स्पष्ट किया। सभी दर्शक उनकी बात शान्ति से सुन रहे थे। दूसरे ही दिन असमिया भाषा के दो साहित्यिकार ठाकुर जी से मिलने कार्यालय में आए। उनके अध्ययन पर आनन्द व्यक्त किया। बाद में वे दोनों संघ के समर्थक बने।

सन् १९७१ में मा. ठाकुरजी का पंजाब में स्थानान्तरण हुआ। एक बार पूरे प्रदेश का प्रवास कर तथा सभी कार्यकर्ताओं से मिल कर वे नये दायित्व को निभाने पंजाब गए। इस के पश्चात् इतिहास संकलन योजना के काम से वे असम में आते रहे, आज भी असम में मा. ठाकुर जी के साथ जिन कार्यकर्ताओं ने काम किया है वे सभी मा. ठाकुर जी के गुणों को याद कर के आदरपूर्वक भावुक हो जाते हैं।

केशव निकेतन, सुरेन्द्र धर लेन,
अबिका पट्टी, सिल्चर, आसाम

भारत का इतिहास पराजय का नहीं सतत् संघर्ष का है

डॉ. राकेश कुमार शर्मा

ठाकुर रामसिंह जी इतिहास शास्त्र के मूर्धन्य विद्वान थे। लाहौर के एफ.सी. कॉलेज से उन्होंने इतिहास विषय में सन् १९४२ में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। कालेज के प्रधानाचार्य ने उनसे उसी कॉलेज में इतिहास विषय के प्राध्यापक के नाते पढ़ाने का प्रस्ताव रखा जिसे ठाकुर जी ने विनम्र भाव से ठुकरा दिया था। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्णकालिक प्रचारक बन गए। इतिहास तो उनका प्रिय विषय था ही पर उसके साथ ही वे हिन्दू समाज के संगठन तन्त्र की ओर अधिक सक्रियता से मुड़ गए थे। भारत में पढ़ाए जा रहे अंग्रेजों द्वारा निर्देशित असत्य इतिहास पर सदैव तथ्य सहित अपने विचार व्यक्त करते थे। इसके लिए वह सदैव राष्ट्रवादी इतिहासकारों से सम्बन्ध बनाए रखते थे। साम्यवादी विचारधारा द्वारा फैलाए जाने वाले असत्य विभ्रम से भी वे उद्धेलित रहते थे। उनकी इस प्रतिभा को देखकर संगठन ने उन्हें सन् १९८८ में अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना का कार्य सौंप दिया।

वीर योद्धा पृथ्वी राज चौहान, महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप, असम के लाचित बड़फूकन, छत्रपति शिवाजी महाराज, सन्त गुरु नानक देव, गुरु गोविन्द सिंह, बालक वीर हकीकत राय, १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम की नायिका झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, हरिसिंह नलवा, रामसिंह पठानिया, जनरल जोरावर सिंह, भगत सिंह, सुखदेव राजगुरु के बलिदान, वैचारिक क्रान्ति को धार देने वाले स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्दों आदि असख्ंय महापुरुषों की संघर्ष गाथा भारतीय स्वाभिमान की जीवन्त ऊर्जा है।

ठाकुर जी का मानना था कि सम्पूर्ण भारत कभी भी विदेशियों के अधीन नहीं रहा है। भारत का इतिहास पराजय का नहीं सतत् संघर्ष का रहा है। विदेशियों द्वारा रचित षड्यन्त्र के तहत भारतीय इतिहासकार भी उनके अनुगामी हो गए। भारत की इतिहास परम्परा वैदिक काल से ही प्रांरभ होती है। उसे इन उपनिवेशीवादी मानसिकता के इतिहासकारों ने अनैतिहासिक काल में डाल दिया और भारत के महाभारत काल को भी भारत के इतिहास अध्ययन परम्परा से बाहर कर दिया। ठाकुर जी ने कहा कि पश्चिमी जानबूझ कर हिन्दू समाज को सदा हारने वाले समाज की छवि के रूप में खड़ा करने का अपराध किया है, उसका समाधान भारत के सत्य इतिहास अन्वेषण से ही संभव है। उन्होंने भारत के इतिहास के सत्य अन्वेषण की चुनौती को हम स्वीकार किया। विदेशी आक्रमणकारियों ने जब-जब भारत को ललकारा तो भारत के शूरवीर योद्धाओं ने ही नहीं बल्कि भारत का सन्त समाज, समाज सुधारक और भारत का बच्चा-बच्चा तथा नारियों का

योगदान भी अतुलनीय है। वीर योद्धा पृथ्वी राज चौहान, महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप, असम के लाचित बड़फूकन, छत्रपति शिवाजी महाराज, सन्त गुरु नानक देव, गुरु गोविन्द सिंह, बालक वीर हकीकत राय, १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम की नायिका झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, हरिसिंह नलवा, रामसिंह पठानिया, जनरल जोरावर सिंह, भगत सिंह, सुखदेव राजगुरु के बलिदान, वैचारिक क्रान्ति को धार देने वाले स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्दों आदि असख्ंय महापुरुषों की संघर्ष गाथा भारतीय स्वाभिमान की जीवन्त ऊर्जा है। अतः भारतीय इतिहास के महत्त्वपूर्ण तथ्यों को जानबूझ कर छुपाया गया। भारत में इस्लामीकरण और ईसाईकरण के लिए बनाई गई योजनाओं का भारतीय समाज ने डटकर सामना किया। यदि इस आंधी का सामना करने के लिए हिन्दू समाज डटकर खड़ा न होता तो आज सम्पूर्ण भारत इस्लाम के हरे झण्डे के नीचे होता। हिन्दू की जो दशा पाकिस्तान और बंग्लादेश में हुई वही दशा भारत की होती। यह बात सैक्युलर इतिहासकारों की समझ में नहीं आती है। जब हम इस्लाम के उदय और पूरे विश्व को इस्लामीकरण करने की दिशा में बढ़ रहीं विक्राल आंधी को देखते हैं तो उसकी तस्वीर हमारे सामने साफ हो जाती है।

यह हज़ार वर्षी युद्ध हिन्दू-मुस्लिम के बीच देश के गांव-गांव व नगर-नगर की गलियों में लड़ा गया। हिन्दू प्रतिरोध इतना भीषण था कि जहाँ इस्लाम २२५ वर्ष में चीन पहुँच गया वहां उसको दिल्ली में पहुँचने के लिए ५०० वर्ष लगे। बाद में संघर्ष और भी तीव्र हो गया और हिन्दुस्थान से आगे पूर्व की ओर इस्लाम का बढ़ना हिन्दू सैनिक शक्ति ने रोक दिया।

इस्लाम का उदय अरब में छठीं शताब्दी में हुआ। इस्लाम की सेना ने ५० वर्षों की अल्प अवधि में सारे मध्यपूर्व को जीतकर उसके सारे देशों का पूर्णतः इस्लामीकरण कर डाला। इससे मुस्लिम जगत के खलीफा और उनके अनुयायियों का साहस बढ़ा और उन्होंने सैनिक शक्ति के द्वारा सारे विश्व को मुस्लिम बनाने की योजना बनाई। अब उनके द्वारा विस्तारीकरण के लिए योजना बनाई गई। इस इस्लामीकरण के अभियान की योजना के दो पहलू थे। पहला मध्यपूर्व से यूरोप पहुंचना और पूर्व से मुड़कर चीन तक पहुंच कर प्रशान्त महासागर के तट पर पहुंचना। योजना का दूसरा पहलू था हिन्दुस्तान को विजय करते हुए ब्रह्म देश के रास्ते दक्षिण की ओर से प्रशांत महासागर के तटवर्ती देशों को जीतकर इस्लामीकरण की वैश्विक योजना को पूर्ण करना।[1] अतः मध्यपूर्व की विजय के बाद इस्लाम की सेनाएं पूर्वी अफ्रीका को जीतती हुई जिब्राल्टर, माल्टा के रास्ते १०० वर्ष के अन्दर स्पेन पहुँच गई। वहाँ से पूर्व की ओर मुड़कर २२५ वर्ष में चीन पहुँच गई। योजना के दूसरे पहलू को कार्यान्वित करने के लिए हिन्दुस्थान की पश्चिमी सीमा ताशकन्द, यारकंद और बल्ख-बुखारा से संघर्ष शुरू हुआ। ठाकुर जी हमेशा कहा करते थे कि 'यह हज़ार वर्षी युद्ध हिन्दू-मुस्लिम के बीच देश के गांव-गांव व नगर-नगर की गलियों में लड़ा गया। हिन्दू प्रतिरोध इतना भीषण था कि जहाँ इस्लाम २२५ वर्ष में चीन पहुँच गया वहां उसको दिल्ली में पहुँचने के लिए ५०० वर्ष लगे। बाद में संघर्ष और भी तीव्र हो गया और हिन्दुस्थान से आगे पूर्व की ओर इस्लाम का बढ़ना हिन्दू सैनिक शक्ति ने रोक दिया।[2] हिन्दुस्थान के पूर्व के एकमात्र राज्य को विलय कर आगे बढने के

लिए मुगल सुल्तानों ने १७ बार आक्रमण किए, परन्तु असम के हिन्दू वीरों ने असम में इस्लाम के कदम जमने नहीं दिए और उसके आगे प्रशांत महासागर तक पहुँचकर इस्लामीकरण की वैश्विक योजना को पूर्णतः विफल कर दिया। इस प्रकार विश्व की मानवता पर आए इस्लाम के संकट का निराकरण हिन्दू क्षात्र तेज के अतुलनीय शौर्य के द्वारा संभव हो सका। इसके लिए सारा विश्व भारत का ऋणी है। एक हजार वर्षीय हिन्दु-मुस्लिम संघर्ष में हिन्दुओं ने जमकर प्रतिरोध किया। सर्वप्रथम जब मुहम्मद-विन-कासिम ने ७१२ ई. में सिन्ध पर आक्रमण किया तो वहां के राजा दाहिर ने उसे कड़ी चुनौती दी। राजा दाहिर की पराजय का बदला उसकी दोनों पुत्रियों ने मुहम्मद-विन-कासिम का अन्त कर के लिया। जिसका विवरण इस प्रकार है– 'सूर्यदेवी और परमल देवी राजा दाहिर की दो कन्याओं को मुहम्मद-विन-कासिम ने खलीफा को भेंट किया। खलीफा ने सूर्यदेवी को चुना परन्तु उसने अपनी पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए खलीफा से यह बात कही कि मुहम्मद-विन-कासिम ने उन्हें भेजने से पूर्व उसके सतीत्व नष्ट दिया है। यह बात सुनकर खलीफा सुलेमान ने क्रोधावेश में मुहम्मद-विन-कासिम उसे ७१५ ई. में प्राणदण्ड दे दिया गया।[३] इस घटना का विवरण मुस्लिम इतिहासकारों ने छुपाया है।

महमूद गजनवी ने १००० से १०२७ई. तक १७ बार आक्रमण किए। इन आक्रमण के समय हिन्दुओं ने डटकर सामना किया। महमूद गजनवी का १००१ ई. में पंजाब के शासक जयपाल, १००४ में भाटिया के शासक बीजी राय, १००८ ई. में पंजाब के शासक आनन्द पाल, १००६ ई. में कांगड़ा (नगरकोट), १००६ ई. में नारायणपुर व राजस्थान, १०१३ ई. में थानेश्वर, १०१८ में कन्नौज व मथुरा, १०१६ में कालिंजर व १०२५ में सोमनाथ (गुजरात) की जनता ने प्रतिरोध किया। १०२७ ई. में मुल्तान के जाटों ने कड़ी चुनौती दी। मुहम्मद गौरी को पृथ्वी राज चौहान ने तराईंन के पहले युद्ध में (११६१ ई.) बुरी तरह पराजित किया लेकिन लेखकों द्वारा इस घटना का संक्षिप्त वर्णन किया गया जबकि तराईन का दूसरे युद्ध में पृथ्वी राज चौहान की पराजय की घटना को महिमामंडित किया गया।

इस क्रम में मुहम्मद गौरी के सेनापति बख्तयार खलजी जिसने नालन्दा व विक्रमशिला विश्वविद्यालयों को जलाया था, उसकी योद्धा के नाते बहुत प्रशंसा की है परन्तु उसका अन्त कैसे हुआ, कहीं पर भी वर्णन नहीं किया गया। उसे १२१० में असम के हिन्दु राजा पृथु द्वारा बह्मपुत्र नदी के तट पर कामाख्या जिले में सेना सहित पराजित किया। वह युद्ध में मारा गया, उसकी कब्र गोवहाटी में बनी है। मीरजुमला व काला पहाड़ भी असम में लड़ते हुए मारे गए थे। औरंगजेब के सेनापति राजा रामसिंह को असम के सेनापति लाचित बड़फूकन ने १६७१ में बुरी तरह पराजित किया। वह ५ वर्ष तक बंगाल में रहकर असम पर आक्रमण की योजना बनाता रहा परन्तु सफल नहीं हुआ। राजपूताना के वीर राजपूत योद्धाओं, मेवाड़ के सिसोदियों व जोधपुर में राठौरों ने मिलकर जहांगीर को युद्ध में कई बार पराजित किया।[४] इस प्रकार की बहुत सी घटनाएं है जिनका मुस्लिम लेखकों ने छुपाने का प्रयास किया है। १२०६ ई. से १५२६ ई. तक दिल्ली सल्तनत कालखण्ड में समय-समय पर मुस्लिम सुलतानों

का कड़ा प्रतिरोध हुआ। १५२७ ई. में बाबर को राणा सांगा ने खनवा की लड़ाई व १५२८ ई. में मेदनी राव ने चन्देरी की लड़ाई में कड़ी चुनौती दी। १५७६ ई. में महाराणा प्रताप ने मुगल शासक अकबर से कड़ा मुकाबला किया व जीवनपर्यन्त अधीनता स्वीकार नहीं की। छत्रपति शिवाजी महाराज के द्वारा औरंगजेब के शासनकाल में महाराष्ट्र में मराठा स्वतन्त्र हिन्दूशाही राज्य की स्थापना की। सिखों के दसवें गुरु गुरु गोविन्द सिंह ने १३ अप्रैल १६९९ को खालसा पंथ की स्थापना करके सिखों को सैनिक कौम के रूप में स्थापित किया। १७६१ में पानीपन की तीसरी लड़ाई में मराठा सेनापति सदाशिव राव भाऊ ने अहमद शाह अब्दाली का डटकर मुकाबला किया। १८५७ ई. की क्रान्ति से पूर्व अंग्रेजों को भारत में ४० छोटे-बड़े किसान व आदिवासी प्रतिरोधों का सामना करना पड़ा। १८५७ ई. में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, मंगलपांडे, तात्यांटोपे, कुंवर सिंह व नाना साहिब सहित भारतवासियों ने सामूहिक रूप से अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने के लिए संघर्ष किया। इन सभी घटनाओं को इतिहास में बहुत कम स्थान दिया गया। इस प्रकार उन्होंने इतिहास का विकृतिकरण ही नहीं अपितु विनाश भी किया।

ठाकुर रामसिंह जी ने इस काल खण्ड में लिखित ऐतिहासिक ग्रन्थों के अध्ययन के आधार पर इसे पक्षपातपूर्वक इतिहास लेखन की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि उक्त लेखकों द्वारा केवल अपने स्वामियों को खुश करने के लिए ही लेखन कार्य किया। यह क्रम महमूद गजनवी से प्रारंभ होता है। उसके साथ मुस्लिम इतिहासकार अलवेरुनी आया। उसने भारत का वर्णन करते समय यहां के उज्ज्वल पक्ष की अनदेखी की व भारतीयों की आलोचना की। यही क्रम कालान्तर में भी चलता रहा। मुस्लिम लेखकों द्वारा यह प्रमाणित करने का प्रयास किया कि जो वे लिख रहे है वही इतिहास है। उनके द्वारा राजनीतिक घटनाओं व शासकों का वर्णन ही इतिहास है। इतिहास की विषयवस्तु उस काल में राजनीतिक घटनाएं बन गई जबकि भारतीय इतिहास परम्परा में यह इतिहास लेखन का अन्तिम बिन्दु थी। महमूद गजनवी के साथ आए अलवेरुनी ने अपनी पुस्तक 'तारीख-उल-हिन्द' में लिखा कि 'भारत के लोग घटनाक्रम को कम महत्व देते हैं और अपने राजाओं के शासनकाल की तिथियां लिखने की उपेक्षा करते हैं।' उसने लिखा कि हिन्दुस्तान का अपना कोई पुराना इतिहास नहीं है और हिन्दुओं को इतिहास लेखन की कला नहीं आती है। सद्रउद्दीन-मुहम्मद-बिन-हसन-निजामी ने अपनी पुस्तक ''ताज-उल-मासिर' में तराईन की दूसरी लड़ाई का विस्तृत वर्णन किया है परन्तु तराईन की पहली लड़ाई जिसमें पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गौरी को बुरी तरह पराजित किया उस को छुपाया गया। इसी क्रम में मिन्हाज-उस-सिराज ने तबकात-ए-नासिरी व उतवी ने तारीख-ए-यामिनी को लिखा। अमीर खुसरो जो कि अलाउद्दीन खलजी का दरबारी इतिहासकार था। उसने अपने आप को तूती-ए-हिन्द (हिन्द/भारत का तोता) कहा। उसने ६ ऐतिहासिक ग्रन्थों केरानुस्सदेन, फिफताउल-फुतुह, आशिका, नुह-सिपेहर, खजाइन-उल-फुतुह व तुगलकनामा ग्रन्थों की रचना की। उसने भी केवल अलाउद्दीन खलजी व अन्य मुस्लिम सुल्तानों की प्रशंसा की व रणथम्भौर के राणा हमीरदेव व मेवाड़ के शासक राजा रत्न सिंह के बारे में पक्षपात पूर्ण वर्णन किया, जिन्होंने सुल्तान को

कड़ी चुनौती दी थी। मुस्लिम लेखकों द्वारा एक ही पक्ष को लिखने को प्रमाणित सिद्ध करने के लिए जियाऊद्दीन वर्नी द्वारा लिखित 'तारीख-ए-फिरोजशाही' स्पष्ट प्रमाण है। वह १७ वर्षों तक मुहम्मद-बिन-तुगलक का नदीम (निजी सचिव) रहा परन्तु 'तारीख-ए-फिरोजशाही' में सुल्तान फिरोजशाह तुगलक को खुश करने के लिए सुल्तान मुहम्मद-बिन-तुगलक के बारे में न्यूनतम व अस्पष्ट जानकारी दी। अतः स्पष्ट होता है कि मुस्लिम लेखकों ने केवल सुल्तानों को प्रसन्न करने के लिए ग्रन्थ लिखे।

मुगल बाबर ने अपनी आत्मकथा बाबरनामा में भारत के बारे में नकारात्मक दृष्टिकोण से वर्णन किया। उसने लिखा ''हिन्दुस्तान के लोग सुन्दर नहीं है, वे व्यवहार के अनुसार निरस व रुखे हैं।[६] उसने आगे लिखा कि भारत के लोगों को सामाजिक व्यवहार की जानकारी नहीं है। गुलवदन बेगम ने हुमायुंनामा में हुमायुं के जीवन की कई महत्वपूर्ण घटनाओं पर पर्दा डाला है। इस समय के लेखक अबुल फ़ज़ल ने 'अकबरनामा' व 'आइन-ए-अकबरी' में अकबर के जीवन से सम्बन्धित कई घटनाओं को छुपाया है। उन घटनाओं का वर्णन धार्मिक कटुता के कारण एक अन्य लेखक अब्दुल-कादिर-बदांयुनी ने अपने ग्रन्थ 'मुन्तखव-उत-तारीख' में किया है। उसने यह वर्णन इसलिए किया कि वह अकबर के उदार दृष्टिकोण का विरोधी था। अकबरनामा के सम्बन्ध में इतिहासकार के. ए.निजामी ने लिखा है कि ''अकबरनामा में निसंदेह एक राजकीय प्रकाशन में जो सभी संभव त्रुटियां हो सकती थी वे हैं। यह एक पक्षीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इसमें बादशाह की नापसंद बातों का वर्णन नहीं है तथा उसके सकारात्मक चरित्र को प्रदर्शित किया गया है एवं उसके शत्रुओं के नकारात्मक बिन्दुओं को रेखाकिंत किया गया है। आरम्भ से अन्त तक यह चाटुकारिता से भरा पड़ा है।[७]" इसी क्रम में ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद ने तवकात-ए-अकबरी, जहांगीर ने तुजुक-ए-जहांगीरी, अब्दुल हमीद लाहौरी ने बादशाहनामा, मुहम्मद सादिक व मुहम्मद ताहिर ने शाहजहांनामा, मिर्जा मुहम्मद कासिम ने आलमगीरनामा, मुहम्मद साकी मुस्तैद खां ने मासिर-ए-आलमगीरी व मुहम्मद हाशिम खाफी खां ने मुन्तखव-उल-लुवाव ग्रन्थों की रचना की। उक्त मुस्लिम लेखकों द्वारा शासकों को खुश करने के उद्देश्य से एक पक्षीय दृष्टिकोण से घटनाओं का वर्णन किया।

भारत का पूर्णतः इस्लामीकरण करने के लिए यहां के धर्म, संस्कृति, सम्मान, मान बिन्दुओं, पुण्यस्थलों, मन्दिरों, वेदशालाओं, विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, प्राचीन महलों, दुर्गों आदि को नष्ट करने में कोई कसर नहीं रखी। नालन्दा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया गया। इन विश्वविद्यालयों में ज्ञान-विज्ञान के लाखों ग्रन्थों को आग की भेंट चढ़ा दिया गया। उज्जैन के महाकालेश्वर मन्दिर के पुस्तकालय को अलाउद्दीन खलजी ने जला दिया। औरंगजेब के शासनकाल में लाखों ग्रन्थों को जलाया गया। इस प्रकार मुस्लिम शासकों द्वारा प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थों को जलाकर नष्ट कर दिया गया।

यह क्रम यहां पर ही समाप्त नहीं हुआ। मुसलमानों के बाद अंग्रेजों ने भारत पर अपना

अधिपत्य स्थापित करने का प्रयास किया। वे इतिहास के महत्व को अच्छी प्रकार से जानते थे। वे जानते थे कि समाज के उत्थान में इतिहास का बहुत महत्व है। अतः उन्होंने भारतीय इतिहास को क्षति पहुंचाने के लिए एक अलग रास्ता अपनाया। इतिहास के महत्व के सम्बन्ध में एक कथन है, यदि आप किसी देश पर शासन करना चाहते हैं तो उसके इतिहास को नष्ट कर दो और इस प्रकार उस देश को दास बनाने का ५० प्रतिशत काम पूरा हो जाएगा। अंग्रेजी लेखकों ने ऐसा करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया।

ठाकुर रामसिंह जी ने अंग्रेजों की इतिहास को विकृत करने की नीति के सम्बन्ध में स्पष्ट किया कि उन्होंने भारत के इतिहास को नष्ट करने की मुसलमानों की विध्वंसात्मक नीति का सूक्ष्मता से अध्ययन कर यह मालूम कर लिया कि मुस्लिम शासक हिन्दुओं के भूतकाल को पूर्णतः समाप्त करने में असफल हुए हैं। अतः उन्होंने इतिहास को नष्ट करने की नीति का परित्याग कर दिया, परन्तु वे मुसलमानों से अधिक चतुर थे। इसलिए उन्होंने अपने राज्यकाल में भारत के इतिहास को जिस प्रकार बिगाड़ा है, इसका उदाहरण विश्व में मिलना कठिन है।

प्रारम्भ में यूरोपीय लेखकों ने भारत की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। परन्तु बाद में ईसाईयत के प्रभाव में उनका दृष्टिकोण दिन-प्रतिदिन बदलता गया। यह क्रम विलियम जोन्स से शुरू होता है। उसने १७८४ ई. में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना की। सोसाइटी की स्थापना का उद्देश्य एशिया के इतिहास, पुरातत्व, कलाओं, विज्ञान तथा साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त करना था। इसके पीछे का उद्देश्य यह था कि ईसाईयत पर आधारित मूल सिद्धातों जैसे विश्व सृष्टि की रचना, पृथ्वी की आयु आदि के बारे में अपने पक्ष को ऐतिहासिक रूप से सही बताना तथा भारत की कालगणना तथा उसके आधार को नकारना था।[५] विलियम जोन्स ने संस्कृत भाषा की प्राचीनता पर भी पहली बार प्रश्न चिन्ह लगाया। इसी क्रम में दूसरा लेखक जेम्स मिल हुआ। जिसने हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इण्डिया छः हजार पृष्ठों में लिखी। यह ग्रन्थ लम्बे समय तक भारतीय विश्वविद्यालयों तथा भारतीय सिविल सर्विस की परीक्षों में एक पाठ्यक्रम पुस्तक के रूप में प्रयुक्त हुआ। ग्रन्थ का उद्देश्य था कि अंग्रेजों में उच्चता की भावना पैदा कर विश्व में हिन्दुओं अत्याधिक हीन बताना।[६] जेम्स मिल ने सदियों से विश्व सभ्यता पर एक छत्र राज करने वाली हिन्दु सभ्यता को दुनिया की निकृष्टम सभ्यता कहा। उनके अनुसार सभ्यता का अर्थ प्राचीन यूनान व आधुनिक यूरोप है। विश्व की सभ्यताओं का विवेचन करते समय उसने ईसाई सभ्यता को सर्वोच्च तथा हिन्दू सभ्यता को निकृष्टम लिखा है। उसने अपने ग्रन्थ में जगह-जगह पर हिन्दुओं को गालियां दी हैं। जेम्स मिल से आगे बढ़कर टी.वी. मैकाले निकला। जेम्स मिल जहां हिन्दुओं से घृणा करता था वहीं मैकाले भारत की प्रत्येक वस्तु से घृणा करता था। उसने भारत में १८३४ ई. शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बनाया ताकि भविष्य में भारत में ईसाईयत व यूरोपीय सभ्यता का विस्तार हो सके। लॉर्ड मैकाले से लेकर इतिहासकार गिग्वन तक कहा गया कि

भारतीयों की इतिहास की कोई धारणा ही नहीं थी और न ही कैदी भारतीय ऐतिहासिक साहित्य उपलब्ध है।[१०]

अतः अंग्रेजों ने भारतीय इतिहास को बिगाड़ने की योजना बनाई। वे चाहते थे कि १८५७ की क्रान्ति की तरह उन्हें दोबारा से विरोध का सामना न करना पड़े। इसलिए उन्होंने भारतीय इतिहास को विकृत करने की त्रि-सूत्रीय योजना बनाई। इस योजना का वर्णन लाला हरदयाल ने अपनी पुस्तक 'माई डीवाइन मैडनैस' में दिया है। जिसके अनुसार– हिन्दुओं का अहिन्दुकरण, अराष्ट्रीयकरण व असमाजीकरण था।[११] इस योजना के तहत हिन्दु समाज की एकात्मता को नष्ट करने के लिए अंग्रेजों ने इसमें ब्राह्मण-अब्राह्मण, छूत-अछूत, उत्तरवासी-दक्षिणवासी, आर्य-द्रविड़, आदिवासी-अनादिवासी, राजपूत-जाट, स्वर्ण-अस्वर्ण आदि अनेक भेद उत्पन्न किए, जिसका हमारे इतिहास में कहीं भी उल्लेख नहीं है।[१२] उन्होंने आर्यों के विदेशी मूल का सिद्धान्त, भारत एक देश नहीं अपितु एक उपमहाद्वीप है व भारतीय इतिहास लेखन की कला से अनभिज्ञ थे को वर्णित किया।

इस प्रकार अंग्रेजों ने योजनाबद्ध तरीके से भारत के गौरवमयी इतिहास को इस प्रकार बिगाड़ा कि उन्होंने अपने द्वारा बनाए इतिहास के नियमों को स्थापित व प्रसारित किया। भारतीय इतिहास के प्रति ब्रिटिश इतिहासकारों की षड्यन्त्र भरी दृष्टि जिसने हमारे देश को आज इतना विकृत कर दिया है कि हम आज भी उन्हीं के लिखे इतिहास का अन्धानुकरण कर रहे हैं। विडम्बना यह है कि आजादी के बाद भी यह क्रम जारी रहा जबकि इसे ठीक करने की आवश्यकता थी। उनके द्वारा सिकन्दर महान, अकबर महान, आर्य विदेशी थे, आर्य मांस खाते थे व भारत एक उपमहाद्वीप है को प्रचारित किया गया। अंग्रेजों ने यह सब इसलिए किया क्योंकि वे भारत के इतिहास को विकृत करके लम्बे समय तक अपना अधिपत्य चाहते थे।

हिन्दुओं का अहिन्दुकरण, अराष्ट्रीयकरण व असमाजीकरण था। इस योजना के तहत हिन्दु समाज की एकात्मता को नष्ट करने के लिए अंग्रेजों ने इसमें ब्राह्मण-अब्राह्मण, छूत-अछूत, उत्तरवासी-दक्षिणवासी, आर्य-द्रविड़, आदिवासी-अनादिवासी, राजपूत-जाट, स्वर्ण-अस्वर्ण आदि अनेक भेद उत्पन्न किए, जिसका हमारे इतिहास में कहीं भी उल्लेख नहीं है।

वास्तव में भारत की इतिहास लेखन परम्परा अति प्राचीन व वैज्ञानिक है। "संसार में भारतवर्ष एकमात्र ऐसा देश है जहां मनीषियों ने इतिहास के अर्थ और मर्म – दोनों को समझा व अनुभव किया है।"[१३] जब इतिहास शास्त्र की स्थापना ही सर्वप्रथम भारत में हुई तो यह कहना कि भारत का अपना कोई इतिहास नहीं है और हिन्दुओं को इतिहास लिखने की शैली नहीं आती है, पूर्णतः मिथ्या और सवार्थप्रेरित सिद्ध हो जाता है। भारत के इतिहास लेखन और प्रचार की यह पद्धति काफी समय तक चलती रही। भारत में इतिहास के प्रचार-प्रसार के लिए कथावाचकों, वृतलेखकों, भाट, चारण, ढाडी और मिरासी हुए, अभी भी विद्यमान है।[१४] इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि भारत

की लोक परम्परा में आज भी इतिहास जीवन्त है। विडम्बन यह है कि हम पाश्चात्य दृष्टिकोण से भारतीय इतिहास का जब अवलोकन करते है तो हमारे सामने कई प्रश्न खड़े हो जाते हैं। हम उन प्रश्नों के उत्तर भी उसी दृष्टिकोण से ढूंढने का प्रयास करते हैं, जोकि न्यायसंगत नहीं है। भारत के इतिहास का भारतीय दृष्टि से अध्ययन करने की आवश्यकता है। ठाकुर रामसिंह जी की यह मान्यता रही है कि किसी भी जाति के अतीत को पूर्णतः नष्ट करना संभव नहीं है, हां उसको विकृत अवश्य भी किया जा सकता है। यदि इतिहास को विकृत किया गया है तो प्रमाणों व तथ्यों के आधार पर उसे ठीक किया जा सकता है। माननीय ठाकुर जी इतिहास का पुनर्लेखन प्रमाणों व तथ्यों के आधार पर संकलित करने को कहते थे। उनका यह भी विश्वास था कि हमारे देश के इतिहास में कभी भी मिथकों का निर्माण नहीं हुआ। ज्ञान विज्ञान के गूढ़ रहस्यों को समझने और समझाने के लिए हमारे ऋषि -मुनियों ने सत्य कथाओं और प्रतीकों को माध्यम बनाया। मिथकों का कभी निर्माण नहीं किया।[१५] उन्होंने अंग्रेजों द्वारा हमारे शास्त्रों व ग्रन्थों को मिथक प्रमाणित करने को पूर्णतः नकारा है। उनका यह भी विश्वास था कि किसी भी संस्कृति में उसकी धर्मदृष्टि ही उस संस्कृति की इतिहास दृष्टि बनती है और वही आगे चलकर दर्शन और चिन्तन के रूप में स्थापित होती है। यही यूरोप व भारत के इतिहास व इतिहासकारों के साथ भी हुआ।[१६] इस प्रकार ठाकुर जी के अनुसार इतिहास, इतिहास लेखन, इतिहास दृष्टि व इतिहास के उद्देश्यों का भारतीय दृष्टिकोण से अवलोकन करने की आवश्यकता है। तभी हम भारतीय इतिहास पराजय का नहीं सतत् संघर्ष का है, समझने में सक्षम होंगे। इसी उद्देश्य के निमित ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी अग्रसर है।

> **जब इतिहास शास्त्र की स्थापना ही सर्वप्रथम भारत में हुई तो यह कहना कि भारत का अपना कोई इतिहास नहीं है और हिन्दुओं को इतिहास लिखने की शैली नहीं आती है, पूर्णतः मिथ्या और सवार्थप्रेरित सिद्ध हो जाता है। भारत के इतिहास लेखन और प्रचार की यह पद्धति काफी समय तक चलती रही। भारत में इतिहास के प्रचार-प्रसार के लिए कथावाचकों, वृतलेखकों, भाट, चारण, ढाडी और मिरासी हुए, अभी भी विद्यमान है।**

संदर्भ :

१. ठाकुर रामसिंह, भारत के इतिहास का विनाश व विकृतिकरण एवं उसका निराकर, तिहास दिवाकर, त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका, विशेषांक वर्ष ७, अंक ४, जनवरी २०१५, पृ ४१

२. वही, पृ. ४१

३. डॉ. विशुद्धान्द पाठक, उतर भारत का राजनैतिक इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, १९७३, पृ. २०१

४. इतिहास दिवाकर, त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका, विशेषांक वर्ष ७, अंक ४, जनवरी २०१५, पृ ३६-४०

५. ईलियट एवं डउसन, भारत का इतिहास, द्वितीय खण्ड, अनुवाद डॉ. मथुरा लाल शर्मा, शिव लाल

अग्रवाल एंड कम्पनी, आगरा, १६४७, पृ. ७
६. सैयद अतहर अब्बाज रिवाजी मुगलकालीन भारत (बाबर), हिस्ट्री डिपार्टमेंट, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, १६६०, पृ. १६७ (A.S. Beveridge, Tr. Form the original turiki in english, Babur-name, 2 Vol. in one format, London, 1922, Original books reprint brporation, New Delhi, 1970, Vol 1 P.P. 578)
७. Dr. K.A. Nizami, On History and Historians of Medieval India, New Delhi, P. 156
८. इतिहास दिवाकर, त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका, वर्ष ५, अंक ३, अक्तूबर २०१२, पृ. १५
६. इतिहास दिवाकर, त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका, वर्ष ५, अंक ३, अक्तूबर २०१२, पृ. १५
१०. डॉ. रत्नेश कुमार त्रिपाठी, ब्रिटिश इतिहासकारों की भारतीय इतिहास दृष्टि।
११. इतिहास दिवाकर, त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका, वर्ष ५, अंक ३, अक्तूबर २०१२, पृ. १७
१२. वही पृ. ४४
१३. वही, पृ. १५
१४. इतिहास दिवाकर, त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका, विशेषांक वर्ष ७, अंक ४, जनवरी २०१५, पृ. ४६
१५. वही, पृ. ६०
१६. वही, पृ. ३१

सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग
जनरल जोरावर सिंह महाविद्यालय धनेटा,
जिला हमीरपुर (हि.प्र.)

मनु के बारे में ठाकुर रामसिंह जी की दृष्टि

डॉ. सूरत ठाकुर

किसी देश या राष्ट्र के प्राण उसके सांस्कृतिक इतिहास में ही निहित रहते हैं। यदि उसकी कोई अपनी सांस्कृतिक पहचान नहीं है, तो उसका अस्तित्व अधिक समय तक विद्यमान नहीं रह सकता। भारतीय लोक संस्कृति समग्र विश्व में अपनी महानता के लिए प्रख्यात है। भारतीय लोक संस्कृति के मूल में आध्यत्मिकता, सहिष्णुता, धार्मिकता, सर्वजन सुखाय, अतिथि पूजा, इत्यादि भावनाएं रही हैं, जिससे हमारी शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक शक्तियों का विकास होता है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इतिहास पुरोधा स्व. ठाकुर राम सिंह जी इतिहास लेखन में देश की संस्कृति का आधार मानकर लेखन करने पर बल देते थे। उनका मानना था कि सभ्यता और संस्कृति का विकास साथ-साथ होता है। शिकार के लिए हथियार बनाना सभ्यता है, तो हथियारों को रंगना, उन पर नक्काशी करना संस्कृति है। इसी प्रकार खेत में हल जोतना सभ्यता है और हल जोतते हुए लोकगीतों का गायन संस्कृति है। प्राकृतिक विधान के अनुरूप संस्कार की हुई पद्धति ही संस्कृति है। उसी संस्कृति के किसी एक अंश को सभ्यता कहते हैं।

ठाकुर राम सिंह जी मनु को हिन्दू समाज की सभ्यता एवं संस्कृति के सर्जक मानते थे। मनु हमारे प्रथम पुरखे थे, जिन्होंने समाज को एक सुव्यवस्थित अवधारणा दी। इसलिये अपने पुरखों के कृत्यों, उपलब्धियों को गर्व और गौरव की वस्तु मानना हमारी संस्कृति की विशेषता है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रथम पड़ाव वैदिक सभ्यता और संस्कृति का है, जो मूलतः आर्य संस्कृति है। इस युग के वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथ, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों में कई ऐतिहासिक तथ्य मिलते हैं।

ठाकुर राम सिंह जी मनु को हिन्दू समाज की सभ्यता एवं संस्कृति के सर्जक मानते थे। मनु हमारे प्रथम पुरखे थे, जिन्होंने समाज को एक सुव्यवस्थित अवधारणा दी। इसलिये अपने पुरखों के कृत्यों, उपलब्धियों को गर्व और गौरव की वस्तु मानना हमारी संस्कृति की विशेषता है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रथम पड़ाव वैदिक सभ्यता और संस्कृति का है, जो मूलतः आर्य संस्कृति है। इस युग के वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथ, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों में कई ऐतिहासिक तथ्य मिलते हैं।

भारतीय संस्कृति के बारे में ठाकुर राम सिंह जी का मानना था कि हमारी संस्कृति ही एक ऐसी संस्कृति है जो अनादि है, क्योंकि इसका मूल वेद है। वेदों में दिये सिद्धान्त शाश्वत सत्य और

नित्य हैं। वेदों में आजतक कोई भूल या कमी नहीं निकाली गई है। उनका मानना था कि मनाली से ही वैवस्वत मनु ने सृष्टि का पुनर्सृजन किया था। इसलिए हमारे गौरवमयी इतिहास को मनु के इतिहास के साथ खोजना होगा। इससे हमारे प्रागैतिहासिक काल की परतें स्वयंमेव खुलती जायेंगी। इसीलिये वैशाख कृष्ण १३, १४, १५ कलियुगाब्द ५१०४ तदनुसार मई १०,११, १२ सन् २००२ को कुल्लू में उनके मार्गदर्शन में 'वैवस्वत मन्वन्तर में मानव सृष्टि तथा समाज संरचना' नामक विषय पर राष्ट्रीय परिसंवाद हुआ था। जिसमें ५० से अधिक विद्वानों द्वारा शोध पत्र पढ़े गए थे। सभी विद्वान इस बात से सहमत थे कि मनु ने ही मनाली से सभ्यता का आरम्भ करवाया था। ये शोधपत्र पुस्तक रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। इसके आमुख में वे लिखते हैं, 'इस विषय का सम्बन्ध कुल्लू तथा हिमाचल के साथ-साथ विश्व से भी है। विश्व के समग्र इतिहास की कुंजी मन्वन्तरमान के विज्ञान में विद्यमान है। इसके माध्यम से अतीत ही नहीं, अपितु पृथ्वी के वर्तमान और भविष्य को भी अच्छी प्रकार समझा जा सकता है।'

इस परिसंवाद को सफल बनाने के लिये उन्होंने कुल्लू इकाई के साथ कई बैठकें की थी। यद्यपि निर्धारित दिन वे बहुत बीमार हुए थे, परंतु उनकी गजब की जिजीविषा ही थी कि समापन समारोह तक वे इस काबिल हो गए थे कि उसमें शामिल हो सके थे। उनकी ध्येयनिष्ठा पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक माननीय डा. मोहन भागवत जी ने उनके लिए कहा है, 'ठाकुर राम सिंह जी का सम्पूर्ण जीवन हम सब लोगों के लिये निर्भयता, ध्येयनिष्ठा, परिश्रमों की दृढ़ता तथा चरित्र की निर्मल निस्पृहता का उज्ज्वल उदाहरण है।'

ठाकुर राम सिंह जी से मेरा पहली बार साक्षात्कार सन् १६६८ में हुआ और उनके निर्वाण प्राप्त करने तक यह सम्बन्ध निरन्तर गहन होता गया। मैंने पाया कि माननीय सरसंघचालक जी ने उनके व्यक्तित्व पर जो कहा है, वह सर्वथा सत्य है। ठाकुर राम सिंह जी अपने काम के प्रति दृढ़ रहते थे। इसलिए एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गंवाते थे। वे निरन्तर राष्ट्र चिंतन और भारत के गौरवमयी इतिहास को उजागर करने में उम्रभर प्रयासरत रहे। अपने जीवन के आखिरी दशक में भी उनकी कार्य करने की क्षमता अद्भुत थी। निरन्तर सफर करना और विद्वानों, लेखकों, इतिहासकारों से विचार-विमर्श करना और उनसे निरन्तर संवाद बनाये रखना ठाकुर जी की विशेषता थी। जिस भी व्यक्ति से एक बार मिले, उसका नाम याद रखना केवल उनकी स्मरणशक्ति के बस की बात थी। जबकि अधिकांशतः ५० वर्ष के बाद लोगों की स्मृति लोप होने लगती है। जबकि अंतिम दिनों तक ठाकुर जी के संपर्क में आये प्रत्येक व्यक्ति को नाम से पुकारना केवल उनके ही बस की बात थी।

जब वे अपने अंतिम दिनों में कुल्लू में थे, तो हमसे इतिहास और संस्कृति की ही बात करते। मुझे उनके द्वारा कहे वे शब्द आज भी स्मरण है। उन्होंने कहा था, 'भारत के मूल इतिहास को आगे बढ़ाना और प्रकाश में लाना ही तुम्हारा मुख्य ध्येय होना चाहिए।' उनके कहे ये शब्द आज भी हमें इतिहास लेखन के काम को गति देने में प्रेरणादायक हो रहे हैं।

स्वावलंबन की साक्षात मूर्ति ठाकुर जी ने कभी भी दूसरे का सहारा नहीं लिया। एक बार जब वे अस्वस्थ थे, पौड़ी चढ़ते हुए उन्हें सहारा देने के लिये मैंने उनका हाथ पकड़ा, तो उन्होंने तुरंत मेरा हाथ हटाते हुए कहा, 'सूरत जी! अभी मुझे सहारे की आवश्यकता नहीं है। मैं बिना सहारे के चल सकता हूँ।' वास्तव में जिस ने महान काम करने होते हैं, वे लोगों को जोड़ते हुए स्वयं के हित के लिए किसी का सहारा नहीं लेते।

सन् १९९८ से उन्होंने अपना अधिकतर समय हिमाचल प्रदेश के इतिहास को गति देने में बिताया। उन्हीं के मार्गदर्शन में सन् १९९८ में डा. विद्या चंद ठाकुर की अध्यक्षता में भारतीय इतिहास संकलन समिति की कुल्लू इकाई का गठन हुआ। इस में दानवेन्द्र सिंह को अध्यक्ष बनाया गया और तारा सिंह नेगी को महामंत्री का दायित्व सौंपा गया। काम को गति देने के लिए कुल्लू के प्रबुद्ध लेखकों का एक मार्गदर्शक मंडल बनाया गया। इस मार्गदर्शक मंडल में मुझे भी काम करने का अवसर मिला।

स्वावलंबन की साक्षात मूर्ति ठाकुर जी ने कभी भी दूसरे का सहारा नहीं लिया। एक बार जब वे अस्वस्थ थे, पौड़ी चढ़ते हुए उन्हें सहारा देने के लिये मैंने उनका हाथ पकड़ा, तो उन्होंने तुरंत मेरा हाथ हटाते हुए कहा, 'सूरत जी! अभी मुझे सहारे की आवश्यकता नहीं है। मैं बिना सहारे के चल सकता हूँ।' वास्तव में जिस ने महान काम करने होते हैं, वे लोगों को जोड़ते हुए स्वयं के हित के लिए किसी का सहारा नहीं लेते।

कुल्लू इकाई के गठन के कुछ दिनों बाद ठाकुर राम सिंह जी कुल्लू आये थे। इस अवसर पर लगभग सौ से अधिक लोग उनके विचार सुनने के लिये इकठ्ठा हुए थे। इस अवसर पर उन्होंने भारतीय काल गणना पर विस्तार से तथ्यपरक तरीके से एक घंटे तक अपना उद्बोधन दिया था। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा था कि सृष्टि के पालक और संहारी काल के द्वारा कलयित किये जाते हैं, वही महाकाल है। यह काल परमेश्वर रूप होने के कारण अनादि और अनंत है। काल के दो रूप मूर्त एवम् अमूर्त की व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया कि जो हमें परमाणु, अणु, त्रुटि, निमेष, लव, और युग के रूप में अनुभव में आता है, मूर्त काल है। घड़ी की सूई से बनने वाला मिनटों और घंटों वाला मूर्त काल प्रगति का फल है। भारतीय कालगणना के अनुसार मूर्तकाल के प्रारंभिक सूक्ष्म अवयव-परमाणु, अणु, त्रसरेणु, त्रुटि, वेध, लव, निमेष, क्षण, काष्ठा, लघु नाड़िका ये १२ हैं। आगे काल के परिमाप दिन, पक्ष, मास, अयन, वर्ष, युग, महायुग, मन्वन्तर, कल्प, ब्रह्मा, महाकल्प, तक कुल मिलाकर २६ अवयवों के बारे में जानकारी सभी उपस्थित लोगों के लिये महत्त्वपूर्ण थी। अमूर्त काल के अवयवों की जानकारी सूर्य के द्वारा मिलती है। काल के हिसाब-किताब की कल्पना अमूर्तकाल की दृष्टि से माया है। अमूर्तकाल को मूर्तकाल की तुलना में कृष्ण कहा गया है।

उस समय हमें पहली बार काल गणना के बारे में सटीक जानकारी प्राप्त हुई। यह भी मालूम हुआ कि भारतीय कालगणना विश्व में सबसे अधिक पुरातन है और वैज्ञानिक भी। हमारे ज्योतिष शास्त्र में जो भी गणना के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं, उनका आधार यही कालगणना है।

प्रसिद्ध इतिहासकार स्व. ठाकुर रामसिंह जी एक राष्ट्रीय सोच रखने वाले इतिहासकार तो थे ही, साथ ही वे सांस्कृतिक मूल्यों को भी उतनी ही तवज्जो देते थे जितनी इतिहास को। उनका मानना था कि हमारी संस्कृति के विविध रूपों में इतिहास के बहुत से सूत्र छिपे हुए हैं। भारतीय इतिहास संकलन समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहते हुए उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया था। भारतीय इतिहास में त्रिगर्त के महत्त्व को देखते हुए पुरातत्त्व की दृष्टि से त्रिगर्त पर शोधकार्य एवम् ऐतिहासिक अनुसंधान की अपेक्षा रखते हुए 'युग युगीन त्रिगर्त' नामक विषय पर परिसंवाद का आयोजन २८ जून १९९८ से ३० जून १९९८ को कांगड़ा किले में आयोजित करना उनकी इतिहास दृष्टि का ही परिणाम था। इस सम्मेलन में त्रिगर्त से जुड़े विविध पहलुओं पर देश भर से आये विद्वानों ने मंथन किया। विद्वानों के शोधपत्र युग युगीन त्रिगर्त के नाम से भारतीय इतिहास संकलन समिति हिमाचल प्रदेश ने प्रकाशित करवाये हैं।

प्रसिद्ध इतिहासकार स्व. ठाकुर रामसिंह जी एक राष्ट्रीय सोच रखने वाले इतिहासकार तो थे ही, साथ ही वे सांस्कृतिक मूल्यों को भी उतनी ही तवज्जो देते थे जितनी इतिहास को। उनका मानना था कि हमारी संस्कृति के विविध रूपों में इतिहास के बहुत से सूत्र छिपे हुए हैं। भारतीय इतिहास संकलन समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहते हुए उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया था।

इसी तरह उन्होंने भारतीय इतिहास संकलन समिति कुल्लू इकाई को देवी-देवताओं पर शोध करने का निर्देश दिया। उनके मार्गदर्शन में कुल्लू इकाई ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ५१०७ तदनुसार विक्रमी संवत २०६२ को 'कुल्लू की ऋषि परंपरा' नामक पुस्तक प्रकाशित की। इस पुस्तक में कुल्लू ज़िला के ४३ गांवों में पूजित ऋषियों के बारे में जानकारी उपलब्ध है। वे कहते थे, **'ऋषयः मंत्र द्रष्टारः, दर्शनात् ऋषि उच्यते।** अर्थात् जिन्होंने हमारे आदि ग्रंथ वेदों के मंत्रों का साक्षात् दर्शन प्राप्त किया हो, वे ऋषि कहलाते है। इसी तरह जिन मनस्वियों ने वैदिक मंत्रों पर गहन मनन किया हो, वे मुनि कहलाये-मननात मुनि उच्यते। उनका मानना था कि देवी-देवताओं के इतिहास में ही कुल्लू का इतिहास छुपा हुआ है। इसीलिये वे देवी-देवताओं के इतिहास को उजागर करने पर बल देते रहे।

वे कहते थे कि हिन्दु संस्कृति में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का बहुत बड़ा महत्त्व है। हिन्दू संस्कृति में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नववर्ष का प्रारम्भ हुआ माना जाता है। हिन्दू पंचांग के १२ महीनों के क्रम में पहले चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा वर्ष भर की सभी तिथियों से इसलिए सबसे अधिक महत्त्व रखती है क्योंकि इसी तिथि से ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना आरम्भ की थी। अतः इस दिन सर्वप्रथम ब्रह्मा जी का और तदनन्तर अन्य देव, दानव, ग्रह, नक्षत्र, ऋषि, महर्षि, पंच देव, पंचमहाभूत, दशदिक पाल, सुख-दुख, रोग-दोष और उनके प्रशासक औषधोपचारादि का पूजन किया जाता है और प्रवर्तमान वर्ष में सब के लिए सुख शांतिदायी होने की प्रार्थना की जाती है। जब ब्रह्म ने सृष्टि का आरम्भ किया, उस समय इसे प्रथम तिथि सूचित किया था जिसका अर्थ है सर्वोत्तम। इस अर्थ से यह वर्ष का सर्वोतम दिन

है, जो सिखाता है कि हम अपने जीवन में सभी कामों में, सभी क्षेत्रों में, जो भी कर्म करें, हमारा स्थान और हमारे लोक कल्याण की दृष्टि से श्रेष्ठ स्थान पर हो। सतयुग का आरम्भ और नवसंवत्सर की सर्वोतम तिथि भी इसी प्रतिपदा को माना गया है। इसे संवत्सर प्रतिपदा भी कहते है। सृष्टि संवत, कलि संवत, विक्रमी एवं शक आदि सभी भारतीय संवतों का वर्ष क्रम इसी दिन परिवर्तित होता है। नव संवत्सर का अर्थ है, समय का एक दौर से दूसरे दौर में सरक जाना, संक्रमण करना। सौर मान से कैलेंडर तैयार करने का चलन नया है, हालांकि यह चलन भी विक्रम संवत से ही शुरू हुआ है।

ब्राह्मण, पुराण, स्मृति कौस्तुभ और भविष्योतर पुराण में भी नव संवत्सर तथा प्रतिपदा के संदर्भ मिलते हैं। इसका भाव है, हम सृजन ऐसा करें जो सुखद मनोहारी और प्रेरक हो। सृष्टि से बेहतर इसका दूसरा उदाहरण नहीं हो सकता। मत्स्यावतार जीवन के प्रारम्भ का प्रतीक है। हमारे शास्त्रों में उल्लिखित दस अवतारों में जीवन के विकास की कथा संकेत करती है कि जीवन का प्रारम्भ जल से हुआ है। जल का सुपरिचित जीव मछली है। अतः मछली भगवान का पहला स्वरूप या अवतार माना गया। सत्ययुग जीवन में सत्यव्रत के धारण का संकेत है।

ब्राह्मण, पुराण, स्मृति कौस्तुभ और भविष्योतर पुराण में भी नव संवत्सर तथा प्रतिपदा के संदर्भ मिलते हैं। इसका भाव है, हम सृजन ऐसा करें जो सुखद मनोहारी और प्रेरक हो। सृष्टि से बेहतर इसका दूसरा उदाहरण नहीं हो सकता। मत्स्यावतार जीवन के प्रारम्भ का प्रतीक है। हमारे शास्त्रों में उल्लिखित दस अवतारों में जीवन के विकास की कथा संकेत करती है कि जीवन का प्रारम्भ जल से हुआ है।

भारत की सनातन परम्परा से जुड़े समाज के प्रत्येक धार्मिक कृत्य, व्रत, त्यौहार, जन्म से मृत्यु तक के सभी संस्कार आदि विक्रमी और शक संवत की चंद्रमास आधारित तिथियों अथवा सौरमास के प्रविष्टों के आधार पर ही सुनिश्चित होते हैं। महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने प्रतिपादित किया है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दिन, मास, वर्ष और युगादि का आरम्भ हुआ है। युगों में प्रथम सतयुग का आरम्भ भी इसी दिन से हुआ है। कल्पादि सृष्ट्यादि युगादि आरम्भ को लेकर इस दिवस के साथ अति प्राचीनता जुड़ी हुई है। सृष्टि की रचना को लेकर इसी दिवस से गणना की गई है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही ऋतुएं, सूर्य और पृथ्वी की स्थिति और अंर्तसबंधों के कारण ही अपना प्रभाव दिखाती हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नवसंवत्सर के सौर, सावन, चंद्र, अधिमास और नक्षत्र ये पांच भेद हैं। परंतु धर्म, कर्म, और लोकव्यवहार में चंद्र संवत्सर की ही प्रवृति विख्यात है, जिसका प्रारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। इस प्रकार यह एक मात्र भारतीय नववर्ष है, जो प्रकृति के साथ जुड़ा हुआ है। इसीलिए हिन्दू समाज के लिए यह भव्य है, अद्वितीय है एवं महापर्व है। विक्रम संवत सर्वाधिक वैज्ञानिक है।

इस कारण हम भारतीयों के लिये ही नहीं अपितु पूरी दुनियां के लिये यह दिन पूजनीय होना चाहिए। इस दिन का महत्त्व इसलिये भी है, क्योंकि इस दिन भगवान रामचंद्र का अभिषेक, धर्मराज

युधिष्ठर का राजतिलक, विक्रमी और शक संवत का शुभारंभ, आर्य समाज की स्थापना, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक माननीय डा. केशव राम बलिराम हेडगेवार का जन्मदिन होता है। वे हिमाचल प्रदेश के विभिन्न आंचलों में नये संवत को मनाने की लोक परंपरा के बारे में शोध करने पर बल देते थे। उन्ही की प्रेरणा से स्व. जगदेव चंद शोध संस्थान नेरी ने हिमाचल प्रदेश में प्रचलित नव संवत् परंपरा पर एक सार्थक संगोष्ठी का आयोजन डा. विद्या चंद ठाकुर के मार्गदर्शन में सफलता पूर्वक आयोजित किया था। इसमें पढ़े गए शोधपत्र पुस्तक रूप में प्रकाशित हो चुके हैं।

उनके समय में ही ज़िलों के इतिहास लेखन की योजना बनी थी। इतिहास लेखन के विभिन्न बिन्दुओं के आधार पर ज़िलों के इतिहास लेखन आज भी प्रगति पर है। उनका मानना था कि जब हम देश के प्रत्येक प्रान्त के ज़िलों का इतिहास सामने लाएंगे, तभी हम देश के इतिहास को भली-भांति समझ पाएंगे। इस कार्य के लिए वे सम्पूर्ण भारत में भ्रमण करते रहे। प्रत्येक प्रान्त के दूरदराज के गांवों का भ्रमण करते रहे।

मनुष्य एक सांस्कृतिक प्राणी है। संस्कृति मानव निर्मित है, सौंदर्य चेतना मनुष्य को कलाकृतियों के निर्माण की ओर प्रवृत्त करती है। इस तरह लौकिक, पारलौकिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, अभ्युदय के उपयुक्त देहेन्द्रिय, मन, बुद्धि, अहंकारादि की भूषणभूत सम्यक चेष्टाएं एवं हलचलें ही संस्कृति है। संस्कृति वह इकाई है, जिसमें समाज के सदस्य के रूप में मानव द्वारा उपलब्ध ज्ञान, विश्वास, कला, नीति, कानून प्रथाएं और गुण निहित रहते हैं। इसलिए ठाकुर राम सिंह जी समाज में प्रचलित सांस्कृतिक मूल्यों को सुरक्षित रखने पर बल देते थे। लोक संस्कृति पर शोध करने को प्रेरित करते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि ऋषि-मुनियों के इतिहास और उनके द्वारा लिखे गए ग्रंथों में ही भारत का असली इतिहास निहित है। वे मनु को प्रथम पुरुष मानते थे, इसीलिये वे मनाली में मनुधाम बनवाने के लिये प्रयासरत थे। मनाली गांव में एक बैठक भी की थी। गांव वाले इसके लिये भूमि देने के लिये सहमत हो चुके हैं। मनु धाम ट्रस्ट का गठन भी हो चुका है। यह परियोजना शीघ्र सम्पन्न होगी, ऐसा विश्वास है।

गांव परगानू, डा. भून्तर,
जिला कुल्लू (हि.प्र.)

श्रद्धेय ठाकुर रामसिंह जी के साथ पांच साल

चेतराम गर्ग

अक्तूबर २००५ से मैं नेरी ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान में रहने लगा। श्रीमती उत्तम देवी भवन आवासीय परिसर का निर्माण हो गया था, जिसका वर्ष प्रतिपदा, हिन्दू नववर्ष २१ मार्च, २००५ को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरकार्यवाह (वर्तमान में सरसंघचालक) माननीय मोहन राव भागवत जी के कर कमलों द्वारा लोकापर्ण हुआ। उस दिन जनसभा का आयोजन बाहर खुले में ही किया गया था, लेकिन भारी वर्षा के कारण मंच इत्यादि को खुले मैदान से अन्दर ले जाना पड़ा, तथापि कार्यक्रम बहुत भव्य तरीके से हुआ। राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश के लगभग सभी क्षेत्रों से पधारे इतिहासविद्, साहित्य एवं संस्कृति तथा हिन्दू समाज के उज्ज्वल भविष्य की कामना करने वाले हितैषी समाज इसके साक्षी बने। वर्षा से नवनिर्मित भवन से पक्की सड़क तक जाने के लिए ५० मीटर का रास्ता इतना कीचड़ भरा हुआ था कि अन्दर परिसर में आई गाड़ियों को बाहर निकालने के लिए लकड़ी के फट्टों का प्रयोग करने की आवश्यकता हुई। माननीय सरकार्यवाह जी को पक्की सड़क तक छोड़ने के लिए हम सब लोग साथ गए। चलते-चलते भागवत जी ने कहा, 'यह बन तो गया है, पर यहां रहेगा कौन?' मैंने कहा – यह तो आप और ठाकुर जी ही जाने। प्रश्न इसलिए हुआ था कि यह परिसर हमीरपुर शहर से ११ कि.मी. की दूरी पर एक निर्जन जंगल में बना था। यहां आस-पास गांव तो है पर सामने दिखाई नहीं देते। शोध कार्य के अनुकूल यह स्थान है परन्तु इसे विकसित करने में अभी कठिनाई दिख रही थी। ठाकुर जी कुछ समय से इस संस्थान की व्यवस्था संचालन के लिए विभाग स्तर के प्रचारक की मांग कर रहे थे। इस तरह मुझे ही इस कार्य में लगने का सौभाग्य प्राप्त हो गया। शंकाएं बहुत थी, विचार भी बहुत थे। मित्रों से भी और दूसरों से भी। पर मन में संकल्प था कि संगठन द्वारा प्रदत कार्य ईश्वरीय कार्य होता है।

ठाकुर जी का केन्द्र दिल्ली था। लगभग २००८ तक वे अधिकांश समय दिल्ली में ही रहते थे। उसका एक कारण था जिसे वे यदा-कदा बता दिया करते थे। शोध संस्थान को विकसित करना है तो दिल्ली आते-जाते रहना पड़ेगा। हिमाचल के ऐसे संसाधन वर्तमान में नहीं है कि हम यहां बैठकर ही इसे विकसित कर सकें। आर्थिक, शैक्षणिक व वैचारिक दृष्टि से भी हमें दिल्ली का सहयोग लेना ही पड़ेगा। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के कार्य से ठाकुर जी २००३ में मुक्त हो गए थे। इधर अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना की एक राष्ट्रीय योजना के अन्तर्गत जो भारत के चार भागों में इतिहास लेखन के लिए पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में शोध संस्थान बनाने की परिकल्पना को साकार रूप देना था इस हेतु उत्तर क्षेत्र के लिए हिमाचल प्रदेश के नेरी नामक स्थान पर सन् २००२

में भूमि का चयन कर, भूमि पूजन का कार्यक्रम आयोजित पूर्व में हो चुका था। धन की व्यवस्था भी हो गई थी। अमृतसर के पुराने एक स्वयंसेवक उद्योगपति श्री इन्द्रजीत कपूर ने इस कार्य को अपना निजी कार्य मानकर इसके लिए खुले हाथ से आर्थिक सहयोग किया। उन्होंने ठाकुर जी को कह दिया था कि इस कार्य के लिए धन हेतु कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। सब व्यवस्था हमारी रहेगी। उन्होंने यह भी कहा आप-काम करवाते जाइए हम धन भेजते रहेंगे। इस भूमि पूजन के बाद ठाकुर जी का हमीरपुर आना प्रारम्भ हो गया। ठाकुर जी का कद बड़ा, आयु बड़ी और सर्वोपरि जीवन के नब्बे वर्षों के अनुभव के सामने हर व्यक्ति ठाकुर जी के सामने नतमस्तक था। विराट हृदय, दूर दृष्टि और कार्यशीलता ऐसी कि कोई कल्पना न कर सके। जो भी ठाकुर जी के पास आता उसे ऐसा लगता था कि बस ठाकुर जी का स्नेह सर्वाधिक मुझे ही प्राप्त है। लेकिन महापुरुषों के लिए तो सब समान होते है। उनकी समदृष्टि को भी लोग अपनी-अपनी तहर से बांटना शुरू कर देते हैं। किसमें कौन सी कार्य क्षमता है, उसे देखते रहना और उस दिशा में आगे बढ़ाना कार्यशील व्यक्तित्व का दिव्य लक्षण होता है। उस लक्षण के दर्शन हमें ठाकुर जी में प्रतिपल दिखाई देते रहे हैं।

अमृतसर के पुराने एक स्वयंसेवक उद्योगपति श्री इन्द्रजीत कपूर ने इस कार्य को अपना निजी कार्य मानकर इसके लिए खुले हाथ से आर्थिक सहयोग किया। उन्होंने ठाकुर जी को कह दिया था कि इस कार्य के लिए धन हेतु कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। सब व्यवस्था हमारी रहेगी। उन्होंने यह भी कहा आप-काम करवाते जाइए हम धन भेजते रहेंगे।

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान का पंजीकरण वर्ष २००६ में हुआ। इस पंजीकरण के लिए इतिहास संकलन योजना समिति हिमाचल प्रदेश से विधिवत लिखित अनुमति ली गई और उसके बाद ही संस्थान का वही-खाता अलग हुआ। उससे पूर्व का सारा निर्माण कार्य इतिहास संकलन योजना समिति हिमाचल प्रदेश के अन्तर्गत था। शोध संस्थान नेरी में होने वाली बैठकों में हिमाचल प्रदेश इतिहास संकलन योजना हमीरपुर जिला इकाई के सदस्य आते थे। इतिहास दिवस मनाना इत्यादि अन्य कार्यक्रम सभी उसी प्रकार से चलते थे। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहते हुए हिमाचल प्रदेश के कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने ठाकुर जी को देखा और सही ढंग से समझा। उनमें सबसे प्रमुख नाम डॉ. विद्या चन्द ठाकुर का है। वे हिमाचल प्रदेश भाषा, कला एवं संस्कृति विभाग में जिला भाषा अधिकारी, शब्द व्युत्पत्ति अधिकारी, भाषा अकादमी के सचिव तथा उपनिदेशक के पद पर रहकर सन् २०१० तक सरकारी सेवा में रहे। ठाकुर विद्याचन्द सन् १९८८ में मण्डी जिला भाषा अधिकारी थे। भारतीय इतिहास की रूपरेखा - भारतीय इतिहास की विकृतियाँ तथा उसके समाधान के मार्ग विषय पर श्रद्धेय ठाकुर रामसिंह जी का लम्बा उद्‌बोधन हुआ। ठाकुर विद्याचन्द भी उस कार्यक्रम में थे। डॉ. विद्याचन्द ठाकुर जी संस्कृत के विद्वान तो थे ही साथ ही हिमाचल की संस्कृति से भी ओत-प्रोत थे। हम यदि कहें कि ठाकुर विद्याचन्द हिमाचल प्रदेश की संस्कृति के साक्षात् प्रतिमा थे तो इस में कोई में अतिश्योक्ति न होगी। मुझे भी उनके साथ १०

वर्षों तक कार्य करने का सौभाग्य मिला। मण्डी में ठाकुर जी के उद्‌बोधन ने डॉ. विद्याचन्द को उन के निकट ला दिया। देवभूमि हिमाचल प्रदेश का यह सौभाग्य बना कि इस शोध संस्थान को मूर्त रूप देने का काम यदि ठाकुर रामसिंह जी ने किया तो इस में प्राणवायु फूंकने का श्रेय डॉ. विद्याचन्द ठाकुर को जाना ही उचित होगा।

डॉ. विद्याचन्द ठाकुर कहते थे मैं जिस राष्ट्र चिन्तन को अपने जीवन में समझ पाया था, वह मैंने ठाकुर रामसिंह के व्यक्तित्व में देखा था। इससे आगे वे कहते थे – ठाकुर रामसिंह जी इतिहास के बहुत लम्बे चौड़े विषयों पर नहीं जाते थे पर जिन विषयों को वे पकड़ते थे उन को वे मन, वचन और कर्म से आत्मसात किए हुए थे। जैसे – भारतीय कालगणना विश्व की प्राचीनतम एवं वैज्ञानिक कालगणना है। आर्य भारत के मूल निवासी है। हम मनुष्य का ही इतिहास नहीं अपितु प्रकृति के इतिहास का अध्ययन भी आदिकाल से करते आए है। हमारे यहां अनैतहासिक जैसा कुछ नहीं है। पश्चिम की इतिहास परम्परा और भारतीय इतिहास लेखन परम्परा भिन्न है। हमें भारतीय इतिहास दृष्टि से अपने राष्ट्र के इतिहास का अध्ययन करना होगा। भारत का इतिहास पराजय का नहीं सतत संघर्ष का रहा है। भारतीय दृष्टि से लिखा गया इतिहास ही अपने देश के युवाओं को राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत कर सकता है।

ठाकुर जी इतिहास के निम्न विषयों पर प्रमुखता से बात करते थे – भारतीय कालगणना विश्व की प्राचीनतम एवं वैज्ञानिक कालगणना है। आर्य भारत के मूल निवासी है। हम मनुष्य का ही इतिहास नहीं अपितु प्रकृति के इतिहास का अध्ययन भी आदिकाल से करते आए है। हमारे यहां अनैतिहासिक जैसा कुछ नहीं है। पश्चिम इतिहास परम्परा और भारतीय इतिहास परम्परा भिन्न है। हमें भारतीय इतिहास दृष्टि से अपने राष्ट्र के इतिहास का अध्ययन करना होगा। भारत का इतिहास पराजय का नहीं सतत संघर्ष का रहा है। भारतीय दृष्टि से लिखा गया इतिहास ही अपने देश के युवाओं का राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत कर सकता है।

मुख्यतः ठाकुर जी इन विषयों के इर्द-गिर्द ओर रहते थे। ठाकुर रामसिंह जी संगठन चिन्तक थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय भैया जी जोशी ने ठाकुर रामसिंह शताब्दी वर्ष में अपने शब्दों में ठाकुर रामसिंह के बारे में लिखा, ''श्रद्धेय ठाकुर रामसिंह जी का सम्पूर्ण जीवन अनुकरणीय रहा है। एक श्रेष्ठ विचार का मन से स्वीकार कर लेने के बाद उसके अनुरूप अपना सम्पूर्ण जीवन जीकर उन्होंने सदैव पद व यश की आकांक्षा से मुक्त रहकर जीवन के अन्तिम क्षण तक कार्य किया। संघ कार्य याने संघ जो कहे वही संघ कार्य ऐसा स्वयं के उदाहरण से हम सब को समझाया फिर वह चाहे हिमाचल में संघ कार्य का प्रारम्भ करना हो, असम में संघ कार्य को स्थायी करना हो या इतिहास संकलन योजना को मूर्त रूप देना हो। संगठन का चिन्तन मैं का नहीं हम का है। व्यक्ति का नहीं राष्ट्रीय अकांक्षा उसमें निहित है। उससे कम कुछ भी नहीं। यह उनके व्यक्तित्व में सर्वशक्तिमान थी। ऐसा ही विचार ठा. विद्या चन्द ने ठाकुर रामसिंह में पाया था। इस विचार ने ठाकुर

विद्याचन्द को ठाकुर रामसिंह के निकट लाया। मैं इस विषय में न जाकर वर्ष १९८८ से लेकर २००३ तक हुए दो महत्त्वपूर्ण कार्यों पर प्रकाश डालूंगा।

एक कुल्लू में वैवस्वत मन्वन्तर में मानव सृष्टि तथा समाज संरचना तथा दूसरा युग-युगीन त्रिगर्त पर हुआ कांगड़ा में राष्ट्रीय परिसंवाद। ये दोनों राष्ट्रीय परिसंवाद ठाकुर रामसिंह के मार्गदर्शन में हुए। डॉ. विद्याचन्द ठाकुर ने कुल्लू के राष्ट्रीय परिसंवाद में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ठाकुर रामसिंह का स्वास्थ्य वहां कुछ बिगड़ गया था। फिर भी जो कार्य हुआ उसका संकलन डॉ. विद्याचन्द ठाकुर ने जिस ढंग से किया वह अनुकरणीय कार्य हमारे पास एक राष्ट्रीय धरोहर के रूप में लोक, इतिहास और भविष्य की आकांक्षाओं की चिरस्थाई कृति बन गई। इसी तरह का कार्य त्रिगर्त राष्ट्र पर कांगड़ा के ऐतिहासिक किले में हुआ था। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के मार्गदर्शक माननीय मोरोपन्त पिंगले जी उसमें उपस्थित रहे थे। कार्यक्रम की एक पुस्तक प्रकाशित हुई। शिमला विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो. एस.के. गुप्ता उसमें रहे थे। वे इतिहास के ही प्राध्यापक थे। त्रिगर्त राज्य के इतिहास की कड़िया इसमें खुलकर सामने आई थी। जिसका सीधा सम्बन्ध महाभारत के साथ जुड़ता है। महाभारत युद्ध में कटोचवंश के २३४वां राजा सुशर्मा कौरवों की ओर से उस युद्ध में लड़ने का संकेत करता है।

''श्रद्धेय ठाकुर रामसिंह जी का ही सम्पूर्ण जीवन अनुकरणीय रहा है। एक श्रेष्ठ विचार का मन से स्वीकार कर लेने के बाद उसके अनुरूप अपना सम्पूर्ण जीवन जीकर उन्होंने सदैव पद यश की आकांक्षा से मुक्त रहकर जीवन के अन्तिम क्षण तक कार्य किया। संघ कार्य याने संघ जो कहे वही संघ कार्य ऐसा स्वयं के उदाहरण से हम सब को समझाया फिर वह चाहे हिमाचल में संघ कार्य का प्रारम्भ करना हो, असम में संघ कार्य को स्थायी करना हो या इतिहास संकलन योजना को मूर्त रूप देना हो।

भैय्या जी जोशी, सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान के कार्य की गति को हम वर्ष २००५ से कुछ थोड़ा-थोड़ा मान सकते हैं। नेरी में या हमीरपुर में जो बैठकें होती थी उनकी कार्यवाही लिखित रूप में हमारे पास उपलब्ध है। यह पहली कार्यवाही २१ अगस्त २००५ की है जो संगठन मन्त्री एवं सदस्य सचिव श्री प्रेम सिंह भरमौरिया द्वारा लिखी गई है। अध्यक्ष श्री विजय मोहन कुमार पुरी के हस्ताक्षर इसमें अंकित हैं। नेरी में यह बैठक माननीय ठाकुर रामसिंह की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में पहला निर्णय एक राष्ट्रीय परिसंवाद के दृष्टिगत लिया गया है जिसका विषय ''राजा हमीरचन्द और उनका युग'' दिनांक १४ अप्रैल से १६ अप्रैल २००६ तक तीन दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद की संकल्पना परिलक्षित होती है। हमीरपुर जिला का नाम राजा हमीरचन्द के नाम से ही रखा गया है। यह राजा कटोच वंश से सम्बन्धित था। इसने ४७ वर्ष राज्य किया, पर बहुत अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं होती है। फिर भी स्थान नाम तथा प्राचीन व्यवस्थाओं के अवशेष चिन्ह आदि यहां विद्यमान है। एक सर्वेक्षण टीम के साथ जाने का सुअवसर मुझे भी प्राप्त हुआ था। जिसमें प्राचीन बाबड़ी आदि स्थल हमें मिले। डॉ. रमेश शर्मा जी को उस काम

को पूरा करने की जिम्मेवारी भी दी गई थी। इसके अतिरिक्त यह कार्यवाही, आर्थिक सुदृढ़ता और भविष्य के चिन्तन के बारे में भी संकेत करती है। आगामी बैठक २६-६-२००५ को पुनः निश्चित करते हैं और उसकी कार्यवाही २६-६-२००५ की हमें प्राप्त होती है। पुनः राष्ट्रीय परिसंवाद का विषय, शोध संस्थान की पत्रिका प्रकाशन उनके नाम की चर्चा होती है। ६ नवम्बर, २००५ की बैठक में निदेशक मण्डल बनाने, नामों की सूची तथा शोध संस्थान अपनी गतिविधियों को स्वतन्त्र रूप से निदेशक मण्डल के अधीन चलाने के लिए अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना से यह अनुमति प्राप्त करने के बारे निर्णय करने की जानकारी प्राप्त होती है। श्री विजय मोहन कुमार पुरी जी ने निदेशक मण्डल की घोषणा की। माननीय ठाकुर रामसिंह जी ने शोध संस्थान के कार्य के लिए क्षेत्र प्रचारक श्रीमान दिनेश जी से बात की। जिन्होंने बिलासपुर के विभाग प्रचारक श्री चेतराम को नेरी के कार्य के लिए प्रतिनियुक्त किया।

यहां पौष शुक्ल ८, कलियुगाब्द ५१०७ (८ जनवरी, २००६) की बैठक प्रातः १०.३० बजे हुई। यह बैठक इतिहास संकलन योजना समिति हिमाचल प्रदेश द्वारा संचालित ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान, नेरी हमीरपुर के निदेशक मण्डल की प्रथम बैठक कही गई है। इसमें दस सदस्यों ने भाग लिया। बाबा साहब आप्टे के चित्र को माल्यार्पण किया गया। इतिहास पुरुष का वाचन हुआ और ठाकुर रामसिंह जी ने शोध संस्थान का उद्देश्य की व्याख्या की – ''इस शोध संस्थान की स्थापना राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विषयों को ध्यान में रखकर की गई है। हमारी सभ्यता एवं संस्कृति मानवीय है। ऋग्वेद प्राचीन ग्रन्थ है। दुनिया के सभी शास्त्रों का मूल वेद है। मानव सृष्टि सर्व प्रथम समेरू पर्वत पर हुई है। भारत के १६७ करोड़ वर्ष पुराने इतिहास का ज्ञान आज अधिक लोगों को नहीं है। नई पीढ़ी तो इससे अपरिचित है। शास्त्रों का सही अध्ययन करने वाले संस्कृत के विद्वानों से सम्पर्क कर इस कार्य को गति देने व उन्हें शोध करने के लिए आगे आना होगा। वे आगे कहते हैं कि माननीय मोरोपन्त पिंगले जी ने चार ऐसे शोध संस्थान पूर्व, उतर, दक्षिण और मध्यभारत में स्थापित करने की बात की थी। अभी तक उत्तर भारत में इस प्रकार का पहला शोध संस्थान यहां नेरी में स्थापित हो सका है। इसे सही लक्ष्य और दिशा में ले जाने की हमारी पूरी जिम्मेवारी है। शोध संस्थान के निदेशक मण्डल के समक्ष अत्यन्त सरल शब्दों में शोध संस्थान का उद्देश्य की परिकल्पना राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मानकों पर खरा उतरने को ध्यान में रखकर की गई। उसके लिए उन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति के अन्दर उन गुणों की चर्चा की जो सब के अन्दर समान जीवन दर्शन रखने की क्षमता रखते हों। यह गुण हमें वेदों से प्राप्त होता है। वेद

इस शोध संस्थान की स्थापना राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विषयों को ध्यान में रखकर की गई है। हमारी सभ्यता एवं संस्कृति मानवीय है। ऋग्वेद प्राचीन ग्रन्थ है। दुनिया के सभी शास्त्रों का मूल वेद है। मानव सृष्टि सर्व प्रथम समेरू पर्वत पर हुई है। भारत के १६७ करोड़ वर्ष पुराने इतिहास का अध्ययन आज अधिक लोगों को नहीं है। नई पीढ़ी तो इससे अपरिचित है।

प्राचीनतम तो है ही, साथ ही वह सम्पूर्ण विश्व के मागदर्शक भी है। वह मात्र भारत का ही उत्कर्ष नहीं चाहते वरन सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाने की कल्पना करता है, जो भारत के लिए उचित है वही सम्पूर्ण मानवता के लिए उचित है। यह शाश्वत ज्ञान है और यह सब वेदों में है लेकिन वेद भाषा संस्कृत है। अतः इतिहास को समझने के लिए भारत को पहले संस्कृत के विद्वानों से सम्पर्क करना होगा। संस्कृत भाषा में लिखे गए ज्ञान को सामान्य समाज को वर्तमान प्रचलित भाषाओं में देना होगा। इसके लिए संस्कृत और दूसरी भाषाओं को समान रूप से समझने की आवश्यकता है। विवेकानन्द जी भी इसी बात को कहते हैं – 'संस्कृत के ज्ञान को सर्वसाधारण को उसकी भाषा में देने के प्रयास करने अत्यन्त आवश्यक है। हम यह तर्क न दें कि हमें यह भाषा आती नहीं है।' देर-सवेर संस्कृत भाषा को सभी को सीखने और जानने की आवश्यकता है। स्वतन्त्र भारत और परतन्त्र भारत का भेद हम कैसे करें? परतन्त्र भारत स्वयं का निर्णय लेने में अक्षम था पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद तो यह परिस्थिति बदलनी चाहिए थी पर बदली नहीं। कितने ही आयोग बने। कितनी ही सिफरिशें आई। भारत के इतिहास का स्वरूप नहीं बदला। हाल ही में २३,२४,२५ दिसम्बर २०१८ को गोवाहाटी में शंकरदेव कला केन्द्र में अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना का राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ। समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष महान इतिहासविद् प्रो. सतीश मितल जी को बड़ी पीड़ा के साथ कहना पड़ा – ''जो नवीन शोध और तथ्य दुनिया के सामने आए जैसे आर्य भारत के मूल निवासी हैं, सिन्धु घाटी की सभ्यता नहीं यह सरस्वती सिन्धु सभ्यता है, १८५७ का स्वतन्त्रता संग्राम केवल सैनिक विद्रोह नहीं बल्कि भारत का स्वतन्त्रता संग्राम था, ये महत्वपूर्ण विषय भारत के पाठ्यक्रमों में नहीं है पर विदेशों में पढ़ाए जाने लगे हैं। तो क्या यह विडम्बना नहीं है कि आजादी के बाद भी कितनी ही पीढ़ियां मिथ्या और छदम् धर्म निरपेक्षता के अन्तर्गत असत्य इतिहास को पढ़कर निकल रही है। एक राष्ट्रवादी इतिहासकार कितना पीड़ित होता होगा, इसका अनुमान करना क्या कठिन कार्य है? कदाचित नहीं। ठाकुर साहब को शोध संस्थान के उद्देश्य निर्धारित करते समय यह कहना पड़ा कि हमारी युवा पीढ़ी तो अपने उस वास्तविक इतिहास से अनभिज्ञ है।

जो नवीन शोध और तथ्य दुनिया के सामने आए जैसे आर्य भारत के मूल निवासी हैं, सिन्धु घाटी की सभ्यता नहीं यह सरस्वती सिन्धु सभ्यता है, १८५७ का स्वतन्त्रता संग्राम केवल सैनिक विद्रोह नहीं, भारत का स्वतन्त्रता संग्राम था, ये महत्वपूर्ण विषय भारत के पाठ्यक्रमों में नहीं, विदेशों में पढ़ाए तथा बताए जाने लगे हैं। तो क्या यह बिड़मना नहीं है तो क्या है?

इसी बैठक में निदेशक मण्डल के अध्यक्ष श्री विजय मोहन कुमार पुरी जी ने अपनी बात रखते हुए बताया कि इतना मात्र कह देने से सिद्ध नहीं होगा कि मानव की उत्पत्ति भारत वर्ष में हुई है। इसके लिए सही तथ्य और पुखता सबुतों के साथ सिद्ध करना होगा। इसके लिए उस तरह के विद्वानों की खोज शोध संस्थान के लिए आवश्यक है जिन का अध्ययन और चिन्तन उस तरह का हो व वे तथ्यों को सिद्ध करने की क्षमता रखते हों। वहीं इसके लिए पुरानी पाण्डुलिपियों को एकत्र करना

उचित रहेगा। बैठक में पधारे सभी सदस्यों ने अपने-अपने विचारों को रखा और शोध संस्थान को ठाकुर रामसिंह जी के मार्गदर्शन के आधार पर आगे बढ़ाने की योजना बनाई।

माधव भवन के निर्माण का कार्य द्रुत गति से चल रहा था। सरसंघचालक जी से उचित समय लेकर कार्यक्रम को आयोजित करने का निर्णय लिया गया। इस भवन में पुस्तकालय, कार्यालय, पुस्तकभण्डार, संगणक कक्ष, राजा हमीर संग्रहालय, बड़ा सभागार, अभिलेखागार तथा धरातल पर बड़े कार्यक्रमों के लिए भोजनालय की व्यवस्था की गई।

द्वितीय सरसंघचालक पूजनीय श्री माधवराव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी जन्मशताब्दी वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा मनाया जा रहा था। इसी उपलक्ष्य में इस भवन का नाम माधव भवन उन्हीं की स्मृति में रखा गया है। भवन का उद्‌घाटन कार्तिक शुक्ल ५, कलियुगाब्द ५१०८ (२७ अक्तूबर, २००६) को पूजनीय सरसंघचालक माननीय कुप्प. सी. सुदर्शन जी के कर कमलों द्वारा हुआ। इसी में प्रथम राष्ट्रीय परिसंवाद कलियुगाब्द ५१०८, कार्तिक शुक्ल ५,६,७ (२७, २८,२६ अक्तूबर, २००६) को हुआ जिसका विषय था- ''तथाकथित विश्व विजेता सिकन्दर महान् का भारत पर आक्रमण और उसका जम्मू के चन्द्रभागा क्षेत्र में डोगरा वीरों के हाथों मारा जाना।''

अपने का पहचाने। हमारी वर्तमान स्थिति क्या है? क्या हम पूर्व स्थिति से आगे बढ़ रहे हैं या गिरे हुए है? जब तक हम यह नहीं समझ लेते, तब तक हम यह निश्चित नहीं कर सकते कि भविष्य में हमें क्या करना है? अस्पष्टता की स्थिति खत्म होनी चाहिए। हमें वर्तमान में पढ़ाया जाता है— तुम हमेशा गुलाम रहें हो, तुम्हारी कोई उपलब्धि नहीं रही है, तुम्हें हैं जो कुछ भी लेना है, वह सब विदेशियों से लेना है। क्या यह सब पढ़कर हमारा बच्चा उज्ज्वल भविष्य देख सकता है। उसके सामने भारत के उन पक्षों को रखना होगा जिन पक्षों पर भारत ने सदा प्रगति की है और दुनिया को अपने विचारों से प्रभावित किया है। आवश्यकता है कि हम अपने को पहचाने।

कु.पी. सुदर्शन, पू. सरसंघचालक

ये दोनों ही कार्यक्रम यशस्वी रहे। देश भर से आए विद्वानों ने इस राष्ट्रीय परिसंवाद में अपने शोध पत्र पढ़े, जिनमें वास्तविक तथ्यों के आलोक में इस विषय को देखा गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह माननीय सुरेश सोनी जी ने कहा कि सिकन्दर के बारे में भारत में पढ़ाया जाता है कि उसने युद्ध में पुरु को हराया, परन्तु युनानी इतिहासकार लिखते हैं कि युद्ध के आरम्भ में ही पोरस ने सिकन्दर के घोड़े को मार गिराया। सिकन्दर घायल होकर गिर पड़ा। संधि का प्रस्ताव सिकन्दर ने रखा, न कि पोरस ने। उन्होंने कहा कि यहां जो विषय लिया गया है, निश्चित ही इतिहास को नया मोड़ देने वाला सिद्ध होगा। कार्यक्रम के मुख्यअतिथि गोवा के माननीय राज्यपाल श्री केदारनाथ साहनी ने भारत के गौरवशाली इतिहास की चर्चा की जिसका ज्ञान उन्हें सन् १६४४ में मेरठ में हुए संघ शिक्षा वर्ग में पूजनीय श्री गुरुजी के उद्‌बोधन में सुनने को मिला था। उन्होंने बताया कि उस संघ शिक्षा वर्ग से जिससे मेरे जीवन की दिशा ही बदल गई। पूजनीय सरसंघचालक माननीय श्री कुप्प. सी. सुदर्शन जी ने अपने उद्‌बोधन को इन

शब्दों से प्रारम्भ किया – अपने को पहचाने। हमारी वर्तमान स्थिति क्या है? क्या हम पूर्व स्थिति से आगे बढ़ रहे हैं या गिरे हुए है? जब तक हम यह नहीं समझ लेते, तब तक हम यह निश्चित नहीं कर सकते कि भविष्य में हमें क्या करना है? अस्पष्टता की स्थिति खत्म होनी चाहिए। हमें वर्तमान में पढ़ाया जाता है – तुम हमेशा गुलाम रहें हो, तुम्हारी कोई उपलब्धि नहीं रही है, तुम्हें जो कुछ भी लेना है, वह सब विदेशियों से लेना है। क्या यह सब पढ़कर हमारा बच्चा उज्ज्वल भविष्य देख सकता है उसके सामने भारत के उन पक्षों को रखना होगा जिन पक्षों पर भारत ने सदा प्रगति की है और दुनिया को अपने विचारों से प्रभावित किया है। आवश्यकता है कि हम अपने को पहचाने। यह राष्ट्रीय परिसंवाद इस शोध संस्थान का मील का पत्थर सिद्ध हुआ। देश में इस विषय पर नवीन तथ्य सामने आने लगे। संगोष्ठियों एवं परिचर्चाओं के माध्यम से इस मिथ्या इतिहास को ध्वस्त करने की प्रक्रिया आगे बढ़ी। इसी कार्यक्रम में संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान प्रो. दामोदर झा की 'भारत में सृष्टि रचना के बारे में क्या बात करता है', इस विषय पर प्रथम पुस्तक का लोकार्पण हुआ। ठाकुर जी ने एक बार मुझ से चर्चा की कि इन दोनों विषयों को क्यों लिया गया है? उन्होंने बताया कि भारत और विदेशी इतिहासकार जब तक सिकन्दर के मिथ्या भ्रम से बाहर नहीं निकलेंगे तब तक वे भारत के प्राचीन उज्जवल परम्परा और इतिहास को समझने में नाकाम रहेंगे। विदेशी लेखकों के साथ हमारे तथाकथित इतिहासकार ने भी सत्य साक्ष्यों को समझने में नाकाम रहे। दूसरा विषय है सृष्टि रचना। जब हम किसी काम को प्रारंभ करते हैं तो हमें अपने मूल की जानकारी होनी आवश्यक है। हमारा मूल वेद है। वेद सृष्टि के बारे में क्या कहता है? उसे समझना और समझाना आवश्यक है। अतः शोध संस्थान नेरी से जो प्रथम पुस्तक निकले वह सृष्टि रचना के बारे में हो। इसलिए मैंने प्रो. दामोदर झा जी को यह काम करने के लिए दिया था। ये दोनो काम अच्छे से पूरे हो गए हैं।

नेरी शोध संस्थान के चारों और ऊंची-ऊंची पहाड़ियां है। यह राष्ट्रीय स्वाभिमान का केन्द्र कैसे विकसित हो उसके लिए देश के उन महापुरुषों के ऊंची एवं भव्य मूर्तियों का निर्माण हो जिससे हमारी युवा पीढ़ी यह जान सके कि इन महापुरुषों के बलिदानों एवं कुर्बानियों से आज हम स्वतन्त्रा भारत में विश्व के साथ आगे बढ़ रहे हैं। उनमें महाराणा प्रताप, शिवाजी, रानीलक्ष्मी बाई, भक्त सिंह आदि महापुरुष यहां विराजते हों। क्योंकि अभी तक हमारी पाठ्य पुस्तकों में इन महापुरुषों के लिए वह स्थान नहीं मिला है जो मिलना चाहिए। यह अध्ययन का बड़ा केन्द्र बने।

– मा. ठाकुर रामसिंह जी

दिनांक १३-११-२००६ को शोध संस्थान में बैठक हुई, उसमें ठाकुर जी ने कहा कि अब संस्थान में निर्माण कार्य की वर्तमान में अधिक आवश्यकता नहीं है और न ही अभी निर्माण कार्य हाथ में लेने की योजना है। अब लेखन कार्य, पुस्तकालय को व्यवस्थित करना आदि कार्यों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हम इसी दिशा में आगे बढ़ेंगे।

नेरी शोध संस्थान के स्वरूप और इसकी कार्य योजना के बारे ठाकुर जी निरन्तर चिन्तनशील

थे। उनकी यह स्पष्ट दृष्टि थी कि संस्थान के तीनों ओर ऊंची पहाड़ियों पर एक कोरीडोर बनाकर भारतवर्ष के महापुरुषों – महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, रानी लक्ष्मीबाई, भगतसिंह आदि की ऊंची व भव्य मूर्तियों का निर्माण हो जिससे हमारी युवा पीढ़ी यह जान सके कि इन महापुरुषों के बलिदानों एवं कुर्बानियों से आज हम स्वतन्त्र भारत में विश्व के साथ आगे बढ़ रहे हैं। क्योंकि अभी तक हमारी पाठ्य पुस्तकों में इन महापुरुषों के लिए वह स्थान नहीं मिला है जो मिलना चाहिए। यह अध्ययन का बड़ा केन्द्र बने।

११-१२ अगस्त २००७ को शोध संस्थान में बैठक हुई उस में दो विषयों पर विशेष चर्चा हुई। एक राजवंशों का इतिहास और दूसरा सृष्टि रचना पर राष्ट्रीय परिसंवाद। राजवंशों का इतिहास खोजा जाना चाहिए। हिमाचल प्रदेश के राजवंशों की सूची तैयार की जाए इस सारे कार्य का दायित्व श्री दानवेन्द्र जी को दिया गया। मेरे ध्यान में है कि उन्होंने इस काम को कुछ हद तक करने का प्रयास भी किया। दूसरा विषय सृष्टि रचना पर राष्ट्रीय परिसंवाद। सृष्टि रचना पर पुस्तक पूर्व में आ ही गई थी। वह पुस्तक शास्त्रीय अधिक रही। यह एक निरन्तर प्रक्रिया है कि समाजशास्त्री और मानव वैज्ञानिक इन विषयों पर निरन्तर खोज करते रहते हैं और नई-नई जानकारियां मिलती रहती है। जिसको कुछ नया और पूर्व से अधिक पुराना मिल जाता है, वह अपने शोध के आधार पर उसकी डेंटिग करता है। इसी बैठक में राष्ट्रीय परिसंवाद १०,११,१२ मई, २००८ को नेरी में किया जाना निश्चित किया गया। जिसके संयोजक का कार्य डॉ. विद्याचन्द ठाकुर को दिया गया। ठाकुर विद्याचन्द ने ही कहा था कि लोगों को विषय सरल ढंग से समझ आना चाहिए। उसके लिए उन्होंने विषय प्रवेशिक के रूप में एक लघु पुस्तक का प्रकाशन किया। जिसमें नासदीय सूक्त और स्वामी विवेकानन्द जी ने इसी नास्दीय सूक्त को काव्यात्मक करके गाया था। जो ज्ञान नासदीय सूक्त में है वहीं ज्ञान हमारे लोक जीवन के अन्दर अपनी-अपनी भाषा एवं उपक्रमों में विद्यमान है। उस सारे विचार को देश भर से लिया जाए। पुस्तक प्रकाशित कर सब विद्वानों में वितरित की गई जो इस विषय के जानकार थे और जिन्होंने इस विषय पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत करने थे। वैशाख शुक्ल ५,७,८ कलियुगाब्द ५११० (मई, १०,११,१२ सन् २००८) को सर्वप्रथम शोध संस्थान के प्रवेश द्वार का उद्‌घाटन विश्व हिन्दू परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय अशोक सिंघल जी ने किया। प्रसिद्ध पत्रकार एवं लेखक इरविन खन्ना ने शोध संस्थान से प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका ''इतिहास दिवाकर'' का लोकार्पण किया। लोकधुनों

इस शोध संस्थान का लक्ष्य भारतीय परिप्रेक्ष्य में इतिहास लेखन का है। इस देश के इतिहास को विदेशियों ने विकृत कर इस की प्राचीनता आर्यो के आगमन से ३५०० वर्ष पूर्व विधा निर्धारित की है, जबकि इस देश का इतिहास पृथ्वी की उत्पत्ति को लेकर आज तक १९७ करोड़ वर्ष का है। आर्य कहीं बाहर से नहीं आए वे यहीं के मूल निवासी रहे हैं। वे अपने ज्ञान-विज्ञान के आधार पर पूरे विश्व में फैले हैं। अतः सभी राष्ट्रों, सब जातियों, सभी धर्मो और ज्ञान-विज्ञान के शास्त्रों का उद्‌गम स्थान भारत रहा है।

एवं वाद्ययन्त्रों के साथ इस राष्ट्रीय परिसंवाद का प्रारंभ सृष्टि गायन के साथ हुआ। ठाकुर रामसिंह जी ने भूमिका में कहा – इस शोध संस्थान का लक्ष्य भारतीय परिप्रेक्ष्य में इतिहास लेखन का है। इस देश के इतिहास को विदेशियों ने विकृत कर इस की प्राचीनता आर्यों के आगमन से ३५०० वर्ष पूर्व निर्धारित की है, जबकि इस देश का इतिहास पृथ्वी की उत्पत्ति से लेकर आज तक १९७ करोड़ वर्ष का है। आर्य कहीं बाहर से नहीं आए वे यहीं के मूल निवासी रहे हैं। वे अपने ज्ञान-विज्ञान के आधार पर पूरे विश्व में फैले हैं। अतः सभी राष्ट्रों, सब जातियों, सभी धर्मों और ज्ञान-विज्ञान के शास्त्रों का उद्‌गम स्थान भारत रहा है।

डॉ. विद्याचन्द ठाकुर जी ने कहा – ''प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः'' अर्थात् वही व्यक्ति सर्वदर्शी सर्वज्ञान सम्पन्न हो सकता है जो लोक का प्रत्यक्ष दर्शन करता है। इस दृष्टि से लोक परम्परा में प्रचलित सृष्टि रचना विचार हिमाचल प्रदेश के लोक जीवन में जीवन्त रूप में विद्यमान है और देश के अन्य प्रान्तों में भी इस परम्परा का प्रचलन विद्यमान है।

विदेशियों ने भारतीय इतिहास के साथ बहुत बड़ा खिलवाड़ किया है। हमारे धर्म का मजाक उड़ाया है। हमारे देवी-देवताओं को लांछित किया है। हमारे पूर्वजों का भी अपमान किया है। योजनाबद्ध ढंग से संस्कृति के चिन्हों को मिटाने के प्रयत्न किए गए हैं। सेक्युलरवादियों द्वारा राष्ट्र के साथ घृणित अपराध किया जा रहा है। जिस प्रकार का यह शोध संस्थान खुला है, ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता है, उससे हम अपने इतिहास को समझने में सक्षम होंगे।

- स्व. अशोक सिंघल जी
पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष
वि.हि.प.

मुख्यातिथि माननीय अशोक सिंघल जी ने कहा – विदेशियों ने भारतीय इतिहास के साथ बहुत बड़ा खिलवाड़ किया है। हमारे धर्म का मजाक उड़ाया है। हमारे देवी-देवताओं को लांछित किया है। हमारे पूर्वजों का भी अपमान किया है। योजनाबद्ध ढंग से संस्कृति के चिन्हों को मिटाने के प्रयत्न किए गए हैं। सेक्युलरवादियों द्वारा राष्ट्र के साथ घृणित अपराध किया जा रहा है। जिस प्रकार का यह शोध संस्थान खुला है, ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता है, उससे हम अपने इतिहास को समझने में सक्षम होंगे।

इतिहास में विभाजन रेखा – महाभारत से पौष कृष्ण १, कलियुगाब्द ५११०, दिनांक १३-१२-२००८, ठाकुर रामसिंह जी ने इस निदेशक मण्डल की बैठक इतिहास की कालावधि को इतिहास लेखन सुविधा के लिए महाभारत काल को एक विभाजक रेखा के रूप में संकेतित किया जिससे एक महाभारत से पूर्व का इतिहास और दूसरे महाभारत से लेकर ५११० वर्ष का इतिहास। महाभारत के समाप्ति पर कलियुग प्रारम्भ हो गया। यह हमारा काल का विभाजन है, न कि प्राचीन काल मध्यकाल और वर्तमान काल जैसे शब्दों से हम अपने काल का विभाजन करेंगे। महाभारत कालीन इतिहास लेखन का कार्य गाजियाबाद के लेखक डॉ. हमेन्द्र राजपूत को दिया गया है। उन्होंने ठाकुर रामसिंह द्वारा दिए गए कार्य को २०१५ को ठाकुर जी की जन्मशताब्दी पर पूरा किया। उसी

बैठक में ठाकुर जी ने कुछ कार्य की जिम्मेवारियां भी निर्धारित की थी। डॉ. ओम प्रकाश शर्मा महाभारत से पूर्व के इतिहास कार्य को देखेंगे। डॉ. विद्याचन्द ने इस विभााजन को तीन हिस्सों में करने का सुझाव दिया – १. आदिकाल से महाभारत तक, २. महाभारत काल और ३. महाभारत से अद्यावधि। इसी बैठक में हिमाचल प्रदेश को संगठनात्मक दृष्टि से कार्य की सुगमता के लिए चार भागों में विभक्त कर लिया गया - कुल्लू, शिमला, हमीरपुर और कांगड़ा भाग।

विश्व गुरु भारत ग्रन्थमाला का कार्य डॉ. ओम प्रकाश को दिया गया। इस के अन्तर्गत युगपुरुष परशुराम का चरित लेखन का कार्य उन्हें सौंपा गया। कटोच वंश के राजा हमीर चन्द कटोच पर पुस्तक लिखने का कार्य डॉ. रमेश शर्मा को दिया गया। इसी बैठक में शोध संस्थान को वैचारिक दृष्टि से विस्तार देने के लिए समवैचारिक संस्थाओं से सम्बन्धता प्राप्त करने की बात हुई। त्रिगर्त क्षेत्र की कटोच वंश परम्परा गत १० हजार वर्ष से अक्षुण्ण रही है। यह एक ऐतिहासिक शोध का विषय है। भविष्य में इस पर काम किए जाने की आवश्यकता है। सम्भावित योजना वर्ष २००६ के मई मास में किए जाने चर्चा की गई। निश्चित तिथि का निर्धारण आगे किया जाएगा।

इतिहास घटित होता है निर्देशित नहीं। जबकि आधुनिक रूप में लिखित भारत का इतिहास निर्देशित है। इतिहास यह राष्ट्र की मजबूती के लिए रीढ़ जैसा है। स्वतन्त्रता सेनानी विनायक दामोदर सावरकर जी ने कहा है – जिस राष्ट्र को अपने अतीत के सम्बन्ध में ही वास्तविक ज्ञान नहीं उसका भविष्य भी नहीं होता। अपने पूर्वजों को कृतियां सुनकर नयी पीढ़ी के युवा उनसे शिक्षा लेकर ज्ञान, विज्ञान, साहित्य आदि क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। बलोपासना से राष्ट्र के संरक्षण में साहस और शौर्य प्रगट करते हैं और राष्ट्र स्वाभिमान से खड़ा रहता है। परकीय आक्रमणों ने हमारे इतिहास में काफी हेर-फेर किए हैं, भारत की तेजस्विता को नष्ट करने का प्रयत्न किया है, ताकि राष्ट्र जागृत होकर उनकी सता को चोट न पहुंचाये। तथापि यह राष्ट्र आज जागृत हो रहा है। अतः इतिहास के स्फूर्तिदायी प्रसंगों के सत्यान्वेषण को जनता के सामने प्रस्तुत करना अति आवश्यक है।

पू. सरसंघचालक, मा. मोहनराव भागवत जी,
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

विशेष साधारण सभा का आयोजन – राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रतिनिधि सभा में वर्ष २००६ में पूजनीय सरसंघचालक का दायित्व माननीय मोहन राव भागवत जी के पास आ गया। हिमाचल प्रदेश में उनका प्रवास पूर्व निश्चित था। इस निमित शोध संस्थान में विशेष साधारण सभा का आयोजन किया गया। पूरे देश भर से इस साधारण सभा में ४० विद्वानों ने भाग लिया। श्रद्धेय ठाकुर रामसिंह जी ने शोध संस्थान की निर्माण गाथा और ध्येय पथ एवं दिशा-निर्देश लिखी जिस का लोकार्पण परम पूजनीय सरसंघचालक जी के करकमलों द्वारा हुआ। भागवत जी ने कहा – इतिहास घटित होता है निर्देशित नहीं। जबकि आधुनिक रूप में लिखित भारत का इतिहास निर्देशित है। इतिहास यह राष्ट्र की मजबूती के लिए रीढ़ जैसा है। स्वतन्त्रता सेनानी विनायक दामोदर सावरकर जी ने कहा है – ''जिस राष्ट्र को अपने अतीत के सम्बन्ध में ही वास्तविक ज्ञान नहीं'' उसका भविष्य भी नहीं होता। अपने पूर्वजों की कृतियां सुनकर

नयी पीढ़ी के युवा उनसे शिक्षा लेकर ज्ञान, विज्ञान, साहित्य आदि क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। बलोपासना से राष्ट्र के संरक्षण में साहस और शौर्य प्रगट करते हैं और राष्ट्र स्वाभिमान से खड़ा रहता है। परकीय आक्रमणों ने हमारे इतिहास में काफी हेर-फेर किए हैं, भारत की तेजस्विता को नष्ट करने का प्रयत्न किया है, ताकि राष्ट्र जागृत होकर उनकी सत्ता को चोट न पहुंचाये। तथापि यह राष्ट्र आज जागृत हो रहा है। अतः इतिहास के स्फूर्तिदायी प्रसंगों के सत्यान्वेषण को जनता के सामने प्रस्तुत करना अति आवश्यक है। हम कदम से कदम मिलाकर चलें। सबको साथ लेकर चले तभी हम अपेक्षित दिशा की ओर बढ़ने में सक्षम होंगे। उन्होंने आगे कहा – इतिहास केवल घटनाओं का इतिवृत्त न होकर, इतिहास समाज को सद्प्रेरणा देने का काम करता है। हम राजाओं एवं इतिहास की घटनाओं पर ही प्रकाश नहीं डालते बल्कि अपने प्रचीन वेदों, पुराणों से उन तथ्यों को समय-समय पर जागृत (उद्धृत) करते रहते हैं जो सम्पूर्ण मानव एवं जीव जगत के लिए हितकर होते हैं। यही हमारी इतिहास परम्परा रही है। ठाकुर रामसिंह जी ने इस वयोवृद्धावस्था में इस प्रकार का संस्थान खड़ा किया है, यह हम सब एक प्रेरणा का बिन्दु है। सरसंघचालक जी ने कहा कि – कोई भी संस्थान बहुत अधिक विषयों पर न जाकर कुछ विशेष विषयों पर ही काम कर सकता है। उस दृष्टि से संस्थान की योग्य टोली तथा विद्वान लोग इस बात को तय करेंगे। यह शोध संस्थान के लिए पूजनीय सरसंघचालक का पाथेय रहा। २१ मार्च २००५ को सरकार्यवाह होते हुए इन्होंने यहां के प्रथम भवन का लोकार्पण किया था। आज संघ के सर्वोच्च अधिकारी के नाते पधारे थे। हमारा सौभाग्य रहा कि सरसंघचालक के दायित्व के नाते उनका हिमाचल के लिए प्रथम प्रवास था। इन्हें प्रथम सरसंघचालक प्रणाम यहां नालन्दा बी.एड.कॉलेज में किया गया, जिसमें प्रदेश भर के कार्यकर्ता पधारे हुए थे। ठाकुर साहब ने शोध संस्थान की निर्माण गाथा एवं ध्येय पथ तथा दिशा निर्देश लिख कर शोध संस्थान के भविष्य की दिशा निर्धारित कर दी है। हमें कहा जाना है और कैसे चलना है। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहते हुए उन्होंने एक-एक विषय का गहराई से अध्ययन किया था। इसके लिए कार्यकर्ता भी खड़े किए थे। आज वे सब अपने-अपने स्थानों पर काम कर रहे हैं। यह एक सामूहिक कार्य दर्शन है, व्यक्तिवादी नहीं। व्यक्ति उस दर्शन का प्रेरक बिन्दू है। ठाकुर जी ने कभी नहीं कहा कि यह मेरा चिन्तन है। इस विषय के लिए हम सब के प्रेरक माननीय बाबा साहिब आप्टे रहे हैं। उन्हीं से प्रेरणा लेकर माननीय मोरोपन्त पिंगले जी ने काम को दिशा दी है। हम लोगों को व्यहवहारिक रूप से धरातल पर उतारने का सौभाग्य हमें मिला है। ऐसे उदार मनः ठाकुर रामसिंह का चिन्तन हमें सदैव देखने को मिला है।

इतिहास केवल घटनाओं का इतिवृत न होकर, इतिहास समाज को सद्प्रेरणा देने का काम करता है। हम राजाओं एवं इतिहास की घटनाओं पर ही प्रकाश नहीं डालते बल्कि अपने प्रचीन वेदों, पुराणों से उन तथ्यों को समय-समय पर उजाग्रित (उद्धित) करते रहते हैं जो सम्पूर्ण मानव एवं जीव जगत के लिए हितकर होते हैं।

पू. सरसंघचालक, मा. मोहनराव भागवत जी,
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

निदेशक मण्डल ने शोध संस्थान के संविधान का प्रारूप तैयार करने हेतु एक समिति का गठन किया। लेकिन ठाकुर जी ने ही इसका प्रारूप तैयार किया जिसे संस्थान के सचिव प्रेम सिंह भरमौरिया ने इसके अनुमोदन हेतु निदेशक मण्डल की बैठक में प्रस्तुत किया। निदेशक मण्डल द्वारा इस का अनुमोदन हो जाने पर संस्थान के शीघ्र ही पंजीकरण हेतु कार्य तेज हो गया। मैंने इस संविधान को कभी गंभीरता से नहीं पढ़ा। क्योंकि ठाकुर जी के रहते इसकी कभी आवश्यकता नहीं पड़ी। परन्तु ठाकुर जी के स्वर्गारोहणापरान्त के उपरान्त निश्चित रूप से उसे पढ़ने व समझने की आवश्यकता पड़ी।

सुजानपुर में राष्ट्रीय परिसंवाद

जिला हमीरपुर के ऐतिहासिक नगर सुजानपुर में ''अलंकार मार्तण्ड महाराजा संसार चन्द और उनका युग'' विषय पर कार्तिक शुक्ल १३,१४,१५ कलियुगाब्द ५१११, तदनुसार सन् अक्तूबर ३१, नवम्बर १, २, सन् २००६ को तीन दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। इस परिसंवाद के उद्घाटन सत्र समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. प्रेम कुमार धूमल, माननीय मुख्यमन्त्री हिमाचल प्रदेश रहे तथा सांसद श्री शान्ता कुमार ने इस समारोह की अध्यक्षता की। भारत में मंगोलिया के राजदूत महामहिम बोरोशिलोव ऐंखबोल्ड इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए।

इस पृथ्वी पर प्रथम मानवोत्पत्ति से लेकर १० हजार वर्ष तक भारत के इतिहास का आदि काल खण्ड 'देवयुग' है। इसमें देवताओं के तीन साम्राज्य थे। १. श्री ब्रह्मा जी का विश्व का प्रथम आध्यात्मिक और शैक्षिक साम्राज्य जिसकी राजधानी सुमेरू पर्वत पर मनोवती थी। २. महादेव का साम्राज्य जिसकी राजधानी कैलाशपुरी थी और तीसरा साम्राज्य विष्णु का था। उसकी राजधानी बद्रीनारायण के उत्तार में मंगोलिया के निकट विष्णुपुरी थी। विष्णु योग का अभ्यास करने के लिए क्षीर सागर पार चले गए और उनकी अनुपस्थिति में साम्राज्य की देखभाल उनका सुपुत्र मंगल करता था। मंगल ने अपने नाम पर मंगोलिया के राज्य की स्थापना की। उन्होंने दूसरा राज्य प्राग्ज्योतिषपुर (असम) में स्थापित किया और तीसरा कांगड़ा की पहाड़ियों में। अतः इस प्रकार सब मंगोल विष्णु की संतान है। उस युग में न ईसाईयत थी और न ही इस्लाम और सारा विश्व वैदिक सांस्कृतिक साम्राज्य के अन्तर्गत था।

- मा. ठाकुर रामसिंह जी

इस अवसर पर शोध संस्थान, नेरी के संस्थापक संरक्षक श्रद्धेय ठाकुर रामसिंह जी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मानव की उत्पत्ति भारत में हुई। उन्होंने बताया कि १९७ करोड़ वर्ष पूर्व हिमालय में विद्यमान सुमेरू पर्वत पर पहली मानव सभ्यता पनपी थी। पृथ्वी के पहले राजा ब्रह्मा जी थे और मनुवति उनकी राजधानी थी। ठाकुर रामसिंह जी ने कहा कि नेरी शोध संस्थान का उद्देश्य इतिहास पर पड़े पर्दे को हटाना है। प्रथम मानव उत्पत्ति से लेकर वर्तमान तक भारत का इतिहास लेखन हमारा उद्देश्य है। शोध संस्थान में अक्तूबर, नवम्बर में सुजानपुर में हुआ अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद विशेष महत्व रखता है। ठाकुर जी ने कहा – तारीख-ए-राजगाने कदीम आर्यवर्त'' पुस्तक के लेखक विख्यात इतिहास वेता और महाविद्वान ठाकुर नगीना राम अपनी इस

पुस्तक में लिखते हैं कि कटोच वंश का प्रवर्तक भूमि चन्द्र १० हजार वर्ष पूर्व मंगोलिया से भारत आया था। इस तथ्य का अनुसंधान करने के लिए भारतीय इतिहास के आदियुग (देवयुग) तक जाना आवश्यक है। इस पृथ्वी पर प्रथम मानवोत्पत्ति से लेकर १० हजार वर्ष तक भारत के इतिहास का आदि काल खण्ड 'देवयुग' है। इसमें देवताओं के तीन साम्राज्य थे। १. श्री ब्रह्मा जी का विश्व का प्रथम आध्यात्मिक और शैक्षिक साम्राज्य जिसकी राजधानी सुमेरू पर्वत पर मनोवती थी। २. महादेव का साम्राज्य जिसकी राजधानी कैलाशपुरी थी ३. तीसरा साम्राज्य विष्णु का था। उसकी राजधानी बद्रीनारायण के उत्तर में मंगोलिया के निकट विष्णुपुरी थी। विष्णु योग का अभ्यास करने के लिए क्षीर सागर पार चले गए और उनकी अनुपस्थिति में साम्राज्य की देखभाल उनका सुपुत्र मंगल करता था। मंगल ने अपने नाम पर मंगोलिया के राज्य की स्थापना की। उन्होंने दूसरा राज्य प्राग्ज्योतिषपुर (असम) में स्थापित किया और तीसरा कांगड़ा की पहाड़ियों में। अतः इस प्रकार सब मंगोल विष्णु की संतान है। उस युग में न ईसाईयत थी और न ही इस्लाम। सारा विश्व वैदिक सांस्कृतिक साम्राज्य के अन्तर्गत था। अतः मंगोलिया के साथ हमारा पुराना सम्बन्ध है। वहां आज भी गंगाजल का पूजन होता है। उनकी भाषा में संस्कृत के बहुत शब्द हैं। आजकल भारत में मंगोलिया का जो राजदूत है वह संस्कृत का विद्वान् है। भारत का जो राजदूत मंगोलिया में है उसका कहना है कि भारत के बारे में मंगोलिया को जितनी जानकारी है उतनी किसी अन्य देश को नहीं है। अतः कटोच वंश के प्रवर्तक भूमि चन्द्र का मंगोलिया से भारत आना तर्कसंगत लगता है। कुछ इतिहासकारों का मत है कि भूमिचन्द्र की उत्पत्ति से राजपूत नस्लें तीन वंशों में विभक्त को गयीं – भूमि चन्द्र वंश, चन्द्र वंश और सूर्य वंश। भूमि चन्द्र Earth Born (भूमि से उत्पन्न), चन्द्र वंश Moon Born (चन्द्र से उत्पन्न) और सूर्य वंश Sun Born (सूर्य से उत्पन्न) – इस प्रकार इन तीनों राजवंशों को Mythology (मिथक) में धकेल दिया है। भूमि चन्द्र जमीन से पैदा नहीं हुए। कटोच वंश की स्थापना वैवस्वत मन्वन्तर के २८वें महायुग के द्वापर में हुई थी। अतः इन तीनों वंशों को एक साथ मिलाना गलत है।

भारत मंगोलिया के लिए एक पवित्र देश है। मंगोलिया देश की प्रगति में भारत के योगदान और मंगोलिया देश के भारत के साथ अच्छे सम्बन्धों की भी उन्होंने अपने उद्‌बोधन में चर्चा की। विष्णु पुत्र मंगल द्वारा मंगोलिया देश को बसाने तथा पूर्व में मंगोलिया देश के किसी पूर्वज द्वारा कटोच वंश की स्थापना के संदर्भ में ठाकुर रामसिंह द्वारा उठाए गए अपने शोध के पक्षों पर चर्चा करते हुए राजपूत ने विशेष रूचि दिखाई।

- बारोशिलोव एखंबोल्ड

भारत मंगोलिया के लिए एक पवित्र देश है

समारोह के विशिष्ट अतिथि मंगोलिया के राजदूत बोरोशिलोव एंखबोल्ड ने अपने उद्‌बोधन में अपने देश के भौगोलिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पक्षों पर विचार रखे। उन्होंने कहा कि भारत मंगोलिया के लिए एक पवित्र देश है। मंगोलिया देश की प्रगति में भारत के योगदान और मंगोलिया

देश के भारत के साथ अच्छे सम्बन्धों की भी उन्होंने अपने उद्‍बोधन में चर्चा की। विष्णु पुत्र मंगल द्वारा मंगोलिया देश को बसाने तथा पूर्व में मंगोलिया देश के किसी पूर्वज द्वारा कटोच वंश की स्थापना के संदर्भ में ठाकुर रामसिंह द्वारा उठाए गए अपने शोध के पक्षों पर चर्चा करते हुए राजदूत ने विशेष रूचि दिखाई और कहा कि इतिहास के ये प्रसंग दोनों देशों की मित्रता और उन्नति में विशेष सहायक होंगे तथा इस पर तथ्यपरक शोध होना चाहिए। उन्होंने समारोह के विशिष्ट अतिथि बनाए जाने पर आयोजकों का धन्यवाद किया।

स्मारिका एवं पुस्तकों का लोकार्पण

उद्‍घाटन समारोह में परिसंवाद से सम्बन्धित शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित स्मारिका का लोकार्पण किया गया तथा डॉ. ओम प्रकाश शर्मा की पुस्तक 'संस्कृत साहित्य का हिमाचल को योगदान', राजस्थान के डॉ. ओमप्रकाश गर्ग 'मधुप' की पुस्तक 'अग्रवंशकर्तार का युग' और श्री गोपाल शर्मा शास्त्री की पुस्तक 'हिमाचल प्रशसित (नवम भाग) कुल्लू काव्य' का भी लोकार्पण किया गया।

इतिहास लेखन कार्यशाला

ज्येष्ठ शुक्ल ८, कलियुगाब्द ५१११ (ई. सन् ३१ मई, २००९) को ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी में 'इतिहास लेखन की विधि एवं दिशा' पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में शोध संस्थान के मार्गदर्शक श्रद्धेय ठाकुर रामसिंह जी ने कहा कि ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान ने दुनिया को तथ्यों पर आधारित भारत का गौरवशाली इतिहास बताने की जिम्मेवारी स्वीकार की है। शोध संस्थान से जुड़े लेखकों तथा शोधार्थियों का १९७ करोड़ वर्ष के इतिहास का पुनर्लेखन करना है। उन्होंने बताया कि १९७ करोड़ वर्ष पूर्व सर्वप्रथम सुमेरू पर्वत पर सृष्टि रचना हुई और यह हमारी आदि पुरुष ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पावन भूमि है। आज खेद की बात यह है कि भारतीय शोधार्थियों से अधिक यूरोपीय शोधकर्ता इस विषय पर भारत में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि संस्कृत विश्व की सब भाषाओं की जननी होने के बावजूद भारत में ही उपेक्षित है। एक समय था जब यूरोपीय इतिहासकार यह आरोप लगाते थे कि भारत में इतिहास लेखन की दृष्टि ही नहीं है, मगर यह सरासर झूठ था। जितनी पुरानी इतिहास लेखन और पठन की परम्परा भारतवर्ष में है पाश्चात्य जगत उसकी तो कल्पना भी नहीं कर सकता। महर्षि वेदव्यास ने इतिहास को पंचम वेद कहा है। उन्होंने आगे बताया कि रामायण, महाभारत, भागवत पुराण आदि क्या भारत का इतिहास नही है? मैकाले के मानस पुत्रों ने इस देश के इतिहास को विकृत किया है, उसे हमें तथ्यों के साथ भारतीय पद्धति से

> **ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान ने दुनिया के तथ्यों पर आधारित भारत का गौरवशाली इतिहास बताने की जिम्मेवारी स्वीकार की है। शोध संस्थान से जुड़े लेखकों तथा शोधार्थियों को १९७ करोड़ वर्ष के इतिहास का पुनर्लेखन करना है।**
>
> **- मा. ठाकुर रामसिंह जी**

लिखने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि किसी भी देश के शासनाध्यक्ष या प्रशासक के लिए यह जानना नितान्त आवश्यक है कि उसके देश का इतिहास क्या है? उसकी सीमाएं कहां से आरम्भ होती हैं तथा कहां पर जाकर समाप्त होती है। उन्होंने रहस्योद्घाटन किया कि मंगोलिया निवासी आज भी गंगा जल का पूजन करते हैं। इस बात की पुष्टि संम्बन्धित राष्ट्र के राजदूत ने गत वर्ष सुजानपुर टीहरा में आयोजित कार्यक्रम के दौरान की थी। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान चीन के लोगों को लोहे के एक बन्द बक्से से मनुस्मृति प्राप्त हुई थी जिससे इस बात का आभास हुआ था कि वहां चन्द्रवंशी राजा भारत से आया था।

साइबेरिया में हिन्दू देवी देवताओं की प्रतिमा मिलना, रूस की भाषा में ४० प्रतिशत हिन्दी भाषा का समावेश होना और सिंगापुर का नाम शृंगापुर होना इस बात को प्रमाणित करता है कि प्राचीन भारत की सीमाएं सिंगापुर, साइबेरिया तथा अफगानिस्तान तक फेंली थी, जोकि कालान्तर में देश के शासकों में इतिहास के ज्ञानाभाव के कारण सिकुड़कर यहां तक आ पहुंची हैं। ठाकुर रामसिंह ने कहा कि अगर देश के प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहर लाल नेहरू तत्कालीन रक्षा मन्त्री कृष्णा मैनन के कहने के अनुसार न चलते तथा हिन्दी चीनी भाई-भाई का राग न अलापते तो चीन १९६२ में भारत पर आक्रमण करने की हिम्मत न करता। इस सब सरकार की ही दिशाहीन विदेश नीति के कारण ही यह युद्ध में भारत को चीन के हाथों पराजय का शिकार होना पड़ा। विक्रमी संवत् नववर्ष पर शोध संस्थान की ओर शिमला गेयटी थियेटर में भाषा, कला और संस्कृत विभाग की ओर से कार्यक्रम आयोजित किया गया था। मुझे नेरी के कार्यक्रम में रहना था और ठाकुर जी को शिमला कार्यक्रम में जाना था। उन्होंने मुझे कहा, ''तुम मुझे बस स्टैंड छोड़ दो मैं बस द्वारा चला जाऊंगा। शिमला में मुझे रोहताश जी ले लेंगे। दिन में मुझे कोई तकलीफ नहीं है। मैंने उन्हें खुद शिमला छोड़ने या किसी कार्यकर्ता से छुड़वाने की बात की। इसके लिए बे बिल्कुल मना कर गए। साफ इन्कार कर गए। उन्हें ४-५ दिन शिमला रहना था। वहीं से दिल्ली चले जाना था। मैं पूरी तैयारी से उन्हें शिमला बस स्टैंड छोड़ने गया। रास्ते में बड़े प्यार से कहा - तेरी गाड़ी क्या सरकारी गाड़ी से बड़ी है? वह भी तो शिमला ही जाएगी। मुझे शिमला से दिल्ली जाना है। जरूरत होती तो मैं कहता। चलों मैंने उन्हें बस में बिठाया। रोहिताश जी को दूरभाष कर दिया। मेरा मन तब तक अटका

किसी भी देश के शासनाध्यक्ष या प्रशासक के लिए यह जानना नितान्त आवश्यक है कि उसके देश का इतिहास क्या है? उसकी सीमाएं कहां से आरम्भ होती हैं तथा कहां पर जाकर समाप्त होती है। उन्होंने रहस्योद्घाटन किया कि मंगोलिया निवासी आज भी गंगा जल का पूजन करते हैं। इस बात की पुष्टि संम्बन्धित राष्ट्र के राजदूत ने गत वर्ष सुजानपुर टीहरा में आयोजित कार्यक्रम के दौरान की थी। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान चीन के लोगों को लोहे के एक बन्द बक्से से मनुस्मृति प्राप्त हुई थी जिससे इस बात का आभास हुआ था कि वहां चन्द्रवंशी राजा भारत से आया था।

- मा. ठाकुर रामसिंह जी

रहा जब तक ठाकुर जी के शिमला पहुंचने पर रोहिताष जी का दूरभाष न आ गया। मेरे लिए ठाकुर जी एक बहुत संदेश था कि हमें साधनों के गुलाम नहीं होना है। ९६ वर्ष की आयु में भी उनकी इच्छा शक्ति बड़ी थी। दिल्ली जाने के लिए उन्हें ऊना ट्रेन में बिठाना होता था। थ्री टायर एसी से अधिक कभी टिकट लेने नहीं देते थे। शिमला में उनका कार्यक्रम बहुत अच्छा रहा।

दिल्ली से वे नेरी आए। संग्रहालय के लिए इन दिनों तेजगति से काम चल रहा था। भारतीय कालगणना का एक दृश्यमान चित्र समाज के सामने आ सके, ऐसी उनकी योजना थी। डॉ. ओम प्रकाश शर्मा जी को उसके लेखन का कार्य दिया गया था। वे भी उसी गति से उस कार्य को कर रहे थे। जिस प्रकार की व्यवस्था वे चाहते थे श्री अश्वनी शर्मा उसी प्रकार से काम कर रहे थे। इस सारे में डॉ. विद्याचन्द ठाकुर एक संशय में थे – ठाकुर जी यह सब कह तो रहे हैं, पर इसमें अभी और अध्ययन की आवश्यकता है। मात्र हम चित्रों पर निर्भर नहीं रह सकते। खैर वह काम चल रहा था।

यह घटना जून मास के जून के बाद की है। ४ जून के बाद की। मैं और ठाकुर जी नेरी में थे। रसोईया राकेश कुमार रसोई में अपना काम कर रहा था। ठाकुर जी को संग्रहालय में चल रहे कार्य के विषय में ठेकेदार शेर सिंह से कुछ बात करनी थी। प्रेम सिंह भरमौरिया और शेर सिंह दोनों संस्थान आए। बातचीत हुई। ठाकुर जी इस काम को जल्दी करवाना चाहते थे। प्रेम सिंह भरमौरिया ने ठाकुर जी को कहा – ठाकुर जी चिन्ता मत करो। यह काम जल्द हो जाएगा। आज वे कुछ अधीर भी लग रहे थे। मना करने पर भी भरमौरिया और शेर सिंह को साथ लेकर वे माधव भवन की ओर चले। अभी उन्होंने एक पौढ़ी चढ़ी थी कि इतने जोर से वे आगे से पिछे की ओर हवा में लुड़के जैसे कि किसी ने उन्हें उठाकर फैंका हो। वे नीचे तो नहीं गिरे क्योंकि शेर सिंह बिल्कुल साथ थे। उन्होंने ठाकुर जी को संभाल लिया। ऐनक भरमौरिया के साथ आई। ठाकुर जी की सांस फूल रही थी। लेकिन फिर भी हाथ पकड़ कर उत्तम देवी कपूर भवन में आ गए। डॉक्टर को बुलाया गया। चेकअप हुआ। भरमौरिया जी उन्हें अपने घर ले गए। अक्सर भरमौरिया जी के घर उनका रहना होता था। पूरा परिवार बड़े प्रेम में ठाकुर जी की सेवा में जुट जाता था। दो-तीन दिन में वे सामान्य हो गए। ७ जून को फिर उनका स्वास्थय बिगड़ा गया। उस दिन मैं किसी काम से शिमला गया हुआ था। भरमैारिया जी ने उन्हें हमीरपुर जिला अस्पताल में भर्ती करवा दिया और मुझे दूरभाष से सूचित किया। दूसरे दिन हमने संगठन के वरिष्ठ अधिकारियों से सारी चर्चा के बाद यह तय किया गया कि ठाकुर जी को लुधियाना में ले जाना है। यह सारा काम प्रान्त कार्यवाह श्री चेतराम कर रहे थे। वे साथ थे। हृदय सम्बन्धी कुछ दिक्कत थी। वहां डॉ. कुंभ करणी सारा चिकित्सीय व्यवस्था देख रहे थे। दो कार्यकर्ता हमेशा हिमाचल से और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति लुधियाना के कार्यकर्ता देख रहे थे। पूजनीय सरसंघचालक माननीय मोहनराव भागवत जी ने भी उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली। जितनी आवश्यकता थी उसी के हिसाब से लोगों को मिलने की अनुमति थी। ठाकुर जी के खाने में कोई पहरेज न था। डॉक्टरों का कहना था – इस आयु में जो मांगे वह देना चाहिए। दो दिन बाद हम चार लोग श्री भूमिदत शर्मा,

अश्वनी शर्मा, पीसी वर्मा और मैं उनसे अस्पताल में मिले। सब से बड़ी तसल्ली से बात हुई। हर विषय वे हर काम पर विचार हुआ। ठाकुर जी मुझ से कभी कोई नीजि काम नहीं करवाते थे। राकेश जी उनके निजी कार्य देखते थे। जब कहीं बाहर जाना होता था तो मैं ठाकुर जी के साथ जाता था। पकौड़े ठाकुर जी खूब पसन्द करते थे। कुरकुरे भी उनकी पसन्द थी। शाम के समय संगणक कक्ष से आकर ये काम हम इकट्ठा किया करते थे।

सब उपचार होने के बाद सब का यह निर्णय था कि ठाकुर जी को नेरी के काम से दूर रखा जाए ताकि इन्हें विश्राम मिले। उन्हें बता दिया गया कि डॉक्टरों की सलाह है कि आप को कुल्लू जैसे शान्त वातावरण में कुछ दिनों के रहने की आवश्यकता है। लेकिन ठाकुर जी का मन तो नेरी में था। काम देखना है। अतः यह तय हुआ कि नेरी होते हुए कुल्लू जाएंगे।

अस्पताल से छुट्टी होने के बाद वे लुधियाना में सुशील के घर में ठहरे। वहीं लोग मिलने के लिए आते थे। सुशील जी की पत्नी बड़ी सौम्य, सुशील व सेवाभाव वाली स्त्री है। ठाकुर जी ने २ जुलाई को लुधियाना से चलना था। इसलिए हीरो हार्ट के डॉक्टरों की टीम ठाकुर जी से मिलने आई। चाय पान हुआ। एक छोटा और सारगर्भित वक्तव्य दिया - मुझे उम्मीद नहीं थी कि मैं यहां से स्वस्थ होकर वापिस जाऊंगा। आयु का भी तकाजा है। पर तुम सब की मेहनत और उपचार के कारण मैं ठीक हो गया हूं। ठाकुर जी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में भी चर्चा हुई। सभी प्रणाम करके २ घण्टे बैठकर विदा हुए। प्रातः हम सब लोगों ने दो गाड़ियों में नेरी के लिए प्रस्थान किया। ठाकुर जी से अधिक बात करने के लिए मना था। ४ बजे के करीब हम नेरी पहुंचे। डॉ. ओम प्रकाश शर्मा जी को बुलाया गया। संग्रहालय के पूरे प्रारूप के बारे में चर्चा हुई। दूसरे दिन प्रातः ६.३० बजे हवन रखा गया था। ठाकुर जी माधव भवन नहीं गए। सब को काम सौंपा और दोपहर भोजन के बाद कुल्लू रवाना हो गए। कुल्लू में रामसिंह के घर उनके रहने की व्यवस्था थी। कुल्लू में ठाकुर जी रामसिंह के घर पर ही आवास करते थे। रामसिंह के पिता स्वयंसेवक थे। सेवा का वातावरण तो उस घर में भी सुशील जी के परिवार की तरह रहता था। २० अगस्त को मैं पुनः ठाकुर जी से मिलने कुल्लू गया। संस्थान के काम के बारे में अच्छी बातचीत हुई। सारी प्रगति को सुनकर प्रसन्न हुए। मुझे उसी दिन वापिस भी आना था पर ठाकुर जी को छोड़ने का मन नहीं हुआ। रात को वहीं रुक गया। सुबह नाश्ता-पानी कर और ठाकुर जी को प्रणाम कर मैं आ गया। मुझे ठाकुर जी का स्वास्थ्य ठीक न लगा। उन्होंने जिस तरह से मुझे विदाई दी मैं मन ही मन उस दिव्य आत्मा के प्रति शंकित था कि क्या ठाकुर जी के पुनः दर्शन होंगे सकेंगे? दवाईयां का सेवन अधिक था और पानी कम पी रहे थे। सूखी झाग अन्दर से थूक के रूप में निकल रही थी। २६ अगस्त को उनकी तबीयत खराब हुई और उन्हें लुधियाना ले जाया गया। सब ठीक होने के बाद भी ५ सितम्बर को प्रेम सिंह भरमौरिया का दूरभाष लुधियाना से आया। अब ठाकुर जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मुझे आज यहां से भेज दिया है। कहने को कुछ नहीं था। सब देखना और सुनना ही था। दूसरे दिन शाम ५.३० बजे लुधियाना से दूरभाष आया - ठाकुर जी का शरीर शान्त

हो गया है। चुप सुनसान। फोन खड़कने लगे। पूरे प्रदेश, दिल्ली, आसाम गोवाहाटी, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा। रात काटनी मुश्किल हो गई। नींद कहीं थी नहीं। कल का इन्तजार था। रात भर किताब पढ़ता रहा। ध्यान तो बांटना था और तो कुछ था नहीं। दिमाग में नेरी आने से लेकर पूरी की पूरी रील घूमती थी। ७ सितम्बर को सारे लोग जुटते गए। २ बजे तक सभी वहां पहुंच गए। ठाकुर जी के अन्तिम दर्शन के लिए कतारे लगी हुई थी। तीन बजे उनके पैतृक गांव झण्डवीं चले गए। मुझे तो सबसे अन्त में नेरी से प्रस्थान करना था। २-३ कार्यकर्ता मेरे साथ चलने को रूक गए। आगे के शब्दों को लिखना कितना आवश्यक है यह मैं नहीं जानता। ठाकुर जी के साथ अक्तूबर २००५ से सितम्बर २०१० पांच वर्ष का समय मेरे पूर्व जन्म के सतकर्मों का ही कुछ परिणाम था। उनका ओज, उनका तेज, कर्मठता, अनुभव, दृढ़ता, विश्वास, धैर्य, निर्णय लेने की क्षमता, प्यार अतुलनीय था। आज हम सुनसान थे। खाली थे। जो व्यक्ति ८८ वर्ष की आयु में शोध संस्थान की नींव रखने का सामर्थ्य रखता था और ९६ वर्ष की आयु में अपनी आंखों के सामने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों को सम्पन्न करके एक समृद्ध विरासत भारत के भविष्य को छोड़कर राष्ट्रधर्म की प्रतिज्ञा पूरी करके चले गए।

ठाकुर जी द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्य अधूरे नहीं रह सकते। यदि हम यह सोच भी लें चलो छुट्टी हुई, अब हमें कोई पूछने वाला नहीं है, ऐसा होना असंभव है। ठाकुर जी हम सबसे वे काम पूरे करवायेंगे। एक बार आसाम में एक कार्यकर्त्ता को ठाकुर जी ने कहा कि तुम यह काम छोड़कर कहीं जा नहीं सकते। यदि तुम मर भी गए तो भी तुम्हारा वह भूत तुम्हारी छाती पर बैठकर और गला दबाकर सारे काम करवा लेगा। हम ठाकुर जी के सपनों को मिलकर साकार करेंगे। ये स्वप्न ठाकुर जी के व्यक्तिगत नहीं है। यह राष्ट्र के स्वप्न हैं। यह भारत के स्वप्न हैं। यह हमारी संस्कृति, धर्म के स्वप्न है। जिन्हें हमें पूरा करना है।

मा. सुरेश सोनी जी, सहसरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

सन् २०१० में ठाकुर रामसिंह जी ने अपने जीवन के अन्तिम पड़ाव पर थे। वे बहुत तेज गति से कार्य कर रहे थे। जैसे कि उन्हें एहसास हो कि अब जीवन बहुत कम है। शोध संस्थान नेरी के इतिहास और संस्कृति तक के विषयों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करना होगा। समाज को जोड़ने के लिए अन्य मुद्दे भी चाहिए। अतः एक संस्था ''त्रिगर्त अभ्युदय परिषद्'' का गठन किया गया। उसका पंजीकरण हमीरपुर में करवाया गया। उसके बैनर तले १८ अप्रैल २०१० को हमीरपुर के टाउन हाल में एक भव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री प्रेम कुमार धूमल उसमें पधारे थे। लगभग ५०० विद्वानों ने उसमें भाग लिया था।

६ सितम्बर २०१० सांय ५.३० बजे को समय भी आ गया जब ठाकुर जी के रूप में संस्थागत महामानव विचारक, इतिहासविद्, कुशल संगठन शिल्पी ने अपनी ९६ वर्ष की आनु उपरान्त इस लोक से विदा ले ली। संस्थान के कार्यकर्ताओं व देशभर में उनके प्रेमियों के लिए यह अत्यन्त दुःख की घड़ी थी। लेकिन ईश्वरीय सत्ता के आगे सभी नतमस्तक होते हैं। ठाकुर जी की अन्तेष्टि में देश व प्रदेश से हजारों लोग सम्मिलित हुए। निवर्तमान पूजनीय सरसंघचालक मा. कुप्प. सी. सुदर्शन जी विशेष

विमान से पहुंचे थे। अन्तयेष्टि उनके पैतृक गांव झंडवी जिला हमीरपुर में हुई। जिस-जिस को भी सूचना मिली वैसे-वैसे हर वर्ग के हजारों लोग व विद्वान उस देव पुरुष के अन्तिम दर्शन के लिए नेरी और दाह संस्कार के लिए झण्डवीं पहुंचे। १६ सितम्बर, २०१० को शोध संस्थान नेरी के प्रांगण में श्रद्धाञ्जलि समारोह का आयोजन हुआ। जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय सुरेश जी सोनी पधारे थे। हजारों कार्यकर्ता उसमें उपस्थित थे। एक निश्चित सूची के अनुसार विचार व्यक्त करने के लिए संगठन की पद्धति के अनुसार समय दिया गया। माननीय सुरेश सोनी जी ने सब बातों के अन्त में कहा – 'ठाकुर जी द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्य अधूरे नहीं रह सकते। यदि हम यह सोच भी लें चलो छुट्टी हुई, अब हमें कोई पूछने वाला नहीं है, ऐसा होना असंभव है। ठाकुर जी हम सबसे वे काम पूरे करवायेंगे। एक बार आसाम में एक कार्यकर्त्ता को ठाकुर जी ने कहा कि तुम यह काम छोड़कर कहीं जा नहीं सकते। यदि तुम मर भी गए तो भी तुम्हारा वह भूत तुम्हारी छाती पर बैठकर और गला दबाकर सारे काम करवा लेगा। हम ठाकुर जी के सपनों को मिलकर साकार करेंगे। ये स्वप्न ठाकुर जी के व्यक्तिगत नहीं है। यह राष्ट्र के स्वप्न हैं। यह भारत के स्वप्न हैं। यह हमारी संस्कृति, धर्म के स्वप्न है। जिन्हें हमें पूरा करना है।'

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध
संस्थान नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.)